मन की बात
से
जन की बात

लोक नीति शोध केन्द्र
PUBLIC POLICY RESEARCH CENTRE

मन की बात
से
जन की बात

लोक नीति शोध केन्द्र
PUBLIC POLICY RESEARCH CENTRE

लोक नीति शोध केंद्र

मार्गदर्शन

डॉ. सुमीत भसीन

प्रस्तुति

प्रशांत चौहान
सुंदरम सक्सेना
संकल्प मिश्रा

अप्रैल, 2023

प्रस्तावना

श्री जगत प्रकाश नड्डा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने 'मन की बात' प्रसारण के माध्यम से लोगों की भागीदारी बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया है, जो दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के अस्तित्व और सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। 'मन की बात' भारतीय समाज में एक बड़ा बदलाव लेकर आया है। प्रधानमंत्री ने यह भी सुनिश्चित किया है कि 'मन की बात' के मंच के माध्यम से 'सबका साथ, सबका विकास' के दृष्टिकोण को 'सबका विश्वास और सबका प्रयास' के माध्यम से साकार किया जाए।

पीपीआरसी, जो पिछले एक दशक से महत्वूपर्ण काम कर रहा है, ने सरकारी नीतियों और पहलों के इर्द-गिर्द घूमने वाली डेटा-संचालित विभिन्न रिपोर्ट तैयार की है। मुझे खुशी है कि इस संगठन ने एक और महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है; 'मन की बात से जन की बात' शीर्षक वाली इस शोध रिपोर्ट में उन बदलाव का उल्लेख किया गया है जो रेडियो प्रसारण के माध्यम से लाये गये है - देश की 'जन शक्ति' को सशक्त बनाना, भारतीय जनता की सामूहिक चेतना को जगाना और भारत को उसकी प्राचीन सभ्यतागत जड़ों से फिर से जोड़ना आदि।

100 करोड़ लोगों तक पहुंचने वाले 'मन की बात' कार्यक्रम ने राष्ट्रीय महत्व के प्रमुख मुद्दों, जैसे खादी को पुनर्जीवित करना, महिलाओं और बालिकाओं को सशक्त बनाना, योग को बढ़ावा देना, पर्यावरण संरक्षण, लोगों की भागीदारी के माध्यम से जन आंदोलनों को शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इस मंच के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री ने लाखों लोगों के जीवन को छुआ है और देश की मानसिकता में बदलाव को प्रेरित किया है, एक सकारात्मक दृष्टिकोण को पैदा किया है एवं हर दिल में आशा जगाई है। इसके अलावा श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश को अपनी पारंपरिक सभ्यता की जड़ों से जोड़ने के लिए 'मन की बात' मंच का उपयोग किया है। उन्होंने पूरी दुनिया में सबसे बहुसांस्कृतिक समाजों में से एक के विभिन्न उत्सव का जश्न मनाते हुए ऐतिहासिक महत्व और प्राचीन भारतीय दिग्गजों की शिक्षाओं का भी प्रचार किया है।

मुझे बेहद खुशी हो रही है कि मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की 'मन की बात' पहल के परिवर्तनकारी प्रभावों पर तैयार इस महत्वपूर्ण शोधकार्य की प्रस्तावना लिख रहा हूं। इस शोधकार्य के लेखकों ने 'मन की बात' के मर्म को छूने का प्रयास किया है और इस बात की एक स्पष्ट तस्वीर पेश करने का प्रयास किया है कि कैसे इस कार्यक्रम ने जमीनी स्तर से लेकर समाज के उच्चतम स्तर तक लोगों को लामबंद किया है। दृढ़ संकल्प और वीरता की कहानियों को साझा करने वाला यह शोध आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा और प्रेरणा की किरण के रूप में कार्य करेगा। साक्ष्य-आधारित शोध इस रिपोर्ट का आधार है। यह रेडियो की शक्ति का एक प्रमाण है, एक ऐसा माध्यम जो कभी भारत को स्वतंत्रता के संघर्ष में एकजुट करता था और अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में परिवर्तन और प्रगति के एक शक्तिशाली साधन के रूप में कार्य कर रहा है।

मैं 'मन की बात' के पहले 100 संस्करणों के सार को एक साथ रखने के इस नेक कार्य के लिए पीपीआरसी की टीम को बधाई देता हूं। जैसे-जैसे आप इस रिपोर्ट के पन्नों को देखेंगे, मुझे आशा है कि आप 'मन की बात' द्वारा पोषित परिवर्तन, प्रगति और एकता की कहानियों के भीतर निहित भावनात्मक अनुनाद को महसूस करेंगे। इस कार्य द्वारा प्रदान किए गए तथ्य हमारे राष्ट्र के बंधनों को और मजबूत करने के लिए काम करेंगे और हमें एक उज्ज्वल, अधिक समावेशी भविष्य की ओर ले जायेंगे।

विषयसूची

प्रस्तावना 07

भूमिका 08

1. मन की बात: देश की 'जन शक्ति' को सशक्त बनाना 11

- खादी
- स्वच्छता
- बालिका एवं महिला सशक्तिकरण
- योग
- पर्यावरण संरक्षण
- डिजिटाइजेशन

2. मन की बात: मानसिकता में बदलाव लाकर सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा 46

- मादक पदार्थों का दुरुपयोग
- परीक्षा संबंधी तनाव पर चर्चा
- खेल और शरीरिक स्वस्थता : भारत की खेल संस्कृति में बदलाव
- कोविड : भारत को विश्वव्यापी महामारी से लड़ने में सक्षम बनाना
- दिव्यांगों के प्रति भारतीय मानसिकता में बदलाव : समावेशिता की ओर एक कदम
- कौशल विकास और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में निवेश : आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम

3. भारतीय जीवन शैली को बढ़ावा 67

- भारत की महान विभूतियों और समाज के प्रति उनके योगदान को याद किया
- प्राचीन पारंपरिक ज्ञान के माध्यम से भारत को प्रेरित करना और भारत की आत्मा को पुनः जीवंत बनाना
- अतुल्य भारत : पर्यटन को लेकर भारत की रूपरेखा को पुनर्परिभाषित करता

समापन टिप्पणी 85

भूमिका

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से एक उदार संवाद की शुरुआत की है। यह पहल न केवल अद्वितीय है बल्कि सर्वोत्कृष्ट भी है। इस 'गैर-राजनीतिक' मंच के माध्यम से प्रधानमंत्री ने सहभागी शासन मॉडल से देश को 'विश्वगुरु' बनाने के प्रयासो के साथ राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को भी आरंभ करने का प्रयास किया है, जिसे अक्सर उनके द्वारा 'जन भागीदारी' का मॉडल कहा जाता है।

एक रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से आरंभ हुआ यह अभियान आज जनभागीदारी और संवाद के मंच के रूप में परिवर्तित हो गया है। सोशल मीडिया के युग में पीएम मोदी के मन की बात को लोकप्रिय बनाने के लिए इस पारंपरिक मीडिया माध्यम को डिजिटल मीडिया के साथ जोड़कर पुनर्जीवित किया गया है। पूरी दुनिया में इतने बड़े पैमाने पर ऐसा पहले कभी नहीं किया गया। मन की बात मंच ने हाल ही में भारत की सहभागी प्रवृत्ति, आध्यात्मिकता और सकारात्मकता का जश्न मनाते हुए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की और कार्यक्रम ने अपने 100वें एपिसोड को पूरा किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 'विश्वगुरु भारत' के रूप में भारत की भूमिका लगातार मजबूत होती जा रही है। मन की बात के 100वें प्रसारण में यूनेस्को की महानिदेशक सुश्री ऑड्रे अज़ोले का जिक्र भी किया गया, जिन्होंने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को न्यायसंगत बनाने के लिए भारत के प्रयासों और दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक हमारी संस्कृति को संरक्षित करने के प्रयासों को समझने में रुचि व्यक्त की। ऐसे ही बिल गेट्स ने स्वच्छता, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण जैसे सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर समुदाय के नेतृत्व वाली कार्रवाई को उत्प्रेरित करने के लिए मन की बात के 100वें एपिसोड पर श्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई दी। मैं इस तरह के अनूठे कार्यक्रम के लिए माननीय प्रधानमंत्री को धन्यवाद देता हूं और साथ ही, इस पहल को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए अपने साथी देशवासियों को भी धन्यवाद देता हूं। पीपीआरसी द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट निश्चित रूप से एक नई और मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी कि कैसे प्रधानमंत्री के मन की बात ने सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमते हुए देश में बड़े पैमाने पर कई जन आंदोलनों को जन्म दिया, देश की मानसिकता को बदला और इसे अपनी प्राचीन सभ्यता के साथ जोड़ दिया। इसके अलावा, यह रिपोर्ट जमीनी वास्तविकताओं पर एक विस्तृत अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, मन की बात के माध्यम से किए गए परिवर्तन प्रधानमंत्री मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण को बढ़ावा देते है क्योंकि इसके साथ जमीनी स्तर पर नागरिकों ने अपने दम पर कई महत्वपूर्ण पहलों को आरंभ किया है।

पीपीआरसी की टीम ने सरकारी स्रोतों के माध्यम से तथ्यात्मक डेटा तथा प्रत्येक संस्करण में पीएम द्वारा किए गए उल्लेखों को रेखांकित करते हुए पीएम के मन की बात कार्यक्रम के प्रभाव का विश्लेषण किया है। मन की बात ने भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में एक क्रांति ला दी है, जो वर्ष 2014 से पहले अस्तित्व में नहीं थी, यह प्रधानमंत्री मोदी की भावना और दृष्टि को उजागर करता है।

डॉ. सुमीत भसीन

निदेशक
लोक नीति शोध केंद्र

परिचय

भारत ने 1920 के दशक में अपना पहला रेडियो सेट आयात किया, जिसको मनोरंजन के उद्देश्य से प्रयोग किया जाना था, लेकिन यह जल्द ही कड़े ब्रिटिश शासन और उत्पीड़न के विरुद्ध लोगों की एकता व आवाज का माध्यम बन गया। भारतीयों के इस विद्रोह से औपनिवेशिक शासन भयभीत हो गया था। खतरे को भांपते हुए जल्द ही अंग्रेजों द्वारा रेडियो पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसका जवाब सुभाष चंद्र बोस ने 'आजाद हिंद रेडियो' के माध्यम से दिया, जो उपनिवेशवादियों के खिलाफ खड़े होने के लिए भारतीयों को जगाने में सहायक साबित हुआ। स्वतंत्रता के बाद के भारत में रेडियो की यह भूमिका कम होने लगी और इसका उपयोग अंततः टेलीविजन द्वारा प्रतिस्थापित किया जाने लगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'मन की बात' के माध्यम से एक बार फिर रेडियो को पुनर्जीवित किया। यह प्रयोग सार्थक हुआ और लोगों की भागीदारी के माध्यम से इससे सुशासन एवं सहभागी शासन को बढ़ावा मिला, जिसे अक्सर उनके द्वारा 'जन-भागीदारी' कहा जाता है।

आजाद हिंद रेडियो पर सुभाष चंद्र बोस

इस राष्ट्रव्यापी प्रयोग की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के कुछ महीने बाद ही 'मन की बात' के जरिए की थी। मोदी जी ने राष्ट्र निर्माण के महान कार्य के लिए प्रधानमंत्री के कर्तव्यों से ऊपर उठकर काम किया। 30 अप्रैल, 2023 को प्रसारित मन की बात के 100वें एपिसोड में उन्होंने बताया कि कैसे देश के लोगों से जुड़े रहने के उनके मिशन में यह कार्यक्रम उनके लिए महत्वपूर्ण हो गया। उन्होंने कहा, 'पचास साल पहले मैं यह सोचकर घर से बाहर नहीं निकला था कि एक दिन अपने ही देश के लोगों के साथ संपर्क में रहना मुश्किल हो जाए। जो देशवासी मेरे सब कुछ हैं... मैं उनसे अलग नहीं रह सकता।' 'मन की बात' ने मुझे इस चुनौती का समाधान दिया, आम आदमी से जुड़ने का जरिया दिया... और करोड़ों नागरिक मेरी दुनिया का अविभाज्य हिस्सा बन गये।" प्रधानमंत्री की यह पहल, जिसे देश के नागरिकों के साथ के लिए शुरू किया गया था, ने अंततः परिवर्तन को प्रेरित किया, प्रगति को गति दी और 'विश्वगुरु भारत' के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए नागरिकों को एक साथ लेकर आया, जो 'मन की बात' को संभावित विश्व इतिहास में नेतृत्व के सबसे उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक बनाता है।

'मन की बात' के परिणामस्वरूप पारंपरिक 'टॉप-डाउन' शासन दृष्टिकोण 'डाउन-टॉप', भागीदारी और लोकतांत्रिक मॉडल में बदल गया, जिसमें 'जन शक्ति' की क्षमता को उजागर किया गया है। श्री नरेंद्र मोदी जी के 'मन की बात' से प्रेरणा लेते हुए भारत के दूर-दराज से लोगों ने कदम बढ़ाया है और महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने, पर्यावरण संरक्षण आदि जैसे राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर जन-आंदोलनों का निर्माण किया है। जिस पैमाने पर यह परिवर्तन हुआ है, वह न केवल भारत के इतिहास में, बल्कि पूरे विश्व में अद्वितीय है।

भारत 1.3 बिलियन से अधिक जनसंख्या वाला देश है और यही कारण है कि राष्ट्रीय स्तर पर किसी प्रकार के संवाद को स्थापित करना, एक बड़ी चुनौती बन जाता है। हालांकि, फिर भी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' 100 करोड़ से अधिक लोगों तक पुहंचा और यह एक शानदार सफलता बन गया।

भारतीय प्रबंधन संस्थान-रोहतक और प्रसार भारती ने हाल ही में 'मन की बात' को लेकर एक व्यापक अध्ययन कर, कार्यक्रम की लोकप्रियता और जनसंख्या पर इसके प्रभाव को लेकर जानकारी एकत्रित की।

- रिपोर्ट से पता चलता है कि 23 करोड़ व्यक्ति नियमित रूप से कार्यक्रम को देखते हैं जबकि 41 करोड़ सामयिक रूप से इस कार्यक्रम से जुड़ना पसंद करते हैं।
- रिपोर्ट कार्यक्रम की लोकप्रियता के पीछे के कारणों के रूप में दर्शकों के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करने की प्रधानमंत्री की क्षमता, उनके निर्णायक नेतृत्व और उनके सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण को प्रमुख कारण मानती है।

- दिलचस्प बात यह है कि यह अध्ययन आम जनता पर 'मन की बात' के प्रभाव को भी रेखांकित करता है, जिसमें 73% श्रोता देश की प्रगति के बारे में आशावादी महसूस करते हैं। इसके अतिरिक्त, 58% ने अपने जीवन स्तर में सुधार की बात की, और 59% ने सरकार के प्रति अपने विश्वास में बढ़ोत्तरी की बात कही है।
- सर्वेक्षण के नतीजे बताते हैं कि 'मन की बात' कार्यक्रम के बाद सरकार को लेकर जनता की धारणा और अधिक सकारात्मक हुई है। कार्यक्रम की लोकप्रियता दर्शकों के विभिन्न जनसांख्यिकी में स्पष्ट है, जिसमें सभी क्षेत्रों के लोग नियमित रूप से इसे देखना या सुनना पसंद करते है ।

'मन की बात' कार्यक्रम का प्रसारण 22 भारतीय भाषाओं और 29 बोलियों के साथ अंग्रेजी और अन्य 11 विदेशी भाषाओं जैसे फ्रेंच, चीनी, इंडोनेशियाई, तिब्बती, बर्मी, बलूची, अरबी, पश्तो, फारसी, दारी और स्वाहिली आदि में किया जा रहा है।

तमिलनाडु को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में एक विशेष उल्लेख मिला है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा उनके दिल में राज्य का एक विशेष स्थान है और यह इस बात से भी स्पष्ट होता है कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने कार्यक्रम के माध्यम से अक्सर तमिल साहित्य और भाषा की गहराई पर प्रकाश डाला है। प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु की समृद्धि सांस्कृतिक विरासत के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए 'मन की बात' कार्यक्रम का उपयोग एक मंच के रूप में किया है। रेडियो कार्यक्रम में राज्य का लगातार उल्लेख भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य में इसके महत्व को दर्शाता है।

यह भी उल्लेखनीय है कि 'मन की बात' कार्यक्रम एक गैर-राजनीतिक मंच है। राष्ट्रीय सुरक्षा से लेकर स्वच्छता तक राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर चर्चा के लिए एक मंच के रूप में रेडियो का उपयोग करने से दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र समृद्ध हुआ है। इस कार्यक्रम ने सार्वजनिक भागीदारी में वृद्धि की है और नागरिकों को विशेष रूप से जमीनी स्तर पर एक अद्वितीय पैमाने और गति से भारत की प्रगति के लिए लामबंद किया है। प्रधानमंत्री मोदी जी के मुताबिक, 'मन की बात' जन-भागीदारी की अभिव्यक्ति का एक बेहतरीन माध्यम बन गया है। प्रधानमंत्री मोदी जी के 'मन की बात' की मदद से लोगों की भागीदारी कई गुना बढ़ गई है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन हुए हैं, जैसे कि बालिकाओं की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देना, राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना, स्वदेशी उत्पादों जैसे खादी और अन्य को बढ़ावा देना। देश के विभिन्न हिस्सों में जल संरक्षण और स्वच्छता के लिए लोगों की भागीदारी को चैनलाइज किया गया है। सरकार के डिजिटलीकरण उपायों की सफलता यूपीआई प्रणाली में बड़े पैमाने पर लोगों की भागीदारी के माध्यम से हुई है। यहां तक कि खेलों को भी बढ़ावा मिला है। 'मन की बात' ने विशेष रूप से शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही को भी बढ़ावा दिया है।

प्रधानमंत्री जी ने MyGov वेबसाइट या NaMo ऐप पर लिखकर या 1800-11-7800 डायल करके वॉयस

मन की बात 8 साल में 100 करोड़ से अधिक लोगों तक पहुंची है

रोचक तथ्य

1) लगभग 23 करोड़ से अधिक लोग नियमित रूप से इस प्रसारण से जुड़ते हैं
और लगभग 41 करोड़ लोग सामयिक रूप से जुड़ते हैं

2) इसका प्रसारण 33 भाषाओं में अनुवादित किया जाता है
22 भारतीय भाषाओं और 29 बोलियों में अनुवादित होने के अलावा फ्रेंच, चीनी, अरबी आदि जैसी 11 विदेशी भाषाओं में भी प्रसारित किया जाता है

3) भारत की 96% आबादी मन की बात से परिचित है
अनौपचारिक क्षेत्र (86%), छात्रों (23%) और शिक्षाविदों (9%) सहित कुल 86 व्यवसायों को इस स्टडी में कवर किया गया है

4) 44.7% लोग टीवी पर मन की बात देखते हैं
और 37.6% लोग इसे मोबाइल पर देखते/सुनते हैं

5) सकारात्मक प्रभाव
मन की बात ने आशावाद और प्रसन्नता का आह्वान करते हुए नागरिकता व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है

6) दर्शकों के बीच सबसे लोकप्रिय विषय
5,00,000 ऑनलाइन संदेशों का विश्लेषण करने पर भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियां, आम नागरिकों की कहानियां, सशस्त्र बलों की वीरता और युवाओं और पर्यावरण संबंधी मुद्दों जैसे विषय सबसे लोकप्रिय पाए गए

7) मन की बात का प्रभाव
73% दर्शकों ने देश की प्रगति के प्रति आशावादी सोच दिखाई एवं 59% दर्शकों ने सरकार पर भरोसा बढ़ने का अंदेशा दिया

8) मन की बात का प्रभाव
60% दर्शकों ने राष्ट्र निर्माण के प्रति काम करने की इच्छा व्यक्त की, 55% ने राष्ट्र के एक जिम्मेदार नागरिक बनने की पुष्टि की

मैसेज भेजकर लोगों को अपनी आकांक्षाओं, उम्मीदों, खुशी और यहां तक कि दुखों को साझा करने के लिए मंच दिया है। इन संदेशों पर ऑल इंडिया रेडियो पर चर्चा की जाती है और उनका जवाब दिया जाता है। साथ ही आकाशवाणी समाचार वेबसाइट या न्यूज़ऑनएयर मोबाइल ऐप जैसे कई अन्य प्लेटफार्मों के साथ इनको जोड़ा गया है। हालांकि, इस रिपोर्ट का प्राथमिक उद्देश्य आधुनिक सोशल मीडिया के समय में 'मन की बात' के माध्यम से रेडियो के पुनर्जीवित होने पर है। प्रधानमंत्री ने पत्रों के माध्यम से संचार को वापस लाकर अतीत को वर्तमान से जोड़ा है, जो उन्हें अपने पहले 100 'मन की बात' एपिसोड की यात्रा के दौरान प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं।

'मन की बात' की विशेषताओं के विश्लेषण से तीन सामान्य विषय सामने आते हैं - (i) राष्ट्र की 'जन शक्ति' को उजागर करना, (ii) देश की मानसिकता में सुधार करना और (iii) भारत को उसकी सभ्यतागत जड़ों से जोड़ना। इन विषयों को इस रिपोर्ट में विस्तार से शामिल किया गया है। पीपीआरसी की टीम ने 'मन की बात' के सभी प्रसारणों को ध्यान से सुना है और ट्रांसक्रिप्शन को जांचा है।

भाग-I

मन की बातः 'जन शक्ति' को सशक्त बनाना

स्रोत: भारत एनसीसी MyGov वेबसाइट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का मुख्य जोर 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसी पहलों के माध्यम से खादी जैसे 'स्वदेशी' उत्पादों के निर्माण को बढ़ावा देने पर रहा है, जिसका उद्देश्य देश को 'आत्मनिर्भर' बनाना है। इसके अलावा, उन्होंने भारत को अभूतपूर्व विकास की ओर ले जाने के लिए देश के नागरिकों में जिम्मेदारी की भावना पैदा करने का भी सफल प्रयास किया है, चाहे वह बालिकाओं और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए पहल के माध्यम से हो या पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से स्थायी जीवन शैली को बढ़ावा देकर, जिसका 'मिशन' LiFE' एक अच्छा उदाहरण है। मन की बात प्रसारण के माध्यम से प्रधानमंत्री ने गांधीवादी दर्शन की तर्ज पर 'स्वदेशी' आंदोलन पर काफी हद तक जोर दिया और इसे पुनर्जीवित किया। इसमें महात्मा गांधी के सपने को साकार करने के लिए लोगों की अधिकतम भागीदारी या 'जन शक्ति' के साथ पूरे देश में स्वच्छता आंदोलन चलाने पर ध्यान केंद्रित करना भी शामिल है। प्रधानमंत्री ने रेडियो मंच का उपयोग सरकार की विभिन्न पहलों को जन-आंदोलनों में बदलने एवं आम जनता के मानस और दृष्टिकोण को बदलने के लिए किया है।

30 अप्रैल, 2023 को देश भर में धूमधाम से मनाए गए 100वें 'मन की बात' प्रसारण में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'मन की बात' से देश के कोने-कोने और हर आयुवर्ग के लोग जुड़े हैं। चाहे बेटी बचाओ-बेटी पढाओ की बात हो, चाहे स्वच्छ भारत आंदोलन की बात हो, खादी या प्रकृति के प्रति प्रेम की बात हो, आजादी का अमृत महोत्सव हो या अमृत सरोवर, मन की बात जिस भी विषय से जुड़ी हो, वह एक जन आंदोलन बन गया और यह आप लोगों के कारण संभव हुआ है।"

रिपोर्ट के इस खंड में खादी और अन्य स्वदेशी उत्पादों, स्वच्छता, योग, महिला सशक्तिकरण, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', जल और ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण आदि और इसी तरह की पहल जैसे मुद्दों के बारे में मन की बात पर अपने रेडियो प्रसारण के माध्यम से श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा शुरू किए गए इन जन-आंदोलनों का विश्लेषण करना है। इस अभ्यास के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी जी ने गांधीवादी दर्शन की तर्ज पर भारत को 'स्वदेशी से स्वराज तक' ले जाने का एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक प्रयास किया है।

खादी

स्रोत: हिंदुस्तान टाइम्स और वीवर्स स्टूडियो वेबसाइट

इसका एक पहलू भारत की खादी की समृद्ध विरासत को पुनर्जीवित करने का प्रयास है, जो स्वतंत्रता पूर्व भारत में मौजूद थी और जिसका उपयोग भारत को स्वराज और स्वदेशी की ओर ले जाने के लिए किया गया था। वास्तव में खादी स्वदेशी आंदोलन का केंद्रीय बिंदु था, जो 1905 में विदेशी वस्तुओं पर अंकुश लगाने और घरेलू उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए शुरू हुआ था।

मन की बात के कई एपिसोड में प्रधानमंत्री ने लोगों से अधिक से अधिक खादी उत्पाद खरीदने की अपील की है। समकालीन भारत में खादी के प्रचार ने उन आर्थिक रूप से कमजोर लोगों में आत्मनिर्भरता पैदा करने के व्यापक उद्देश्य को दर्शाया है, जो खादी के प्राथमिक निर्माता हैं, और एक मजबूत ग्रामीण समुदाय का निर्माण करते हैं। 3 अक्टूबर, 2014 को प्रसारित कार्यक्रम के पहले संस्करण में मोदी जी ने जनता से कम से कम एक खादी उत्पाद खरीदने की अपील की, यह तर्क देते हुए कि यह हर अमीर व्यक्ति को गरीबों से जोड़ेगा। जैसा कि खादी के उत्पादन में मुख्य रूप से गरीब शामिल हैं, मोदी जी ने लोगों से जोर देकर कहा कि खादी का एक भी उत्पाद खरीदने से गरीबों का आर्थिक सशक्तिकरण होगा, जिसकी सबसे पहले महात्मा गांधी ने वकालत की थी। मन की बात के माध्यम से इस कॉल टू एक्शन ने काफी काम किया, जैसा कि प्रधानमंत्री ने 2 नवंबर, 2014 को दूसरे एपिसोड में उल्लेख किया कि कैसे लोगों ने उनके अनुरोध को सुना और एक सप्ताह के भीतर खादी की बिक्री में 125 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

अपने पहले रेडियो संबोधन में प्रधानमंत्री की अपील के बाद खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) द्वारा चलाए जा रहे आउटलेट की बिक्री में उछाल देखा गया। 2014 में मुंबई में केवीआईसी मुख्यालय स्थित 138 स्टालों ने प्रतिदिन 7-8 लाख रुपये की बिक्री की, जो 2013 में 2-3 लाख थी। नई दिल्ली में कनॉट प्लेस के खादी भंडार में मन की बात पर प्रधानमंत्री की अपील के 10 दिनों के भीतर प्रतिदिन 50 लाख रुपये की रिकॉर्ड बिक्री हुई। जबकि अगले ही दिन, यानी 4 अक्टूबर, 2014 को 66.81 लाख की बिक्री हुई। वहीं देश में लगभग 7,000 आउटलेट्स की बिक्री में भी वृद्धि देखी गई। कनॉट प्लेस में खादी ग्रामोद्योग भवन अपने बुनकरों को उत्पाद की लागत का 40 प्रतिशत देता है। देशभर में खादी की बिक्री में इस तरह की वृद्धि बुनकरों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही है। इससे पता चलता है कि कैसे प्रधानमंत्री ने न केवल मन की बात के माध्यम से खादी जन-आंदोलन की सफलतापूर्वक शुरुआत की, बल्कि बुनकरों की बेहतर आर्थिक स्थिति को सीधे तौर पर प्रभावित किया।

प्रधानमंत्री आगे भी गांधी जयंती और दिवाली जैसे अवसरों के आसपास खादी को बढ़ावा देने और खरीदने के लिए नागरिकों से अपील करते रहे। 20 सितंबर, 2015 को प्रसारित मन की बात के 12वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने कहा,

"खादी के साथ-साथ हथकरघा को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। हमारे बुनकरों ने बहुत मेहनत की है। अगर हम 1.5 अरब भारतीय एक हथकरघा उत्पाद या खादी 5, 10 या 50 रुपये में भी खरीदते हैं, तो अंततः वह पैसा गरीबों के पास पहुंच जाएगा... खादी बुनने वाली गरीब विधवा तक पहुंचेगा और इसलिए इस दिवाली हम सभी को अपने घर और शरीर पर खादी के लिए कुछ जगह जरूर छोड़नी चाहिए।"

स्रोत: पीआईबी

उस वर्ष गांधी जयंती के बाद के दिनों में नई दिल्ली के कनॉट प्लेस में खादी ग्रामोद्योग भवन में खादी की बिक्री में 88 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। युवाओं के बीच खादी के विचार का स्वागत किया गया।

24 सितंबर, 2017 को प्रसारित मन की बात के 36वें संस्करण में मोदी जी ने बताया कि कैसे उन्होंने गुजरात में अपने सीएम कार्यकाल के दौरान गुलदस्ते के बजाय खादी के रूमाल जैसे खादी उत्पादों को उपहार में देने का चलन शुरू किया। यहां प्रधानमंत्री ने जनता को समझाया कि किसी व्यक्ति के जीवन में एक गुलदस्ते का उतना मूल्य नहीं होता, जितना कि एक किताब या एक खादी वस्तु का होता है। उसी संस्करण में प्रधानमंत्री ने लोगों को खादी के महत्व का एहसास कराने और उन्हें कपड़े खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए यूनाइटेड किंगडम की पूर्व महारानी के साथ अपनी बातचीत की एक कहानी साझा की। सितंबर, 2017 में मन की बात के जरिए देश को संबोधित करते हुए मोदी जी ने कहा,

---

"मेरी पिछली यूके यात्रा के दौरान लंदन में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ ने मुझे अपने साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था। वातावरण मातृ स्नेह से ओतप्रोत था, और मुझे बड़े प्यार से भोजन परोसा गया। बाद में जब उन्होंने मुझे धागे से काता हुआ एक छोटा सा खादी का रूमाल दिखाया, तो उनकी आंखों में चमक आ गई। बड़े आदर और भाव भरे स्वर में उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने यह रूमाल उन्हें शादी के तोहफे के रूप में भेजा था। इतने साल बीत चुके हैं और अभी तक, महारानी एलिजाबेथ ने महात्मा गांधी द्वारा उपहार में दिए गए रूमाल को संजो कर रखा है। और जब मैं वहां गया, तो वह मुझे यह दिखाकर खुश थीं... महात्मा गांधी का एक छोटा सा उपहार, उनके जीवन का हिस्सा बनने के साथ-साथ इतिहास का भी हिस्सा बन गया। मैं जानता हूं कि ये आदतें रातों-रात नहीं बदलतीं... इसके बावजूद बात करते रहना चाहिए, प्रयास करते रहना चाहिए... और फिर धीरे-धीरे बदलाव आ जाएगा।"

इसी प्रसारण में मोदी जी ने बताया कि कैसे खादी एक कपड़ा नहीं है, बल्कि राष्ट्र के लिए एक विचार और एक सिद्धांत है। उन्होंने स्वीकार किया कि रेडियो प्रसारण पर बस एक साधारण उल्लेख से कैसे खादी के प्रति रुचि बढ़ी है, खासकर युवा पीढ़ी में उत्साह देखा गया है। उन्होंने एक बार फिर लोगों से 'खादी आंदोलन को आगे बढ़ाने' का आग्रह किया। इसके साथ ही, मोदी जी ने लोगों के बीच इस संवाद को भी बढ़ावा दिया कि कैसे नई तकनीक की शुरुआत करके खादी क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है, और कैसे राष्ट्र अपनी पारंपरिक विरासत को फिर से जीवंत कर सकता है, जो वर्षों से निष्क्रिय पड़ी हुई थी।

यह पहल जितनी नेक थी, उतनी ही इसके वांछित परिणाम भी मिले। खादी आंदोलन शुरू करने के लिए मोदी जी के लगातार दबाव के परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के वाराणसी में सेवापुरी खादी आश्रम को 26 साल तक निष्क्रिय रहने के बाद एक नया जीवन मिला। वहीं देश के दूसरे हिस्से में कश्मीर में पंपोर खादी ग्रामोद्योग ने अपने प्रशिक्षण

क्षेत्र को पुनर्जीवित किया। खादी और ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष वी.के. सक्सेना ने इस स्वागत योग्य घटनाक्रम की जानकारी दी और कहा,

"हमने नरेंद्र मोदी जी सरकार के शांति के संदेश को फैलाने के लिए सौर चरखा और करघे स्थापित करके पंपोर में बहु-विषयक प्रशिक्षण केंद्र को पुनर्जीवित किया है, जिसे 1990 के दशक में चरमपंथ के दौरान नष्ट कर दिया गया था।"

29 अक्टूबर, 2017 को प्रसारित मन की बात के 37वें संस्करण में मोदी जी ने बताया कि कैसे खादी आंदोलन लोगों की भागीदारी में वृद्धि के साथ मजबूत हो रहा था। खादी आंदोलन को सफल बनाने वाले भारत के नागरिकों की पीठ थपथपाते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा,

"मैं कल्पना कर सकता हूं कि कितने बुनकर परिवार, गरीब परिवार और हथकरघा पर काम करने वाले परिवार इससे लाभान्वित हुए होंगे खादी और हथकरघा ने गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन को बदल दिया है और ये उन्हें सशक्त बनाने के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभर रहे हैं। यह ग्रामोदय के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।"

मन की बात को सार्वजनिक चर्चा और संवाद के मंच के रूप में उपयोग करते हुए प्रधानमंत्री ने खादी के मुद्दे पर लोगों को संवेदनशील बनाने और इसके समृद्ध इतिहास के बारे में जागरूकता फैलाने और भारतीय संस्कृति से जुड़ने के लिए रचनात्मक तरीके अपनाए हैं। उदाहरण के लिए, 29 अक्टूबर, 2017 को प्रसारित मन की बात के 37वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने 1921 की घटना को साझा किया, जहां पूरे देश के 5,000 से अधिक प्रतिनिधियों को अहमदाबाद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सत्र में भाग लेना था, लेकिन वह जूते चोरी होने या बदले जाने से चिंतित थे। स्वागत समिति के निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में सरदार पटेल को प्रतिनिधियों की देखभाल करने की जिम्मेदारी दी गई थी। उनकी चिंताओं को समाप्त करने के लिए सरदार पटेल ने स्थानीय किसानों से संपर्क किया और सैकड़ों छोटे खादी बैग सिलवाकर प्रतिनिधियों को दिये गए। इससे मसला तो हल हुआ ही, यह जानकर प्रतिनिधियों को भी खुशी हुई कि हजारों गज खादी बेची गई, जिससे बुनकरों और किसानों को अधिक आर्थिक स्वतंत्रता मिली। भारत के स्वतंत्रता पूर्व युग से इस कहानी को साझा करते हुए मोदी जी ने 21वीं सदी के भारत के लोगों को खादी के महत्व, इसकी विभिन्न उपयोगिताओं और देश के गरीबों और हाशिए पर रहने वालों को सशक्त बनाने की क्षमता का एहसास कराने का प्रयास किया।

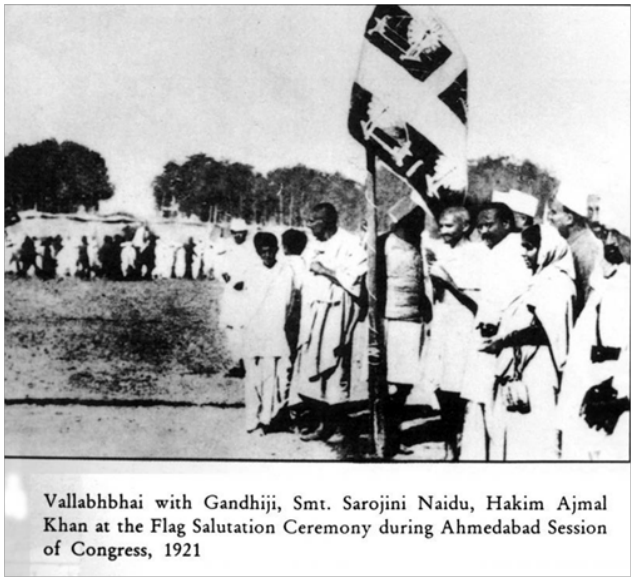

Vallabhbhai with Gandhiji, Smt. Sarojini Naidu, Hakim Ajmal Khan at the Flag Salutation Ceremony during Ahmedabad Session of Congress, 1921

स्रोत: sardarpatel.nvli.in

27 अक्टूबर, 2019 को मन की बात के 58वें संस्करण में मोदी जी ने दिवाली की शुभकामनाएं देने के साथ-साथ लोगों से खादी और अन्य स्थानीय हथकरघा उत्पाद खरीदते रहने की अपील की, क्योंकि यह गांधी जी के 'स्वदेशी' और 'स्वराज' के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उत्तर प्रदेश के फूलपुर का उदाहरण देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि कैसे वहां की गरीब महिलाएं कादीपुर में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में शामिल हुईं और खुद को चप्पल बनाने के लिए कुशल बनाया। यह महिलाएं न केवल आत्मनिर्भर बनीं, बल्कि अपने परिवारों की आर्थिक स्तंभ भी बन गईं। इन महिलाओं से चप्पल खरीदने वाली स्थानीय पुलिस की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया। प्रधानमंत्री ने ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत वहां चप्पल बनाने के प्लांट की स्थापना और कैसे इसने महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया है, उनके जीवन स्तर को बढ़ाया है, इसकी भी जानकारी

दी। महात्मा गांधी की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा,

"दोस्तों, महात्मा गांधी ने स्वदेशी की इस भावना को एक ऐसे दीपक के रूप में देखा, जो लाखों लोगों के जीवन को रोशन करता है और गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में समृद्धि लाता है। सौ साल पहले गांधी जी ने एक बड़ा जन-आंदोलन शुरू किया था। इसका एक लक्ष्य भारतीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना था। गांधी जी ने आत्मनिर्भर बनने का यही रास्ता दिखाया था। 2022 में हम अपनी आजादी के 75 साल पूरे कर लेंगे... मेरे प्यारे देशवासियों, क्या हम संकल्प ले सकते हैं कि आजादी के 75वें साल 2022 तक, कम से कम इन दो-तीन साल में हम लोकल प्रोडक्ट खरीदने पर जोर दें? क्या हम देशवासियों के हाथों से बनी, देशवासियों के पसीने की महक वाली भारत में बनी ऐसी चीजें खरीदने का आग्रह कर सकते हैं? और यह काम सरकार को नहीं करना चाहिए, युवाओं को अलग-अलग जगहों से आगे आना चाहिए, छोटे-छोटे संगठन बनाने चाहिए और लोगों को प्रेरित करना चाहिए"

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास पर जोर देते हुए मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर के 'हिमायत' कार्यक्रम के बारे में बात की, जो युवाओं को कौशल प्रदान करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर केंद्रित है। इन मामलों को उजागर करके और इसी तरह के उपाख्यानों को साझा करके, प्रधानमंत्री ने देश में लोगों और जन-संचालित विकास के बीच जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया। प्रधानमंत्री ने दिल्ली में हुनर हाट जिक्र किया और बताया कि कैसे इसने एक दिव्यांग महिला को अपनी पेंटिंग बेचकर आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है। 31 मई, 2020 को मन की बात के 65वें संस्करण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने बताया कि कैसे केंद्र सरकार द्वारा लिए गए फैसलों ने गांवों में रोजगार, स्वरोजगार और लघु उद्योगों से संबंधित विशाल संभावनाओं को एक आत्मनिर्भर भारत के समाधान के रूप में पेश किया है। उन्होंने स्वीकार किया कि देश 'आत्मनिर्भरता' की प्राप्ति की दिशा में एक जन-आंदोलन देख रहा है। प्रधानमंत्री ने लोगों को यह संदेश दिया कि कैसे उन्होंने विशेष रूप से स्थानीय उत्पादों को खरीदना शुरू कर दिया है और 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा दे रहे हैं।

मन की बात के इसी प्रसारण में मोदी जी ने कहा, "मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए हर कोई अपना-अपना संकल्प व्यक्त कर रहा है। जो अपने क्षेत्र में बने हुए हैं, उन्होंने पूरी सूची बनाई है। ये लोग अब केवल इन स्थानीय उत्पादों को खरीद रहे हैं, और वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा भी दे रहे हैं।"

26 मार्च, 2023 को मन की बात के अपने 99वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री ने जम्मू और कश्मीर राज्य में की गई कृषि पहलों से संबंधित सफलता की दो कहानियों पर प्रकाश डाला, जो "वोकल फॉर लोकल" की अवधारणा के अनुरूप है। सबसे पहले, उन्होंने डल झील क्षेत्र के किसानों के एक समूह के बारे में बात की, जिन्होंने एक किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) का गठन किया और कमल ककड़ी का निर्यात शुरू किया, कमल ककड़ी को स्थानीय रूप से 'नादरू' के रूप में जाना जाता है, किसानों की इस पहल के परिणामस्वरूप उनकी आय में वृद्धि हुई है और इस क्षेत्र को नयी पहचान मिली है। दूसरे, उन्होंने जम्मू और कश्मीर के डोडा जिले के एक कस्बे भद्रवाह के किसानों का उल्लेख किया, जिन्होंने पारंपरिक मक्का की खेती से फूलों की खेती की ओर रुख किया, विशेष रूप से लैवेंडर की खेती की, जिससे उनकी आय में काफी वृद्धि हुई है।

मन की बात के अपने 99वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर राज्य में की गई कृषि पहल से संबंधित दो सफलता की कहानियों पर प्रकाश डाला, जो 'वोकल फॉर लोकल' की अवधारणा के अनुरूप है। सबसे पहले, उन्होंने डल झील क्षेत्र में किसानों के एक समूह के बारे में बात की, जिन्होंने एक किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) का गठन किया और कमल के तने का निर्यात कर रहे हैं, जिसे स्थानीय रूप से 'नादरू' के रूप में जाना जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी आय में वृद्धि हुई है और क्षेत्र में पहचान बनी है। दूसरे, उन्होंने जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले के एक कस्बे भद्रवाह के किसानों का उल्लेख किया, जिन्होंने पारंपरिक मक्का की खेती से फूलों की खेती की ओर रुख किया। वह विशेष रूप से लैवेंडर की खेती कर रहे है, जिससे उनकी आय में काफी वृद्धि हुई है।

यह दर्शाते करते हुए कि कैसे मन की बात प्रधानमंत्री के लिए लोगों की अंतरात्मा को जगाने और देश के समग्र विकास के उद्देश्य से जन-आंदोलनों की शुरुआत करने का एक प्रभावी मंच बन गया है, मोदी जी ने 28 जून, 2020 को प्रसारित कार्यक्रम के 66वें संस्करण में उल्लेख किया कि उन्हें एक फोन असम से एक महिला और

तमिलनाडु से एक पुरुष ने किया, जिन्होंने 'वोकल फॉर लोकल' बनकर और रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करके भारत को एक आत्मनिर्भर देश में बदलने का इरादा व्यक्त किया।

यह स्पष्ट है कि मोदी जी ने अनेक बार मन की बात में खादी के मुद्दे पर बात की और इसे एक जन-आंदोलन में बदल दिया। 25 जुलाई, 2021 को 79वें संस्करण में मोदी जी ने जनता को बधाई दी और उन्हें भारत में खादी की बिक्री और खादी उद्योग के विकास में कई गुना वृद्धि का श्रेय दिया, इसे एक ऐसी उपलब्धि बताया, जो पहले अकल्पनीय थी। उन्होंने कहा,

"आपका प्रयास है कि आज देश में खादी की बिक्री कई गुना बढ़ गई है। क्या कोई कल्पना कर सकता था कि एक खादी स्टोर एक दिन में एक करोड़ रुपये से अधिक की बिक्री कर सकता है! लेकिन, आपने यह भी किया है। जब भी आप कहीं भी खादी की कोई चीज खरीदते हैं, तो उसका फायदा हमारे गरीब बुनकर भाई-बहनों को ही होता है। इसलिए खादी खरीदना एक तरह से जनसेवा भी है, देश सेवा भी है। मेरा आप सभी प्यारे भाइयों और बहनों से अनुरोध है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बने हथकरघा उत्पादों को जरूर खरीदें और इसे #MyHandloomMyPride के साथ साझा करें।"

25 अक्टूबर, 2020 को मन की बात के 70वें संस्करण में मोदी जी ने बताया कि कैसे खादी भी कई कारणों से वैश्विक समर्थन प्राप्त कर रही है। यह पर्यावरण के अनुकूल है, शरीर के अनुकूल है, हर मौसम में पहनने वाला कपड़ा है और यह एक फैशन स्टेटमेंट बनता जा रहा है। इतना ही नहीं, मैक्सिको समेत दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भी खादी बनने लगी है। मोदी जी ने समझाया कि यह कैसे हुआ और कहा,

"खादी का निर्माण भी दुनिया में कई जगहों पर हो रहा है। ओक्साका, मेक्सिको में एक जगह है। इस इलाके में कई गांव ऐसे हैं, जहां के स्थानीय ग्रामीण खादी बुनने का काम करते हैं। आज यहां की खादी 'ओक्साका खादी' के नाम से प्रसिद्ध हो गई है। खादी ओक्साका कैसे पहुंची, यह भी कम दिलचस्प नहीं है। दरअसल, मेक्सिको के एक युवक मार्क ब्राउन ने एक बार महात्मा गांधी पर एक फिल्म देखी। ब्राउन इस फिल्म को देखने के बाद बापू से इतने प्रभावित हुए कि वे भारत में बापू के आश्रम आए और बापू के बारे में गहराई से जाना। तब ब्राउन को एहसास हुआ कि खादी सिर्फ एक कपड़ा नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक संपूर्ण तरीका है... यहीं से ब्राउन ने तय किया कि वह मैक्सिको जाएंगे और खादी का काम शुरू करेंगे। उन्होंने मेक्सिको के ओक्साका में ग्रामीणों को खादी के काम का प्रशिक्षण दिया। आज 'ओक्साका खादी' एक ब्रांड बन गया है। इस प्रोजेक्ट की वेबसाइट पर लिखा है- 'द सिंबल ऑफ धर्म इन मोशन'। उनका कहना है कि शुरुआत में लोगों को खादी को लेकर संदेह था, लेकिन आखिरकार दिलचस्पी बढ़ी और एक बाजार तैयार हुआ। वे कहते हैं, ये रामराज्य की बातें हैं, जब आप लोगों की जरूरतें पूरी करते हैं, तो लोग आपसे जुड़ने भी आते हैं।"

मेक्सिको में ओक्साका खादी। स्रोत: कल्चरल सर्वाइवल

मोदी जी ने एक बार फिर इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मन की बात के माध्यम से लोगों की भागीदारी 2017 में दिल्ली में 1 करोड़ रुपये से अधिक की खादी की बिक्री में परिणत हुई और यूपी में स्वयं सहायता समूहों ने खादी मास्क बनाने और आर्थिक रूप से सशक्त बनने की पहल की। खादी के लिए जन-आंदोलन को बनाए रखने की अपील करते हुए मोदी जी ने कहा,

"मित्रों, जब स्वतंत्रता आंदोलन और खादी की बात आती है, तो पूज्य बापू का स्मरण आना स्वाभाविक है। जिस प्रकार बापू के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' चलाया गया था, उसी प्रकार आज हर देशवासी को 'भारत से जुड़ो आंदोलन' का नेतृत्व करना है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपना कार्य इस प्रकार करें कि वह हमारे भारत को विविधताओं से जोड़ने में सहायक हो। तो आइए, हम 'अमृत महोत्सव' के इस अमृत संकल्प को लें कि देश हमारा सबसे बड़ा विश्वास, हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता रहेगा। हमें 'राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम' के मंत्र के साथ आगे बढ़ना है।"

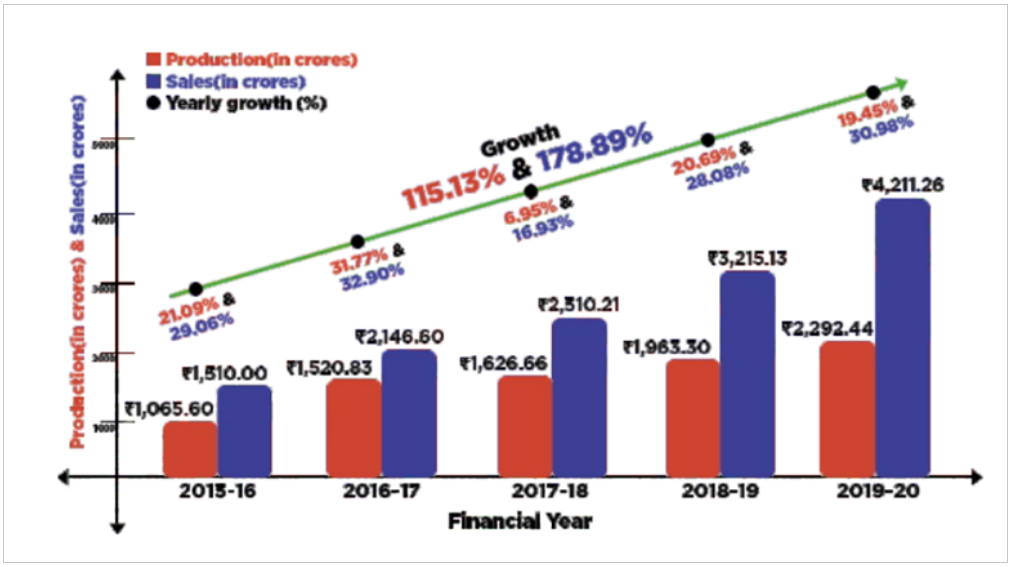

स्रोत: केवीआईसी

पिछले 8 वर्षों में, यानी 2014-15 से 2021-22 में खादी क्षेत्र में उत्पादन में 191 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि खादी की बिक्री में 332 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। खादी फॉर नेशन, खादी फॉर फैशन और खादी फॉर ट्रांसफॉर्मेशन मंत्र के साथ दुनियाभर में खादी के लोकप्रिय होने के कारण खादी के उत्पादन और बिक्री में काफी वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप कारीगरों और बुनकरों का आर्थिक उत्थान हुआ है। जैसा कि केवीआईसी के अध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया, 2023 में मजदूरी 7.50 रुपये प्रति लच्छी से बढ़कर 10 रुपये हो गई। कारीगरों की मासिक आय में लगभग 33 प्रतिशत और बुनकरों की मासिक आय में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अन्य संकेत, जो खादी उद्योग के विकास को दर्शाते हैं, जिसमें मोदी जी के मन की बात ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इसमें शामिल हैं-

- खादी का उत्पादन 2014-15 में 105.38 मिलियन वर्ग मीटर से बढ़कर 2019-20 में 198.29 मिलियन वर्ग मीटर हो गया।
- 2015-16 से 2019-2020 तक खादी क्षेत्र में कुल उत्पादन में 115 प्रतिशत की वृद्धि।
- 2015-16 से 2019-2020 तक खादी की बिक्री में 179 प्रतिशत की वृद्धि।
- 2015-16 से खादी 19.45 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ी है।
- यह 2004-14 से 6.25 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि से तीन गुना अधिक है।
- इसी तरह, बिक्री 2004-14 के 6.65 प्रतिशत की तुलना में 2015 और 2020 के बीच औसतन 28 प्रतिशत बढ़ी।

खादी के प्रचार-प्रसार को मन की बात के माध्यम से एक जन-आंदोलन में बदलने के मोदी जी के प्रयास में कई कारणों से परिवर्तनकारी क्षमता है। पहला, खादी एक स्वदेशी उत्पाद है, जो भारत के इतिहास में सन्निहित है, और

इस प्रकार खादी को पुनर्जीवित करना भारत के वर्तमान को उसके अतीत से जोड़ने के बराबर है। दूसरा, खादी के कपड़े को बढ़ावा देने से भारत की कपड़ा आयात निर्भरता को कम करके भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की क्षमता है, जो देश के राजकोषीय घाटे के संकट को बढ़ा रहा है। खादी आंदोलन के माध्यम से श्री नरेन्द्र मोदी जी देश को स्वदेशी और स्वराज के एक कदम और करीब ले गए हैं।

स्वच्छता

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने गांधीवादी दर्शन की तर्ज पर 'स्वराज' को साकार करने में मदद करने के लिए देश में 'स्वच्छता' आंदोलन में लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए मन की बात मंच का भी उपयोग किया है। रेडियो प्रसारण के जरिए मोदी जी ने एक अहम सामाजिक मुद्दे को संबोधित किया, जिससे देश आजादी के पहले से ही जूझ रहा है। प्रधानमंत्री ने खुले में शौच, एकल उपयोग प्लास्टिक और 'वेस्ट टू वेल्थ' जैसे विषयों को छुआ है, और अपने श्रोताओं को प्रोत्साहित करने और भारत को करीब लाने वाले जन-आंदोलनों को शुरू करने के लिए देश में लोगों द्वारा संचालित स्वच्छता अभियानों के उदाहरणों को 'संपूर्ण स्वच्छता' के लिए नियमित रूप से साझा किया है।

स्रोत: न्यूज18

अपने पहले मन की बात प्रसारण में प्रधानमंत्री ने एक नागरिक से प्राप्त पत्र को पढ़कर सुनाया और अपने श्रोताओं को 10 बुरी आदतों (बुराइयों) को खत्म करने का आह्वान किया, जिसमें से गंदगी भी एक है। प्रधानमंत्री ने इसे देश की सबसे बड़ी बुराई में से एक बताया। प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को ऐसा करने के लिए नौ अन्य लोगों को नामांकित करने का निर्देश दिया, जिससे स्वच्छता का एक जन-आंदोलन शुरू हुआ। इस साधारण भाव-भंगिमा ने देशभर में ऐसे लोगों की एक श्रृंखला तैयार की, जिन्होंने न केवल अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के एक हिस्से के रूप में, बल्कि बुराई को अच्छाई से हराने के प्रतीक के रूप में विजय दशमी के त्योहार की अनिवार्य शिक्षा के रूप में स्वच्छता के कार्यों में खुद को शामिल करना शुरू कर दिया।

इसके बाद कई लोगों द्वारा संचालित कार्य और पहल की गई, जिसने स्वच्छता से जुड़े मामलों में प्रगति की और एक ऐसे ऐतिहासिक सपने को पूरा करने के लिए कदम बढ़ाया, जिसे महात्मा गांधी ने देखा था। मन की बात के 25वें प्रसारण में, जो अक्टूबर, 2016 में प्रसारित हुआ, प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि कैसे आईटीबीपी के एक सैनिक ने प्रधानमंत्री मोदी से प्रेरणा ली और हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के बधाना गांव में शौचालय निर्माण में मदद के लिए अपनी जेब से 57,000 रुपये दान किए। क्योंकि उसके गांव के लगभग 60 परिवारों के पास शौचालय बनाने के लिए पैसे नहीं थे। इस नेक कार्य पर, जो 'जन-भागीदारी ' और 'जन शक्ति' का एक उदाहरण

है, प्रधानमंत्री ने सैनिक के प्रयासों की सराहना की और टिप्पणी की कि कैसे अधिक से अधिक भारतीय राज्य लोगों की भागीदारी से खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बन रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा,

"पहले सिक्किम खुले में शौच मुक्त था, अब हिमाचल शौच मुक्त है। 1 नवंबर को केरल खुले में शौच से मुक्त हुआ। लेकिन यह कैसे पूरा हुआ? ITBP के एक जवान विकास ठाकुर ने स्वच्छ भारत मिशन के प्रति एक अनुकरणीय प्रतिबद्धता दिखाई है। उनके उदात्त भाव ने उनके गृह राज्य को खुले में शौच मुक्त स्थिति प्राप्त करने में योगदान दिया है।"

आईटीबीपी के सिपाही द्वारा निस्वार्थ कार्य के परिणामस्वरूप शौचालयों के निर्माण के लिए धन दान करने से और अधिक लोगों को प्रेरणा मिली। सैनिक के एक दोस्त ने अपने गांव में शौचालय निर्माण के लिए 30,000 रुपये दिये। अंजलि त्यागी नाम की एक पत्रकार भी इस स्वच्छता अभियान में शामिल हुईं और अपने गांव के लिए 30,000 रुपये दिये। प्रधानमंत्री मोदी की मन की बात के इस सीधे प्रभाव ने जमीनी स्तर पर देश की प्रगति की गति को तेज कर दिया है, जो खुले में शौच से संबंधित बीमारियों से जूझ रही थी।

स्रोत: एएनआई @ट्विटर

यह कहा जा सकता है कि श्री नरेंद्र मोदी जी ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में क्रांति ला दी है। उन्होंने 'मन की बात' के जरिए जन-भागीदारी का माहौल तैयार किया है। इस संबंध में सहयोग के मामलों ने पूरे देश को कवर किया है। भारत की सभी दिशाओं में 'जन-भागीदारी ' देखी जा रही है। 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू किया गया स्वच्छ भारत मिशन एक जन-आंदोलन बन गया है। 12 करोड़ से अधिक स्कूली बच्चे, 6.25 लाख स्वच्छाग्रही, 2.5 लाख सरपंच, लाखों नागरिक और लगभग 50 ब्रांड एंबेसडर इससे जुड़े। प्रधानमंत्री के आह्वान ने लोगों की भागीदारी की भावना को और मजबूत किया है।

उदाहरण के लिए, केरल के एक दूरस्थ गांव एडामालाकुडी में एनसीसी, एनएसएस और इंजीनियरिंग छात्रों के एक समूह ने गांव में शौचालय बनाने और खुले में शौच-मुक्त (ओडीएफ) बनाने में मदद की। प्रधानमंत्री ने पहल को सराहा और 30 अक्टूबर, 2016 को मन की बात के 25वें संस्करण में कहा,

"शौचालयों के निर्माण के लिए आवश्यक भवन सामग्री चाहे वह ईंट हो या सीमेंट, पूरी निर्माण सामग्री युवकों ने अपने कंधों पर ढोई, पूरा दिन जंगलों में घूमते रहे। और उन्होंने खुद उस गांव में शौचालय बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। इस प्रकार दूर-दराज के जंगलों में, एक सुदूर गांव को खुले में शौच से मुक्त बनाने का लक्ष्य हासिल किया!"

'स्वच्छ भारत' के दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों के परिणामस्वरूप, जिसमें मन की बात कार्यक्रम पर इस मुद्दे के बारे में जागरूकता फैलाने और लोगों को नीचे से ऊपर तक बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित करने का उनका दृढ़ संकल्प शामिल है, कई राज्य जैसे- उत्तर प्रदेश, ओडिशा, तेलंगाना, तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। इसके अलावा, केंद्र के स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (एसबीएम-जी) के हिस्से के रूप में एक लाख से अधिक गांवों ने खुद को ओडीएफ प्लस घोषित किया है, जिसमें तरल और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली, शौचालय और सूचना, शिक्षा और प्रसार के लिए सुव्यवस्थित प्रणालियां शामिल हैं।

मन की बात प्रधानमंत्री मोदी जी के लिए पूरे देश के नागरिकों के साथ अपने विचारों, आकांक्षाओं और उत्सवों को

साझा करने का एक मंच भी साबित हुआ है। इस गतिविधि ने खुले संवाद और भागीदारी के माध्यम से लोकतंत्र की भावना को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया है। उदाहरण के लिए, 'मन की बात' के दूसरे एपिसोड में प्रधानमंत्री को मध्य प्रदेश के सतना से भरत गुप्ता नाम के एक व्यक्ति का पत्र मिला, जिसमें उल्लेख किया गया था कि कैसे उन्होंने स्वच्छता के प्रति लोगों की मानसिकता में बदलाव देखा। उन्होंने उल्लेख किया कि लोग अब आसपास कूड़ा डालने से मना कर रहे हैं, जो पहले के समय के विपरीत है। जब स्वच्छता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। उन्होंने इसका श्रेय प्रधानमंत्री मोदी द्वारा की गई पहल को दिया।

भारत की 1.3 अरब की आबादी वर्तमान में प्रति वर्ष 62 मिलियन टन ठोस अपशिष्ट उत्पन्न करती है। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों के अनुसार, देश 2027 तक सात नए मेगा शहरों के साथ दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा। इस घातीय जनसंख्या वृद्धि दर पर कचरे को अनुपचारित रहने पर डंपिंग के लिए बेंगलुरु के आकार के लगभग 90 प्रतिशत लैंडफिल की आवश्यकता होगी। वेस्ट टू वेल्थ मिशन का उद्देश्य नई तकनीकों के विकास की पहचान और उनका समर्थन करना है, जो एक स्वच्छ और हरित वातावरण बनाने का वादा करती हैं। इस मसले से निपटने के लिए प्रधानमंत्री ने मन की बात में कचरे को रिसाइकिल कर खाद बनाने, ईंटें बनाने, बिजली बनाने और सिंचाई के लिए पानी को रिसाइकिल करने की संभावनाओं के बारे में बात की।

28 अगस्त, 2016 को प्रसारित 23वें संस्करण में गंगा सफाई अभियान के बारे में बात करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों की शक्ति को 'ईश्वरीय अवतार' कहा और बताया कि कैसे गंगा के किनारे स्थित गांवों के प्रधानों को प्रयागराज (इलाहाबाद) में शपथ लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। गंगा मां से कहा कि वे गंगा किनारे बसे अपने गांवों में खुले में शौच की प्रथा को तत्काल बंद करने का भरसक प्रयास करेंगे, शौचालय बनाने का अभियान चलायेंगे और यह भी कि ये गांव गंगा की सफाई में अपना पूरा योगदान देंगे और सुनिश्चित करेंगे कि गंगा अब प्रदूषित नहीं हो।

प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले से एक कहानी साझा की, जहां लगभग 1,700 स्कूलों के 1.25 लाख से अधिक छात्रों ने सामूहिक रूप से अपने माता-पिता को पत्र लिखकर अपने घरों में शौचालय बनाने की मांग की। 70-80 प्रतिशत परिवारों द्वारा सकारात्मक प्रतिक्रिया देने के साथ यह अभ्यास अत्यधिक प्रभावशाली था। प्रधानमंत्री मोदी ने सहभागी शासन का माहौल बनाने का प्रयास किया है। विकास कार्य अक्सर सरकार द्वारा शुरू किया जाता है और लोगों की भागीदारी से उनको सफलता तक ले जाया जाता है। इसने भागीदारी शासन और जागरूकता को बढ़ाया है। प्रगति को उत्प्रेरित करने के लिए पूरे देश को एक साथ जोड़ा है। 25 सितंबर, 2016 को प्रसारित 24वें संस्करण में मोदी जी ने बताया कि सितंबर, 2016 तक ग्रामीण भारत में 2 करोड़ 48 लाख शौचालयों का निर्माण किया गया था। जबकि एक वर्ष में अतिरिक्त 1.5 करोड़ शौचालयों की दिशा में काम हो रहा है। प्रधानमंत्री ने ओडीएफ बनने के लिए राज्यों, जिलों और गांवों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा दिया, जिससे भारतीय गणराज्य के सहकारी संघीय पहलू को बढ़ावा मिला। उन्होंने कहा कि सरकार ने लोगों को उनके संबंधित शहरों में स्वच्छता मिशन की स्थिति के बारे में पूछताछ करने और शौचालयों के निर्माण के लिए आवेदन जमा करने के लिए एक टेलीफोन नंबर- 1969 समर्पित किया था। उन्होंने महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी वर्ष का हवाला देते हुए हेल्पलाइन के रूप में '1969' को चुनने के पीछे के तर्क को भी समझाया।

स्रोत: Swachhindia.ndtv.com

'वेस्ट टू वेल्थ' पहल के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने स्वच्छता को न केवल एक विश्वास व एक आदत के रूप में, बल्कि एक राजस्व मॉडल के रूप में भी अपनाने का प्रयास किया है। 25 सितंबर, 2016 को प्रसारित 24वें संस्करण में मोदी जी ने स्वच्छता मिशन के तहत 'कचरे से खाद' की ओर बढ़ने को अनिवार्य बताया, ताकि उर्वरक कंपनियां कचरे से बनी खाद खरीद सकें और जैविक खेती अपनाने या अपनी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार

करने के इच्छुक किसानों को इसकी आपूर्ति कर सकें। इसके लिए अभिनेता अमिताभ बच्चन को भी ब्रांड एंबेसडर बनाया गया था। उन्होंने रोजगार पैदा करने के तरीकों के साथ-साथ स्वच्छता और साफ-सफाई में प्रौद्योगिकी की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए इंडोसैन (भारत स्वच्छता सम्मेलन) का भी उल्लेख किया। गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी द्वारा 107 गांवों में लगभग 9,000 शौचालय बनाने के लिए जागरण अभियान (जागरूकता अभियान) शुरू करने की कहानी भी साझा की। मोदी जी ने इसी संस्करण में यह भी बताया कि किस प्रकार उन्होंने स्वच्छता अभियान में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों को शामिल किया था। मोदी जी ने समय-समय पर जो चलन स्थापित किया है, वह सरकार की विभिन्न पहलों के बारे में जनता को सूचित करना और देश को स्वच्छता की ओर ले जाने के लिए 'जन शक्ति' और 'जन-भागीदारी ' बढ़ाने की अपील करना है। ये स्वराज का हिस्सा है।

28 मई, 2017 को प्रसारित 32वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी को मुंबई निवासी एक महिला का फोन आया, जिन्होंने मोदी जी को सूचित किया कि प्रधानमंत्री के आह्वान ने लोगों को देशभर में और विभिन्न आयु समूहों के बीच स्वच्छता को एक मिशन के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया है। मन की बात में फोन करने वाले ने मोदी जी से कहा,

"प्रणाम मोदी जी, मैं मुंबई से नैना हूं। मोदी जी... मुंबई हो या सूरत, आपके आह्वान ने लोगों को स्वच्छता को एक मिशन के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया है। बड़े ही नहीं, बच्चे भी स्वच्छता को लेकर जागरूक हुए हैं। कई बार हम उन्हें बड़ों को सड़कों पर कूड़ा न डालने के लिए कहते हुए देखते हैं। आपने काशी में गंगा के घाटों से जो स्वच्छता अभियान शुरू किया था, वह अब आपसे प्रेरित होकर एक आंदोलन का रूप ले चुका है।"

इस संदेश के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने भारत में स्वच्छता आंदोलन को ताकत देने के लिए लोगों को बधाई दी। उन्होंने यह भी प्रस्तावित किया कि लोगों को कचरे को एक संसाधन और धन के रूप में देखना चाहिए। अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नई तकनीकों की खोज करनी चाहिए, जिसमें स्टार्ट-अप भी शामिल हो सकते हैं, जिससे धन और रोजगार के सृजन के लिए स्वच्छता को एक माध्यम बनाया जा सके। उसी संस्करण में, जिसे मई, 2017 में प्रसारित किया गया था, प्रधानमंत्री ने जनता को सूचित किया कि कैसे केंद्र राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों के साथ मिलकर 5 जून, 2017 को विश्व पर्यावरण दिवस के लिए अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक व्यापक अभियान शुरू कर रहा है। इसके अभियान के तहत प्रधानमंत्री ने जनता को सूचित किया कि ठोस और तरल कचरे के लिए देश के 4000 शहरों में रंग-कोडित कूड़ेदान रखे जाएंगे।

जन-जागरूकता बढ़ाना प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात की एक प्रमुख विशेषता रही है, जिसने जन-भागीदारी को बढ़ाया है और राष्ट्रीय महत्व की विभिन्न पहलों को जन-आंदोलनों में बदल दिया है। स्वच्छता मिशन के इस पहलू पर प्रकाश डालते हुए और लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देते हुए मोदी जी ने कहा,

"मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम एक संस्कृति विकसित करेंगे और स्वच्छता की दिशा में हम जो नए कदम उठाते हैं, वे जारी रहेंगे, तभी हम गांधी जी के सपने को साकार कर पाएंगे, जिस तरह की स्वच्छता का उन्होंने सपना देखा था, आज हम उसे हासिल कर पाएंगे। मुझे गर्व के साथ स्वीकार करना चाहिए कि यदि एक व्यक्ति अपने मन में ठान ले, तो एक बहुत बड़ा जन-अभियान चलाया जा सकता है। स्वच्छता भी एक ऐसा ही अभियान है।"

यहां मोदी जी ने प्रेरणा देने के लिए एक और उदाहरण दिया कि कैसे लोगों ने एकजुट होकर 80-90 हफ्तों में मुंबई के वर्सोवा बीच को कचरे से भरे समुद्र तट से स्वच्छ और सुंदर समुद्र तट में बदल दिया था। अक्टूबर, 2015 में अफ़रोज़ शाह नामक एक सज्जन द्वारा शुरू किया गया यह अभियान एक जन-आंदोलन में बदल गया था और इसे 'चैंपियन ऑफ़ द अर्थ' के पुरस्कार के साथ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) से प्रशंसा मिली थी। इसके बाद प्रधानमंत्री ने लोगों की भागीदारी की एक और कहानी साझा की, जिसमें जम्मू-कश्मीर के रियासी ब्लॉक के लोगों और विशेष रूप से महिलाओं ने ब्लॉक को खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बना दिया था। इसे 'स्वच्छता' के लिए जन-संचालित जन-आंदोलन के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में उद्धृत करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने रियासी ब्लॉक के लोगों को बधाई दी और देश को अनुसरण करने का मार्ग दिखाया।

देश को विकास और वैभव के पथ पर आगे ले जाने में प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता के बारे में श्रोताओं को प्रेरित और

जागरूक रखने के लिए प्रधानमंत्री ने लगातार देश के कोने-कोने से कई उदाहरण साझा किए हैं। उदाहरण के लिए, जनता की पर्यावरण चेतना को बढ़ाने के लिए मोदी जी ने अपने श्रोताओं से अपील की और कहा,

"क्या आपकी गतिविधियां पर्यावरण के अनुकूल, पर्यावरण के अनुकूल या अन्यथा हैं? यदि आप पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं, तो इसे आज समाज में अस्वीकार्य माना जाता है। और इसी का नतीजा है कि मैं देखता हूं कि इस गणेशोत्सव में ईको फ्रेंडली गणपति एक बहुत बड़ा अभियान बन गया है। अगर आप यूट्यूब पर जाएंगे, तो पाएंगे कि हर घर में बच्चे मिट्टी की गणेश की मूर्तियां बना रहे हैं और उनमें रंग भर रहे हैं। कोई वेजिटेबल कलर का इस्तेमाल कर रहा है, तो कोई कागज के टुकड़े चिपका रहा है। हर परिवार में तरह-तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं। यह संभवतः अपनी तरह का पहला, पर्यावरण चेतना में सबसे व्यापक प्रयोग है। मीडिया हाउस भी लोगों को प्रशिक्षित करने, उन्हें प्रेरित करने और उन्हें इको फ्रेंडली गणेश मूर्तियों के प्रति मार्गदर्शन करने का एक बड़ा प्रयास कर रहे हैं। यह कितना बड़ा परिवर्तन रहा है; यह कितना सुखद है।"

मोदी जी ने गणेश चतुर्थी के दौरान प्रदूषण को कम करने का एक और उदाहरण दिया, जो सिंथेटिक सामग्री से बनी गणेश मूर्तियों के सामूहिक विसर्जन के कारण होता है। प्रधानमंत्री ने उस मामले पर प्रकाश डाला, जहां एक इंजीनियर ने गणेश की मूर्ति बनाने का प्रशिक्षण देने के लिए मिट्टी की विशेष किस्मों को एकत्र किया और फिर उन्हें पानी की एक छोटी बाल्टी में विसर्जित कर दिया। वहीं गणेश प्रतिमा के विसर्जन पर मिट्टी में तुलसी का पौधा बोया गया। इस कहानी को साझा करके प्रधानमंत्री ने स्वाभाविक रूप से अपने श्रोताओं को पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जो स्वच्छता और पर्यावरणवाद को बढ़ावा देते हैं। यह बताते हुए कि 2

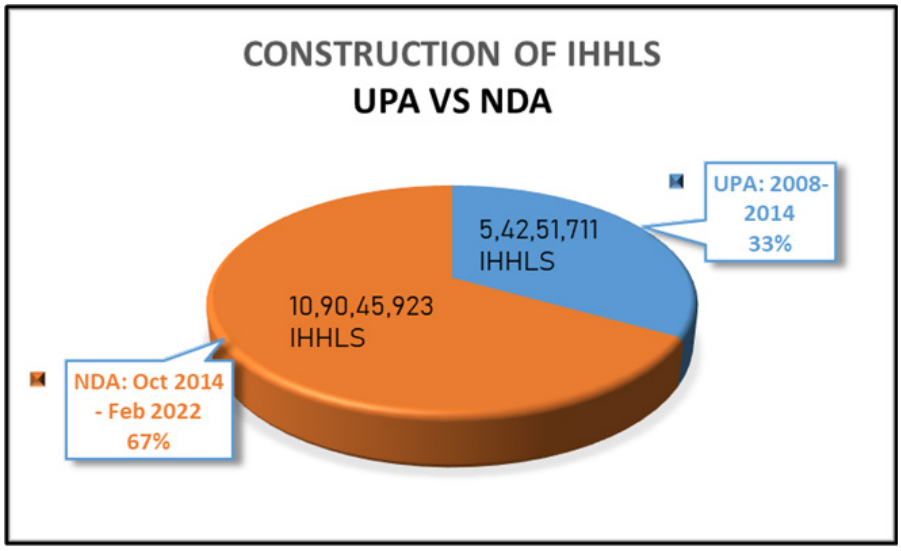

व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों (आईएचएचएल) के निर्माण से संबंधित डेटा। स्रोत: पीआईबी और क्विंट

अक्टूबर, 2014 को आरंभ हुए स्वच्छता अभियान को तीन साल बीत चुके हैं, उन्होंने कहा कि सकारात्मक परिणाम पहले से ही स्पष्ट थे, क्योंकि शौचालय 39 प्रतिशत से बढ़कर 67 प्रतिशत आबादी के साथ 2.30 लाख से अधिक गांवों ने खुद को ओडीएफ घोषित कर दिया था।

स्रोत: आईएएनएस

मोदी जी ने 'मन की बात' के उसी संस्करण में गुजरात के धानेरा जिले का एक और उदाहरण दिया, जहां जमीयत-उलेमा-ए-हिंद के स्वयंसेवकों ने चरणबद्ध तरीके से 22 मंदिरों और दो मस्जिदों की सफाई की। मोदी जी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे उन्होंने स्वच्छता की उपलब्धि के लिए एकता का एक बेहतरीन उदाहरण पेश किया और कहा कि भागीदारी की यह भावना जब निहित है, 'निश्चित रूप से हमारे देश को अधिक ऊंचाइयों पर ले जाएगी।' इसके बाद प्रधानमंत्री ने जनता से एक साथ आने और आगामी गांधी जयंती से कम से कम 15-20

दिन पहले 'स्वच्छता ही सेवा' का अभियान शुरू करने की अपील की। उन्होंने सदियों पुरानी मान्यता- 'जल सेवा ही प्रभु सेवा' का हवाला देते हुए कहा कि पूरे देश में स्वच्छता के वातावरण की आवश्यकता है और दिवाली, नवरात्रि और दुर्गा पूजा जैसे विभिन्न त्योहारों की तैयारी में स्वच्छता को जोड़ा और शामिल किया जा सकता है।

मोदी जी ने लोगों से अपील की कि रविवार और अन्य अवकाश के दिनों में अपने-अपने मोहल्लों और आस-पास के गांवों में एक साथ आंदोलन के रूप में श्रमदान करें और समयदान करें। उन्होंने सभी गैर सरकारी संगठनों, स्कूलों, कॉलेजों और सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक नेताओं, सरकार के लोगों, कलेक्टरों और सरपंचों से 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने का आग्रह किया। उन्होंने आगे लोगों की भागीदारी के माध्यम से समाज में प्रेरणा लाने के बारे में बात की और अपने श्रोताओं को पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय द्वारा सरकार की पहल 'स्वच्छ संकल्प से स्वच्छ सिद्धि प्रतियोगिता' एक लघु फिल्म निर्माण प्रतियोगिता के बारे में बताया, जिसमें लोग देश में स्वच्छता को प्रेरित करने के लिए अपने मोबाइल फोन से भी लघु फिल्म बना सकते हैं। मोदी जी ने लगातार स्वच्छता पर जोर दिया और इस मुद्दे को महात्मा गांधी के जीवन से जोड़ दिया। उदाहरण के लिए, 27 अगस्त, 2017 को प्रसारित 35वें संस्करण में, प्रधानमंत्री ने लोगों से 2 अक्टूबर, 2017 को 'स्वच्छ दो अक्टूबर' बनाने का आग्रह किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने एक अन्य उदाहरण का हवाला दिया, जहां महाराष्ट्र के एक सेवानिवृत्त शिक्षक श्रीमन चंद्रकांत कुलकर्णी ने उनकी कुल मासिक पेंशन में से स्वच्छता अभियान के लिए 5,000 व 16,000 रुपये के 51 पोस्ट-डेटेड चेक दान किए। प्रधानमंत्री ने कहा, "यह हमारे लोगों की ताकत है, ऐसे लोग ही हमारी असली ताकत हैं।" प्रधानमंत्री ने कहा कि जब से उन्होंने मन की बात में इस घटना का जिक्र किया, एक चेन-रिएक्शन शुरू हो गया, जहां अधिक से अधिक लोग इस कार्य के लिए दान करने के लिए आगे आए।

मन की बात की मदद से स्वच्छता अभियान एक जन-आंदोलन कैसे बन गया, इस बारे में बात करते हुए मोदी जी ने कहा,

---

"समाज के हर वर्ग ने इसे अपने अभियान के रूप में लिया है, हर कोई इससे जुड़ गया है। चाहे खेल जगत के लोग हों, शिक्षाविद हों, स्कूल हों, कॉलेज हों, विश्वविद्यालय हों, किसान हों, अधिकारी हों, सरकारी कर्मचारी हों, पुलिस हो, सेना के जवान हों, हर कोई इससे जुड़ा है। सार्वजनिक स्थानों पर एक तरह का दबाव बन गया है और अब सार्वजनिक स्थान को कोई गंदा करने या बिगाड़ने की कोशिश करता है, तो लोग विरोध करते हैं और सार्वजनिक स्थानों को बिगाड़ने वाले भी इस दबाव को महसूस कर रहे हैं। यह एक अच्छी बात है और मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के पहले चार दिनों में ही 75 लाख से अधिक लोग 40 हजार से अधिक पहलों के साथ इन गतिविधियों में शामिल हो गए।"

मीडियाकर्मियों को श्रेय देते हुए मोदी जी ने एक और घटना को याद किया, जहां श्रीनगर का एक 18 वर्षीय बिलाल डार 5-6 साल से वुलर झील से प्लास्टिक, पॉलीथिन, इस्तेमाल की हुई बोतलें आदि जहरीला मलबा साफ करने का काम कर रहा था, जो कि इसके लिए बदनाम हो गया था। उन्होंने इस गतिविधि के माध्यम से मोदी जी के 'वेस्ट टू वेल्थ' विजन के अनुरूप कमाई भी की। शोध के माध्यम से यह पाया गया कि बिलाल डार ने 2017 तक 12,000 किलोग्राम कचरा साफ किया था, जिसके लिए उसे श्रीनगर नगर निगम द्वारा ब्रांड एंबेसडर भी बनाया गया था। प्रधानमंत्री ने बिलाल डार को 'स्वच्छता में रुचि रखने वाले हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत' कहा।

25 जून, 2017 को मन की बात के 33वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तर प्रदेश के बिजनौर के मुबारकपुर गांव से लोगों की भागीदारी की एक प्रेरक कहानी पर प्रकाश डाला। इस गांव ने न केवल अपने दम पर शौचालय बनवाए, बल्कि सरकार को 17 लाख रुपये लौटाए, जो उन्हें स्वच्छ भारत मिशन के तहत मिले थे, यह कहते हुए कि वे इस नेक काम को अपने दम पर करेंगे। रमजान के दौरान ऐसा करते हुए ग्रामीणों ने पवित्र अवसर को समाज के कल्याण के अवसर में बदल दिया और दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण स्थापित किया। जन-भागीदारी

की इस मिसाल से ही गांव को खुले में शौच की बीमारी से मुक्ति मिली।

प्रधानमंत्री ने स्वच्छता के अभ्यास के प्रति लोगों की मानसिकता और आदतों में बदलाव की प्रशंसा करते हुए, यह महसूस करने पर आभार व्यक्त किया कि स्वच्छता अब एक सरकारी कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक जन-आंदोलन बन गया है।

विजयनगरम जिले में शौचालय निर्माण अभियान। स्रोत: द न्यूज मिनट

मन की बात के उसी संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने एक और जन-आंदोलन पर प्रकाश डाला, जिसमें 71 ग्राम पंचायतों में 10,000 घरेलू शौचालयों का निर्माण करने के लिए आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले में 100 घंटे का नॉन-स्टॉप अभियान चलाया गया था। इस जन-संचालित अभियान के परिणामस्वरूप 71 ग्राम पंचायतें 100 घंटे के भीतर खुले में शौच मुक्त हो गईं। प्रधानमंत्री ने प्रेरक मिसाल कायम करने के लिए जिले के नागरिकों को बधाई दी।

29 अक्टूबर, 2017 को 37वें एपिसोड में मोदी जी ने पारिस्थितिक संरक्षण संगठन नामक एक गैर सरकारी संगठन द्वारा महाराष्ट्र में चंद्रपुर किले के परिवर्तन पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त करने का उल्लेख किया, जिसने 200 दिनों तक चलने वाला स्वच्छता अभियान चलाया। प्रधानमंत्री मोदी ने दावा किया कि किले की 'पहले और बाद' की तस्वीरों ने उन्हें अभिभूत कर दिया था। इस घटना से प्रधानमंत्री ने श्रोताओं से कहा कि इस तरह के संकल्प और दृढ़ संकल्प को मन में बिठाएं और अपनी ऐतिहासिक धरोहरों को सुरक्षित और स्वच्छ रखने का कर्तव्य निभाएं। 31, दिसंबर, 2017 को 39वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने सबरीमाला मंदिर में स्वच्छता अभियान के बारे में बात की, जहां स्वच्छता में सार्वजनिक भागीदारी की संस्कृति 'पुण्यम पूंकवनम' की शुरुआत पी. विजयन नामक एक पुलिस अधिकारी ने की थी। पुलिस अधिकारी द्वारा शुरू किये गए स्वच्छता अभियान में हर भक्त ने शारीरिक श्रम किया और मंदिर की साफ-सफाई में अपना योगदान दिया।

ऐसे उदाहरणों के साथ-साथ प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार मन की बात में संबोधित किए गए मुद्दों की ओर लक्षित सरकारी पहलों का उल्लेख किया है। उन्होंने 26 फरवरी, 2017 को मन की बात के 29वें संस्करण में चार हजार से अधिक शहरों में स्वच्छता के स्तर में उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए 40 करोड़ से अधिक लोगों को कवर करने वाले दुनिया के सबसे बड़े स्वच्छता सर्वेक्षण 2018 की जानकारी लोगों को दी।

अन्य बातों के अलावा, सर्वेक्षण स्वच्छता ऐप के उपयोग का विश्लेषण किया, जो विभिन्न प्रकार के सेवा केंद्रों में सुधार और सुधार लाने के लिए था। ऐप यह भी निरीक्षण करेगा कि क्या शहरों ने एक ऐसी प्रणाली बनाई है, जिसमें स्वच्छता एक सार्वजनिक आदत बन रही है। मोदी जी ने कहा,

"स्वच्छता बनाए रखना अकेले सरकार का काम नहीं है। हर नागरिक और जन संगठनों की बड़ी जिम्मेदारी है। और मैं हर नागरिक से अपील करता हूं कि स्वच्छता सर्वेक्षण में सक्रिय रूप से भाग लें... और यह सुनिश्चित करने के लिए पूरा प्रयास करें कि आपका शहर पीछे न रहे..."

किसी देश के प्रधानमंत्री को अपने देशवासियों को कचरा संग्रहण का सिद्धांत बताने के लिए सार्वजनिक संवाद में शामिल होते देखना दुर्लभ है। इनमें किसी उद्देश्य के लिए बड़ी संख्या में लोगों को लामबंद करने की क्षमता है। मोदी जी ने 31 दिसंबर, 2017 को मन की बात के 39वें संस्करण में लोगों को 'रीडियूज, रीयूज और रीसायकल' के सिद्धांत के बारे में बताया। उन्होंने जनता से अपील की कि वे 2018 के स्वच्छता सर्वेक्षण में अपने-अपने शहरों के लिए सर्वोच्च रैंकिंग हासिल करने का प्रयास करें।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कैसे वह महाराष्ट्र से श्री मंगेश द्वारा उनके साथ साझा की गई एक तस्वीर से प्रभावित हुए, जहां एक पोता 'मिशन स्वच्छ मोरना' में भाग ले रहा था। नदी सफाई कार्यक्रम में अकोला के छह हजार से अधिक लोगों, 100 से अधिक गैर सरकारी संगठनों, कॉलेज के छात्रों, बच्चों, बुजुर्गों, माताओं और बहनों की भागीदारी देखी गई थी। स्वच्छता की दिशा में बदलाव लाने की लोगों की क्षमता पर टिप्पणी करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा,

"मिशन स्वच्छ मोरना यह दर्शाता है कि यदि व्यक्ति कुछ करने की ठान ले, तो कुछ भी असंभव नहीं है। जन-आंदोलनों के माध्यम से विशाल सामाजिक सुधार लाए जा सकते हैं।"

प्रधानमंत्री ने लगातार स्वच्छता अभियान में बड़े पैमाने पर भागीदारी की अपील की है। उन्होंने इस मुद्दे के बारे में केंद्र और राज्यों की पहल के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए मन की बात मंच का भी उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, 25 फरवरी, 2018 को 41वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने GOBAR-धन (गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो एग्रो रिसोर्सेज) योजना के बारे में जानकारी दी, जिसका उद्देश्य मवेशियों के गोबर को परिवर्तित करके धन और ऊर्जा पैदा करना है, जो भारत में प्रतिदिन 3 मिलियन टन उत्पन्न होता है, और खाद और बायोगैस में ठोस कृषि अपशिष्ट है। प्रधानमंत्री ने एक अन्य पहल के बारे में बताया, वह 'कचरा महोत्सव' था, जिसे रायपुर नगर निगम द्वारा स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करने और शहर की अपशिष्ट समस्याओं के रचनात्मक समाधान को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया था।

25 फरवरी, 2018 को कार्यक्रम की 41वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने 'नए भारत' में महिलाओं की क्षमता को दर्शाने के लिए झारखंड से एक और उदाहरण पर प्रकाश डाला। 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत झारखंड में लगभग 15 लाख महिलाओं ने पूरे महीने स्वच्छता अभियान चलाया। केवल 20 दिनों में 1.70 लाख शौचालयों का निर्माण किया और रिकॉर्ड बनाया। जिस तरह महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नारी शक्ति को संगठित किया था, उसी तरह श्री नरेंद्र मोदी ने भारत को 'संपूर्ण स्वच्छता' वाले देश में बदलने के लिए वर्ग को संगठित करने की कोशिश की है। उन्होंने कहा,

"इस अभियान में लगभग एक लाख सखी मंडल, 14 लाख महिलाएं, 2 हजार महिला पंचायत प्रतिनिधि, 29 हजार जलवाहक, 10 हजार महिला सफाईकर्मी और 50 हजार महिला राजमिस्त्री शामिल थीं। आप कल्पना कर सकते

स्वच्छता अभियान चला रहे सखी मंडल। स्रोत: आकाशवाणी

हैं कि यह कितना विशाल उपक्रम था! झारखंड की इन महिलाओं ने दिखा दिया है कि नारी शक्ति 'स्वच्छ भारत अभियान' का अभिन्न अंग है, जो सामान्य जीवन में स्वच्छता के अभियान की दिशा बदल देगी और आम लोगों के स्वभाव में स्वच्छता की प्रभावी भूमिका होगी।"

29 अप्रैल, 2018 को 43वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने श्रोताओं को स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप 2018 के बारे में जानकारी दी, जो देश को बदलने और स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देने के इच्छुक कॉलेज के छात्रों और युवाओं के लिए एक शानदार अवसर था। प्रधानमंत्री को सूचित किया गया कि इस अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान के साथ पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि हमारे युवा स्वच्छता के इस आंदोलन को आगे ले जाने में हाथ बंटाएंगे।'

मन की बात के माध्यम से लोगों को प्रेरित करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी स्वच्छता आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न वर्गों द्वारा सामूहिक भागीदारी के उदाहरण साझा करते रहे हैं। 'स्वच्छ गंगा अभियान', जिसमें बीएसएफ के एक समूह ने एवरेस्ट पर चढ़ाई की और वहां पड़े कचरे को नीचे उतारा। स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हुए 27 मई, 2018 को कार्यक्रम के 44वें एपिसोड में इसका उल्लेख किया गया। 15 सितंबर, 2018 को शुरू हुआ 'स्वच्छता ही सेवा' आंदोलन, जिसमें करोड़ों लोग स्वेच्छा से जुड़े और यहां तक कि मोदी जी को भी 'श्रमदान' करने का अवसर मिला, 30 सितंबर, 2018 को मन की बात के 48वें संस्करण में इसका उल्लेख मिला। मध्य प्रदेश के जबलपुर में स्वच्छ भारत मिशन का भी प्रधानमंत्री द्वारा 30 दिसंबर, 2018 को 51वें संस्करण में उल्लेख किया गया था, जिसमें तीन लाख से अधिक लोग शामिल थे, जिनमें नगर निगम, स्वैच्छिक संगठनों, छात्रों और जबलपुर के लोग शामिल थे।

बीएसएफ का स्वच्छ गंगा स्वच्छ हिमालय अभियान। स्रोत: एएनआई

लोगों को लामबंद करने और स्वच्छता मिशन को एक जन-आंदोलन में बदलने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के अथक दृढ़ संकल्प के परिणाम बेहद सकारात्मक और सुखद रहे हैं। 27 जनवरी, 2019 को 52वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि मन की बात के श्रोताओं ने स्वच्छ भारत मिशन में कैसे योगदान दिया और कहा,

"मन की बात के श्रोताओं ने भी स्वच्छ भारत की इस यादगार यात्रा में बहुत योगदान दिया है और इसीलिए हम आप सभी के साथ यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि पांच लाख पचास हजार से अधिक गांवों और 600 जिलों ने खुद को खुले में शौच मुक्त घोषित कर दिया है और ग्रामीण भारत में स्वच्छता कवरेज 98 प्रतिशत को पार कर गया है और लगभग नौ करोड़ परिवारों को शौचालय की सुविधा प्रदान की गई है।"

भारतीय सेना का स्वच्छ सियाचिन अभियान

25 अगस्त, 2019 को मन की बात के 56वें संस्करण में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि कैसे पूरा देश सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त होने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प ले रहा है। मोदी जी ने बताया कि कैसे रिपुदमन बेल्वी नाम के एक युवक ने हैशटैग #PlasticUpvaas के जरिए देश को प्रेरित करते हुए 'प्लॉगिंग' यानी जॉगिंग और कूड़ा उठाने का अनूठा प्रयास किया। 27 अक्टूबर, 2019 को 58वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को नेक और नामुमकिन लगने वाले काम के बारे में बताया, जिसमें भारतीय सेना ने 'स्वच्छ सियाचिन' अभियान चलाया और ग्लेशियर और उसके आसपास के क्षेत्रों से 130

टन से अधिक कचरे को हटाया।

पुनीत सागर अभियान के दौरान एनसीसी कैडेट्स । स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया

26 दिसंबर, 2022 को 84वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने स्कूबा गोताखोरों की एक और प्रेरक कहानी साझा की, जिन्होंने 13 दिनों के भीतर मंगमारिपेटा समुद्र तट के तट से 100 मीटर दूर से 4,000 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे को हटा दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि कैसे एक छोटी सी शुरुआत को एक बड़े अभियान में बदला जा सकता है। मोदी जी ने इसी संस्करण में साझा किया कि कैसे उनके दृष्टिकोण से प्रेरित होकर एनसीसी ने 'पुनीत सागर अभियान' शुरू किया, जिसके तहत 30,000 से अधिक कैडेटों ने स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाने और समुद्र तट को साफ रखने के लिए समुद्र के किनारे की सफाई की।

26 जून, 2022 को मन की बात के 90वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने 'वेस्ट टू वेल्थ' से जुड़े सफल प्रयासों का लेखा-जोखा साझा किया। आइज़ोल में स्थानीय एजेंसियों, स्वयंसेवी संगठनों और स्थानीय लोगों ने चिते लुई नदी की सफाई के लिए 'सेव चीट लुई एक्शन प्लान' चलाया। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा तैयार किए गए प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2016 के अनुरूप कचरे से धन सृजन, नदी के किनारों से प्लास्टिक कचरे को हटाने और मिजोरम की पहली प्लास्टिक सड़क बनाने के लिए इसका उपयोग करने का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण था। इसी तरह, प्रधानमंत्री ने मन की बात में पुदुचेरी में लोगों को अपने समुद्र, समुद्र तटों और पारिस्थितिकी को बचाने के लिए 'रीसाइक्लिंग फॉर लाइफ' अभियान शुरू करने के लिए एकजुट होने की जानकारी दी। अभियान के तहत पुदुचेरी के कराईकल में प्रतिदिन हजारों किलोग्राम कचरा एकत्र किया गया और अलग किया गया, जिसमें जैविक कचरे को खाद में बदल दिया गया और गैर-जैविक सामग्री को पुनर्नवीनीकरण किया गया। प्रधानमंत्री ने मन की बात में स्वीकार किया कि इस तरह के प्रयास अत्यधिक प्रेरणादायक होने के साथ-साथ सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ और 'स्वच्छ भारत' के व्यापक लक्ष्य की दिशा में भारत के अभियान को भी गति प्रदान करते हैं।

मन की बात के उसी संस्करण में प्रधानमंत्री ने हिमाचल प्रदेश में हो रही एक साइकिल रैली पर भी प्रकाश डाला, जिसमें साइकिल चालकों के एक समूह ने स्वच्छ पर्यावरण और हमारे स्वास्थ्य के लिए इसके महत्व का संदेश देते हुए पहाड़ी सड़कों पर 175 किलोमीटर की दूरी तय करने का लक्ष्य रखा। मोदी जी ने अपने प्रसारण में जनता से भी अपील की कि वे ऐसे प्रेरक प्रयासों के बारे में उन्हें लिखते रहें, जिससे जनता में स्वच्छता के प्रति व्यापक जागरुकता फैल सके।

मन की बात के माध्यम से सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा किए गए इन प्रयासों ने महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर 2019 में देश को खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बनने में बहुत योगदान दिया। 28 जुलाई, 2019 को मन की बात के 55वें संस्करण में बोलते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा,

"मेरे प्यारे देशवासियों, आपने एक बात देखी होगी। हमारे मन की बात ने समय-समय पर स्वच्छता अभियान को गति दी है और इसी तरह स्वच्छता के लिए किए जा रहे प्रयासों ने हमेशा 'मन की बात' को प्रेरित किया है। पांच साल पहले शुरू हुई यात्रा लोगों की भागीदारी से स्वच्छता के नए मानक स्थापित कर रही है। ऐसा नहीं है कि हमने स्वच्छता में आदर्श का दर्जा हासिल कर लिया है, बल्कि जिस तरह से ओडीएफ से लेकर सार्वजनिक स्थलों तक स्वच्छता अभियान में सफलता मिली है, यह सवा सौ करोड़ देशवासियों के संकल्प की शक्ति है, लेकिन हम इतने पर ही नहीं रुक सकते। यह आंदोलन अब स्वच्छता से सौंदर्यीकरण की ओर बढ़ चुका है।"

26 फरवरी, 2023 को मन की बात के 98वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान में जनता की भागीदारी मजबूत हुई है और कैसे लोग लगातार नवीनतम घटनाक्रमों को प्रधानमंत्री तक पहुंचाते हैं।

यहां प्रधानमंत्री हरियाणा के दुल्हेरी गांव के बारे में बात कर रहे थे, जहां एक युवा ने युवा स्वच्छता एवं जन सेवा समिति नाम से एक संगठन बनाया था, जो सुबह 4 बजे भिवानी शहर में टनों कचरा साफ करने के लिए स्वच्छता अभियान चलाता है। इस कड़ी में प्रधानमंत्री ने लोगों से 'वेस्ट टू वेल्थ' पहल करने की भी अपील की, उन्होंने ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले के एक स्वयं सहायता समूह का उदाहरण साझा किया, जो दूध की थैलियों और अन्य से टोकरी और मोबाइल स्टैंड जैसी उपयोगी वस्तुएं बनाते हैं। प्लास्टिक अपशिष्ट सामग्री न केवल स्वच्छता सुनिश्चित करती है, बल्कि प्रक्रिया से आय का एक स्रोत भी उत्पन्न करती है। लोगों से प्लास्टिक के उपयोग को कम करने का संकल्प लेने का आह्वान करते हुए मोदी जी ने कहा,

"यदि हम दृढ़ संकल्पित हैं, तो हम स्वच्छ भारत में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। कम से कम हम सभी को प्लास्टिक की थैलियों को कपड़े की थैलियों से बदलने का संकल्प लेना चाहिए। आप देखेंगे कि आपका यह संकल्प आपको कितनी संतुष्टि देगा और अन्य लोगों को निश्चित रूप से प्रेरित करेगा।"

यह अपील स्वच्छ भारत मिशन में लोगों की भागीदारी के पिछले उदाहरणों के अनुरूप थी, जिसे मोदी जी ने 27 फरवरी, 2022 को मन की बात के 86वें संस्करण में उजागर किया था, जिसमें रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान से 20 किलोग्राम प्लास्टिक हटाया गया था। लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के प्रेरक प्रयास की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था,

"मैंने राजस्थान के सवाई माधोपुर में एक प्रेरणादायक प्रयास देखा। यहां के युवा रणथंभौर में मिशन बीट प्लास्टिक अभियान चला रहे हैं। रणथंभौर के जंगलों से प्लास्टिक और पॉलिथीन हटा दिए गए हैं। इस तरह के सामूहिक प्रयास देश में लोगों की भागीदारी की भावना को मजबूत करते हैं और जब लोगों की भागीदारी होती है, तो हम सबसे चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं।"

बालिका एवं महिला सशक्तिकरण

प्रधानमंत्री मोदी की बनासकांठा जिले, गुजरात में नारी शक्ति के साथ बातचीत । स्रोत: इंडिया टीवी

'स्वराज' प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा महिलाओं को सशक्त बनाना है। भारत हमेशा से 'नारी शक्ति' का उत्सव मनाने वाला देश रहा है। हमारे प्राचीन ग्रंथों से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन तक एवं अमृतकाल में एक अर्थव्यवस्था के रूप में भारत के त्वरण तक इसे और बढ़ाने का आह्वान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 'नारी शक्ति' सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक जमीन हासिल

कर रही है।

महात्मा गांधी का मानना था कि भारत का उद्धार देश की महिलाओं के ज्ञान पर निर्भर करता है। 23 दिसंबर, 1936 को अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में बोलते हुए गांधी जी ने कहा था, "जब एक महिला, जिसे हम अबला कहते हैं, सबला बन जाती है, तो वे सभी जो असहाय हैं, शक्तिशाली हो जाएंगे।"

इसी भावना को प्रतिध्वनित करते हुए मोदी जी ने 27 जनवरी, 2015 को मन की बात की चौथी कड़ी में कहा, "बालिकाओं को बचाना, बालिकाओं को शिक्षित करना हमारा सामाजिक कर्तव्य, सांस्कृतिक कर्तव्य और मानवीय जिम्मेदारी है। हमें इसका सम्मान करना चाहिए।"

मंत्रिपरिषद में 9 महिलाओं के साथ और पहली पूर्णकालिक महिला रक्षा मंत्री नियुक्त होने के बाद प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई वाली सरकार सक्रिय रूप से अपने कार्यों से महिलाओं के दायरे का विस्तार कर रही है। मुद्रा और स्टैंड-अप इंडिया जैसी सरकार की प्रमुख योजनाओं में 74 प्रतिशत से अधिक महिला लाभार्थी देखी गईं, जो न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुईं, बल्कि उनके लिए आजीविका के अवसर पैदा करने में सक्षम बनकर अधिक महिलाओं का समर्थन करने का अधिकार भी प्राप्त किया।

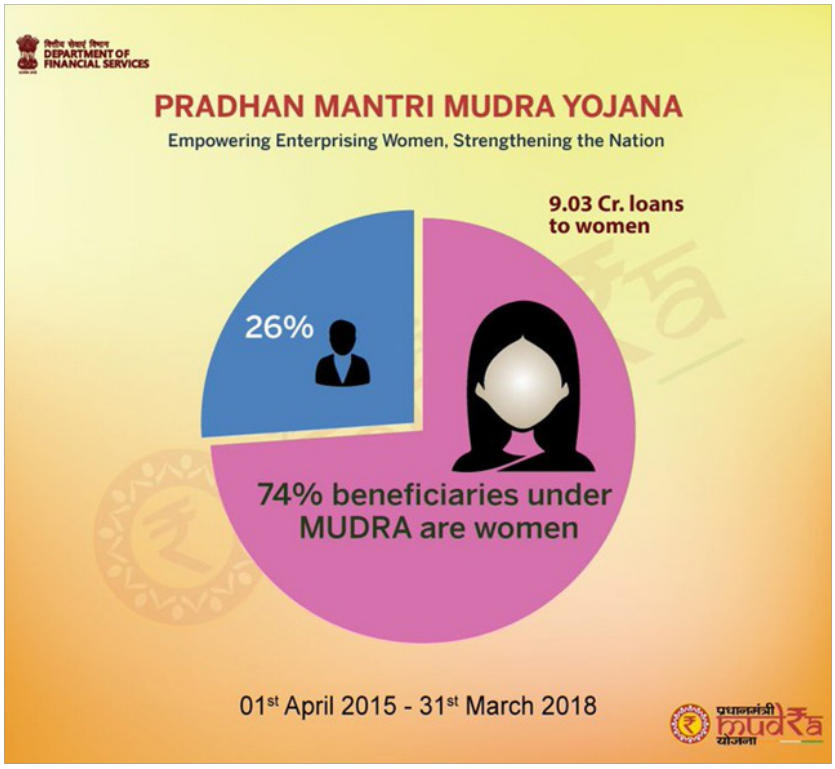

स्रोत: ट्विटर

सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि लड़कियों को सक्रिय रूप से शिक्षित किया जाए, क्योंकि महात्मा गांधी के अनुसार, शिक्षा अज्ञानता, अंधविश्वास और अन्य कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकार के प्रयासों के कारण माध्यमिक विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। मुख्य रूप से विद्यालयों में शौचालयों की उपलब्धता के कारण। शिक्षा के लिए एकीकृत जिला सूचना प्रणाली (यू-डीआईएसई) 2015-16 के अनुसार, माध्यमिक शिक्षा में लड़कियों का नामांकन 2013-14 में 76 प्रतिशत के मुकाबले बढ़कर 80.97 प्रतिशत हो गया है। यू-डीआईएसई की रिपोर्ट के अनुसार, 2021-22 में 12.29 करोड़ लड़कियों के प्राथमिक से उच्च माध्यमिक शिक्षा में नामांकन के साथ लिंग समानता में भी सुधार हुआ है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 8.19 लाख की वृद्धि है। इसके अलावा, उच्च शिक्षा में महिला नामांकन 2019-20 में 1.88 करोड़ से बढ़कर 2.01 करोड़ हो गया है। 2014-15 से लगभग 44 लाख (28 प्रतिशत) की वृद्धि भी हुई है।

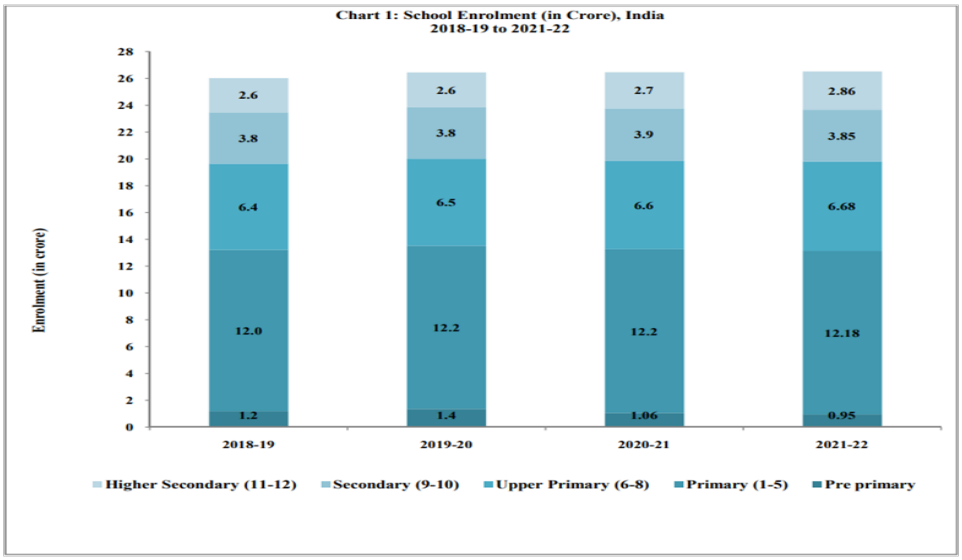

स्रोत: education.gov

रसोई गैस, सैनिटरी नैपकिन, शौचालय तक पहुंच और शिक्षा आदि जैसी बुनियादी सुविधाएं दिए जाने पर महिलाएं विशेष रूप से ग्रामीण भारत में अधिक सशक्त हो गई हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना (प्रधानमंत्रीएवाई) की 75 प्रतिशत लाभार्थी भी महिलाएं हैं। यह सामाजिक सुरक्षा का एक अभूतपूर्व स्तर है, जो महिलाओं को प्रदान किया गया है। यह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाले शासन मॉडल में किए गए निरंतर प्रयासों का परिणाम है। इसके अलावा, अधिक से अधिक महिलाओं को एक सहभागी शासन मॉडल में शामिल करने और सामाजिक जागरूकता बढ़ाकर और मन की बात में आवाहन करके बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रधानमंत्री के अथक और दृढ़ प्रयास भी इस दिशा में उपयोगी साबित हुए हैं।

प्रधानमंत्री ने लगातार मन की बात में लोगों से अपील की है कि वे महिलाओं के महत्व का एहसास कराएं। इसके परिणामस्वरूप जहां महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है, वहीं इससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण भी हुआ है, जो महात्मा गांधी के अनुसार राजनीतिक मुक्ति और स्वराज का मुख्य मानदंड है।

28 जून, 2015 को मन की बात के 9वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने खुलासा किया कि कैसे हाल ही में लॉन्च की गई बीमा योजनाएं - प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (प्रधानमंत्रीजेजेबीवाई), प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (प्रधानमंत्रीएसबीवाई) और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) में बड़ी पैमाने पर नामांकन देखा गया। एक महीने के समय में 10 करोड़ से अधिक लोगों ने नामांकन करवाया। हालांकि, प्रधानमंत्री ने इसे आगे ले जाने और इसे रक्षाबंधन त्योहार से जोड़ने की अपील की। लोगों से आग्रह किया कि वे हर महिला को उक्त योजनाओं का नामांकन उपहार में दें, चाहे वह उनकी मां या बहनें हों, या यहां तक कि लोगों के घरों में घरेलू नौकर भी हों। इसे जन-आंदोलन में बदलने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा,

"यह एक बहन के लिए उनके भाई की ओर से एक बड़ा उपहार हो सकता है। हम रक्षाबंधन की पूर्व संध्या को एक लक्ष्य के रूप में क्यों नहीं निर्धारित कर सकते हैं और 2 करोड़, 5 करोड़, 7 करोड़ और 10 करोड़ ... की संख्या में बहनों तक पहुंचने का प्रयास करें, ताकि वे इस योजना का लाभ उठा सकें। आइए, एक साथ आएं और इस संकल्प को पूरा करने की दिशा में मिलकर काम करने की कोशिश करें।"

26 जनवरी, 2016 को 21वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने कहा कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' मन की बात, भारत के सभी लोगों की हार्दिक इच्छा बन गई है, और अपने श्रोताओं को पहले महिला फाइटर पायलट बैच के भारतीय वायुसेना में शामिल किए जाने की जानकारी दी। भारतीय वायु सेना देश की महिलाओं को 'आसमान की तरह ऊंचे सपनों को पोषित करने' के लिए प्रेरित करती है, शक्तिशाली

Sex ratio at birth for children born in the last five years (female per 1,000 male)	
NFHS-4 (2015-16)	NFHS-5 (2019-21)
919	929

स्रोत: पीआईबी

महिलाओं के उदाहरण देकर और उन्हें बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी सरकारी योजनाओं से जोड़कर, मोदी जी ने इस तरह की पहलों में जन भागीदारी को बढ़ाने का प्रयास किया, साथ ही कन्या भ्रूण हत्या की घटनाओं में कमी लाने में भी प्रधानमंत्री का आह्वान कारगर रहा। महिला और बाल विकास मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में विषम लिंगानुपात घटने की प्रवृत्ति पर है और जन्म के समय लिंगानुपात में सुधार की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। 2014-2015 और 2021-2022 के बीच जन्म के समय लिंगानुपात में 36 अंकों का सुधार हुआ है।

31 जुलाई, 2016 को 22वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने भारत की गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य और गर्भावस्था से संबंधित दुखद मौतों के बारे में बात की। पिछले दशक में मातृ मृत्यु दर में गिरावट पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने 'प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान' के बारे में जानकारी दी, जिसके तहत प्रत्येक गर्भवती महिला को सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच मिलेगी। जबकि उन्होंने अपने श्रोताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए सूचित किया कि अधिक से अधिक महिलाएं अभियान का लाभ उठाने में सक्षम हों, उन्होंने भारत भर के स्त्री रोग विशेषज्ञों से वंचित माताओं की खातिर हर महीने की 9 तारीख को अपनी सेवाएं मुफ्त देने का भी आग्रह किया। मोदी जी ने बताया कि कैसे उन्हें कई लोगों द्वारा संदेशों के माध्यम से सूचित किया गया कि हजारों डॉक्टर पहले से ही मन की बात में उनके द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन कर रहे हैं, और वे चाहते हैं कि और अधिक डॉक्टर इस अभियान से जुड़ें। महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को एक जन-आंदोलन में बदलने में मन की बात ने कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, यह बताते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने 31 जुलाई, 2016 को 22वें मन की बात प्रसारण में कहा,

"पिछले कुछ दिनों में कई लोगों ने मुझे लिखा है। हजारों डॉक्टर हैं, जिन्होंने जो मैंने कहा है, उस पर अमल किया है। लेकिन भारत इतना विशाल देश है। इस अभियान से जुड़ने के लिए हमें लाखों डॉक्टरों की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि आप निश्चय ही ऐसा करोगे।"

महिला दिवस से कुछ दिन पहले 26 फरवरी, 2017 को मन की बात के 29वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने देश की बेटियों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि कैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान अब केवल एक सरकारी पहल नहीं है और एक जन-आंदोलन में बदल गया है। प्रधानमंत्री ने इसे 'सामाजिक सहानुभूति और सार्वजनिक शिक्षा का अभियान' कहा। मोदी जी ने अपने श्रोताओं को समझाया कि कैसे बेटी का जन्म, जिसे देश के विभिन्न हिस्सों में बोझ माना जाता था, अब तेजी से उत्सव का कारण बनता जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा, "एक तरह से हमारी बेटियों के प्रति सकारात्मक मानसिकता सामाजिक स्वीकृति की ओर ले जा रही है।"

लोगों को प्रेरित करने और उन्हें बालिकाओं के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रधानमंत्री ने भारत के विभिन्न राज्यों से कई उदाहरण सूचीबद्ध किए, जो बालिकाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित करते हैं :

i) तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले में बाल विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। जिला प्रशासन ने 'सुकन्या समृद्धि योजना' के तहत 50,000 से अधिक बेटियों के लिए बैंक खाते खोले हैं।

ii) कठुआ जिले, जम्मू-कश्मीर में सभी विभाग 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना से जुड़े हुए हैं। साथ ही जिला प्रशासन द्वारा अनाथ बच्चियों को गोद लेने और उन्हें शिक्षित करने का बीड़ा उठाया गया।

iii) मध्य प्रदेश में हर घर और गांव को कवर करते हुए लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए 'हर घर दस्तक' कार्यक्रम।

iv) राजस्थान में उन लड़कियों को स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए अभियान, जो पढ़ाई छोड़ चुकी थीं, 'अपना बच्चा, अपना विद्यालय' कार्यक्रम चलाया गया।

मोदी जी ने आगे कहा, "यह पूरा आंदोलन जन-आंदोलन बन गया है। नई कल्पना और नई अवधारणाएं इससे जुड़ी हुई हैं। इस आंदोलन को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार ढाला गया है। मेरा मानना है कि यह एक स्वस्थ संकेत है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समझने में आसान, शक्तिशाली और प्रेरक संदेशों के साथ सीधे नागरिकों पर जिम्मेदारी डालते हुए गिरते महिला लिंग अनुपात पर अधिक जोर दिया है।

हरियाणा के जींद जिले के बीबीपुर गांव में सुनील जागलान द्वारा 'सेल्फी विद डॉटर' अभियान की शुरुआत की गई। इस अभियान को प्रधानमंत्री द्वारा तुरंत उठाया गया और मन की बात के 24 सितंबर, 2017 को 36 वें संस्करण में प्रचारित किया गया, जिससे यह न केवल भारत, बल्कि दुनियाभर में प्रसिद्ध हो गया। प्रधानमंत्री द्वारा प्रशंसा अर्जित करने के बाद इसे हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर द्वारा बढ़ाया गया था। जिसके परिणामस्वरूप अभियान का सकारात्मक स्वागत हुआ और राज्य में लिंगानुपात में सुधार हुआ। 28 जनवरी, 2018 को मन की बात की 40वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने प्रकाश त्रिपाठी नाम के एक व्यक्ति का एक पत्र पढ़ा और कल्पना चावला की कहानी को याद किया, जिसमें दुनियाभर में और विशेष रूप से भारत में युवा महिलाओं पर उनके प्रेरक प्रभाव को ध्यान में रखा गया था। नारी शक्ति पर टिप्पणी करते हुए, जिसके लिए अनुकरणीय महिलाओं को 'नारी शक्ति पुरस्कार' भी दिया जाता है, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "... नारी शक्ति, महिलाओं की शक्ति के लिए कोई ऊपरी सीमा नहीं है... यह खुशी की बात है कि भारत में महिलाएं सभी क्षेत्रों में तेजी से प्रगति कर रही हैं, जिससे देश का गौरव बढ़ रहा है।" मोदी जी ने प्राचीन हिंदू पाठ, स्कंद पुराण का भी उल्लेख किया, यह उजागर करने के लिए कि कैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की जड़ें प्राचीन भारतीय संस्कृति में हैं। उन्होंने श्लोक का उल्लेख किया और कहा,

"दशपुत्रसमा कन्या दशपुत्रान्प्रवर्धयन्।

यत्फलं लभते मर्त्यस्तल्लभ्यं कन्यैकया॥

यानी एक बेटी दस बेटों के बराबर होती है... और इसीलिए हमारे समाज में महिलाओं को 'शक्ति' का दर्जा दिया गया है। यह नारी शक्ति पूरे समाज को, पूरे परिवार को एकता की धुरी पर एक साथ बांधती है। चाहे वह वैदिक काल के विदुषियों लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी का पांडित्य हो। भक्ति मीराबाई हो या महादेवी की विद्या हो या अहिल्याबाई होल्कर का शासन हो या रानी लक्ष्मीबाई का शौर्य, नारी शक्ति ने हमेशा हमें प्रेरित किया है। उन्होंने हमेशा देश को गौरवान्वित किया है। मोदी जी ने प्रकाश त्रिपाठी के पत्र का हवाला देते हुए समकालीन भारत से 'नारी शक्ति' के और उदाहरण साझा किए, जिसमें तत्कालीन रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण का सुखोई-30 लड़ाकू विमान में उड़ान भरना, आईएनएसवी पर सवार सभी महिला चालक दल का दुनिया का चक्कर लगाना शामिल है। वर्तिका जोशी की कमान में तारिणी, एयर इंडिया बोइंग जेट क्षमता वाजपेयी और कई अन्य लोगों के नेतृत्व वाली एक महिला चालक होगी। भारत में महिलाओं की नेतृत्वकारी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मोदी जी ने देश की बेटियों, बहनों, माताओं में महत्वाकांक्षा, शक्ति और प्रेरणा जगाने की कोशिश की।

आईएनएसवी तारिणी की महिला क्रू के साथ प्रधानमंत्री मोदी

मन की बात के जरिए प्रधानमंत्री ने कई मकसद सुलझाए हैं। हालांकि यह स्पष्ट है कि कैसे उन्होंने महिलाओं को महत्वाकांक्षी और सशक्त होने के लिए प्रेरित किया है और पुरुषों को महिलाओं की क्षमता और सामाजिक योगदान को स्वीकार करने के लिए उन्होंने देश में प्रचलित महत्वपूर्ण मुद्दों से संबंधित संवाद में मंच का भी उपयोग किया है। 31 दिसंबर, 2017 को 39वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने संबोधित किया कि कैसे भारत ने कई अन्य इस्लामिक देशों के विपरीत अपनी मुस्लिम महिलाओं को समग्र न्याय प्रदान करने के लिए सुधारात्मक उपाय किए। यह 'महरम' के मुद्दे के संबंध में था, जिसमें मुस्लिम महिलाओं को हज करने के लिए एक पुरुष अभिभावक की आवश्यकता होती है। मोदी जी ने अपने श्रोताओं को बताया कि कैसे उन्होंने अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय को यह सुनिश्चित करने का सुझाव दिया था कि सभी महिलाओं को अकेले और लॉटरी प्रणाली के बिना यात्रा करने की अनुमति दी

जाए, जिससे तीर्थ यात्रा करने वाली महिलाओं की संख्या सीमित न हो। प्रधानमंत्री ने कहा, "... मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत की प्रगति की यात्रा नारी-शक्ति के कारण और उनकी प्रतिभा के दम पर संभव हो पाई है... हमारा निरंतर प्रयास होना चाहिए कि हमारी महिलाओं को भी बराबरी का हक मिले। पुरुषों की तरह अधिकार और समान अवसर मिले, ताकि वे एक साथ प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकें।" 26 अगस्त, 2018 को कार्यक्रम के 47वें संस्करण में प्रधानमंत्री द्वारा मुस्लिम महिलाओं को फिर से संबोधित किया गया, जहां उन्होंने तीन तलाक विधेयक के बारे में बात की, जिसे हाल ही में लोकसभा ने पारित किया था, और राष्ट्र की मुस्लिम महिलाओं को आश्वासन दिया कि पूरा देश इसके साथ खड़ा है, उन्हें सामाजिक न्याय प्रदान करने के लिए।

प्रधानमंत्री मोदी ने महिलाओं को उनकी वास्तविक क्षमता का एहसास कराने में मदद करने के लिए अथक दृढ़ संकल्प दिखाया है। इसे हर किसी का मौलिक कर्तव्य बताया है कि जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो, चाहे वह सामाजिक हो या आर्थिक। 26 अगस्त, 2018 को मन की बात के 47वें संस्करण में 'न्यू इंडिया' का विजन दिखाते हुए, जिसकी महात्मा गांधी के 'पूर्ण स्वराज' से समानता है, प्रधानमंत्री ने कहा, "... 'न्यू इंडिया' का हमारा सपना वह है, जहां महिलाएं मजबूत हों, सशक्त हों और देश के विकास में बराबर के भागीदार हों।" मन की बात मंच ने सहभागी शासन को बढ़ाया है और राष्ट्र की प्रगति के प्रति अपने कर्तव्यों को महसूस करने वाले लोगों के साथ स्वराज प्राप्त करने की प्रक्रिया को गति दी है। ठीक इसी बात को प्रदर्शित करते हुए प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि उन्हें एक सज्जन व्यक्ति का पत्र मिला था, जिसमें देश की भलाई के लिए लंबे जीवन की अपनी सीख का उपयोग करते हुए 100 वर्ष की आयु पूरी करने वाली भारतीय महिलाओं का सम्मान करने का सुझाव दिया गया था।

मोदी जी ने अक्सर इस बात पर प्रकाश डाला है कि कैसे भारत में बेटियों को 'लक्ष्मी' माना जाता है, जो सौभाग्य और समृद्धि लाती हैं। 29 सितंबर, 2019 को मन की बात की 57वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने अपने श्रोताओं से दिवाली पर भारत की इस देवी लक्ष्मी का सम्मान करने के लिए एक कार्यक्रम आयोजित करने की अपील की, खासकर उन लोगों से जो अपनी मेहनत, समर्पण और प्रतिभा से देश का नाम रोशन करते हैं। इसके लिए प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की कि वे सोशल मीडिया पर #bharatkilaxmi हैशटैग का इस्तेमाल करके 'सेल्फी विद डॉटर' अभियान की तरह ही एक मेगा-अभियान शुरू करें। उन्होंने कहा, "भारत की लक्ष्मी का प्रचार करने का अर्थ है देश और देशवासियों की समृद्धि के मार्ग को मजबूत करना। इन बेटियों की उपलब्धियों के बारे में सोशल मीडिया में ज्यादा से ज्यादा शेयर करें और हैशटैग #bharatkilaxmi का इस्तेमाल करें। अभियान में मशहूर हस्तियों और खेल जगत की हस्तियों के साथ अभियान को व्यापक सफलता मिली और सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री के संदेश को प्रसारित किया गया।

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपने श्रोताओं से 'भारत की लक्ष्मी' का सम्मान करने के लिए एक अभियान शुरू करने की अपील ने लोगों की जागरूकता और भागीदारी को एक और तरीके से बढ़ाया, जो 27 अक्टूबर, 2019 को मन की बात के 58वें संस्करण में सामने आया। मोदी जी ने बताया कि कैसे उनकी अपील के कारण अनगिनत प्रेरणादायक कहानियों के साथ सोशल मीडिया की बाढ़ आ गई। मोदी जी द्वारा साझा की गई कुछ कहानियां नीचे सूचीबद्ध हैं :

i) वारंगल के कोडिपाका रमेश ने पिता के निधन के बावजूद अपने पांच बेटों और एक बेटी के पालन-पोषण के लिए अपनी मां को सच्चे अर्थों में भारत की लक्ष्मी कहा।

ii) गीतिका स्वामी ने बस कंडक्टर की बेटी मेजर खुशबू कंवर को असम राइफल्स की महिला टुकड़ी का नेतृत्व करने के लिए भारत की लक्ष्मी कहा।

iii) कविता तिवारी ने पेंटिंग में उत्कृष्ट होने और सीएलएटी परीक्षा में अच्छी रैंक हासिल करने के लिए अपनी बेटी को अपनी ताकत और भारत की लक्ष्मी कहा।

iv) मेघा जैन ने अपनी विनम्रता और करुणा का परिचय देते हुए ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को सालों तक मुफ्त में पानी पिलाने वाली 92 वर्षीय महिला को भारत की लक्ष्मी कहा।

मोदी जी ने अपने श्रोताओं से कहा, "ऐसी कई कहानियां लोगों ने साझा की हैं। आप अवश्य पढ़ें, प्रेरणा लें और

ऐसा ही कुछ अपने आस-पास के लोगों के साथ साझा करें। मैं भारत की इन सभी लक्ष्मीओं को सादर प्रणाम करता हूं।" इस तरह प्रधानमंत्री ने मन की बात के मंच से महिला सशक्तिकरण को एक जन-आंदोलन में बदल दिया।

24 अक्टूबर, 2021 को मन की बात के 82वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने साझा किया कि कैसे भारत की महिलाओं ने संयुक्त राष्ट्र को अधिक लिंग-समावेशी संगठन बनाने में मदद की है। उदाहरण के लिए, यह श्रीमती हंसा मेहता, जिन्होंने मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा में "ऑल मेन आर क्रिएटेड इक्वल" को "ऑल ह्यूमन बीइंग क्रिएटेड इक्वल" में बदल दिया था। श्रीमती लक्ष्मी मेनन ने लैंगिक समानता पर अपने विचार मजबूती से रखे थे। विजया लक्ष्मी पंडित 1953 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनी थीं। मन की बात पर संवाद के माध्यम से प्रधानमंत्री ने अपने कर्तव्यों से ऊपर और परे जाकर यह सुनिश्चित किया कि भारत में महिलाएं प्रेरित और सशक्त हों।

श्री नरेंद्र मोदी ने 27 फरवरी, 2022 को 86वें एपिसोड में बताया कि कैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के मन की बात पर प्रचार के परिणामस्वरूप देश में लिंगानुपात में सुधार हुआ है और स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या में सुधार हुआ है। प्रधानमंत्री ने कहा, ''इतने कम समय में ये सारे बदलाव कैसे हो रहे हैं? यह बदलाव इसलिए आ रहा है, क्योंकि अब महिलाएं खुद नेतृत्व कर रही हैं और हमारे देश में प्रगतिशील प्रयास चल रहे हैं।"

26 मार्च, 2023 को मन की बात के 99वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने राजनीति, विज्ञान और कला सहित समाज के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को पहचानने और समर्थन करने के महत्व पर जोर दिया और नवरात्रि उत्सव के दौरान उनकी ताकत और शक्ति का जश्न मनाने का आह्वान किया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला, जैसे कि वंदे भारत एक्सप्रेस की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव, भारत की अंडर -19 महिला क्रिकेट टीम की सफलता, 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' वृत्तचित्र के लिए ऑस्कर जीताने वाली गुनीत मोंगा और निर्देशक कार्तिकी गोंजाल्विस, केमिस्ट्री और केमिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आईयूपीएसी से विशेष पुरस्कार प्राप्त करने वाली भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर की वैज्ञानिक सिस्टर ज्योतिर्मयी मोहंती, दो महिला विधायक- जो 75 सालों में पहली बार जीतकर नगालैंड विधानसभा पहुंची हैं। उनमें से एक को नागालैंड सरकार में मंत्री भी बनाया गया है, यानी पहली बार राज्य की जनता को कोई महिला मंत्री भी मिली है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि कैसे हमारी बहादुर बेटियां विनाशकारी भूकंप के बाद तुर्की के लोगों की मदद के लिए गईं- जो एनडीआरएफ की टुकड़ी का हिस्सा थीं और आज पूरी दुनिया उनके कौशल और साहस की प्रशंसा कर रही है। उन्होंने आगे संयुक्त राष्ट्र मिशन के तहत पीसकीपिंग फोर्स में केवल महिला प्लाटून की तैनाती से सशस्त्र बलों में महिलाओं के योगदान पर प्रकाश डाला, ग्रुप कैप्टन शालिजा धामी जो कॉम्बैट यूनिट में कमांड नियुक्ति पाने वाली पहली महिला वायु सेना अधिकारी बनीं। इसके अलावा भारतीय सेना की बहादुर कैप्टन शिवा चौहान जो तीन महीने के लिए सियाचिन में तैनात होने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं, जहां तापमान शून्य से साठ (-60) डिग्री तक गिर जाता है।

योग

स्वराज का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू 'आध्यात्मिक स्वराज' है, जो महात्मा गांधी के अनुसार, जुनून, मन, जीवन और आत्मा के बीच सकारात्मक बातचीत का परिणाम है। इसे प्रधानमंत्री द्वारा एक नया आयाम दिया गया है। श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'योग' के माध्यम से, जिसका अर्थ है ईश्वर की सार्वभौमिक भावना के साथ व्यक्तिगत भावना का मिलन। यह प्रथाओं का एक संयोजन है, जो सद्भाव बनाने के लिए

योग करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी । स्रोत: न्यूज18

दुनिया के साथ जुड़ने के तरीके को परिभाषित करता है। योग के जरिए स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने के साथ प्रधानमंत्री द्वारा एक जन-आंदोलन, एक 'वेलनेस क्रांति' में बदल दिया गया है, न केवल केंद्र सरकार की विभिन्न पहलों के माध्यम से, बल्कि मन की बात के मंच के माध्यम से भी। प्रधानमंत्री ने उद्धृत किया, "योग स्वास्थ्य और कल्याण के लिए सार्वभौमिक आकांक्षा का प्रतीक है। यह जीरो बजट में स्वास्थ्य आश्वासन है।" देश के स्वास्थ्य पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हुए मोदी जी ने देश के लोगों को योग के लाभों और 'फिट इंडिया' जैसी स्वास्थ्य से संबंधित अन्य पहलों के बारे में जागरूक किया है। इससे न केवल भारत, बल्कि अन्य देशों के नागरिकों की खराब जीवनशैली से संबंधित कई स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मदद मिली है। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री ने मन की बात के माध्यम से आम जनता को फिटनेस (शारीरिक स्वास्थ्य) और वेलनेस (शारीरिक और मानसिक कल्याण) के बीच के अंतर के बारे में शिक्षित किया है, जिसके लिए उन्होंने योग को सबसे अच्छा मार्ग बताया है।

जून, 2016 में प्रधानमंत्री ने सभी योग गुरुओं और संस्थानों से योग के माध्यम से मधुमेह को हराने के लिए पूरे वर्ष एक अभियान चलाने का आग्रह करने के लिए मन की बात मंच का उपयोग किया। मोदी जी ने 26, जून 2016 को कार्यक्रम की 21वीं कड़ी में अपने श्रोताओं से ट्विटर पर #YogaFightsDiabetes का उपयोग करने और सोशल मीडिया या नरेंद्र मोदी ऐप पर व्यक्तिगत अनुभव साझा करने का आग्रह किया, ताकि मधुमेह की चुनौती से निपटने के तरीके पर सार्वजनिक चर्चा हो सके।

योग ने पूरी दुनिया को एक साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम' (विश्व एक परिवार है) की प्राप्ति की दिशा में भारत का योगदान है। 28 मई, 2017 मन की बात के 32वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने यही प्रतिध्वनित किया, जब उन्होंने कहा, "हमने योग के माध्यम से पूरी दुनिया को सफलतापूर्वक जोड़ा है। जैसे योग शरीर, मन, हृदय और आत्मा को जोड़ता है, उसी तरह यह अब दुनिया को जोड़ रहा है।" इसके बाद प्रधानमंत्री ने अपने श्रोताओं को बताया कि कैसे अंधाधुंध दवाओं के सेवन के समय में योग तनाव मुक्त जीवन सुनिश्चित करने और स्वास्थ्य की गारंटी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जन-आंदोलन में अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री ने सभी सरकारों और विश्व नेताओं को योग दिवस के बारे में पत्र भी लिखा।

प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक संवाद और भागीदारी के लिए सफलतापूर्वक एक मंच बनाया है, क्योंकि कई नागरिकों ने प्रधानमंत्री को लिखा है या विभिन्न मुद्दों के बारे में सुझाव भेजे हैं। 28 मई, 2017 को 32वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने एक सज्जन को यह सुझाव देने का श्रेय दिया कि सभी परिवारों की तीन पीढ़ियों को इस आंदोलन में भाग लेना चाहिए और अपनी तस्वीरें सोशल मीडिया पर अपलोड करनी चाहिए। प्रधानमंत्री के इस अनुरोध की प्रतिक्रिया जबरदस्त थी, क्योंकि कई परिवारों ने सोशल मीडिया पर तस्वीरें अपलोड कीं, जिनमें कुछ परिवारों की चार पीढ़ियों, जिनमें 2 साल के बच्चे से लेकर 90 साल के बच्चे शामिल थे, ने आंदोलन में भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा, "यह एक तरह से निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर एक आंदोलन है। मैं आप सभी को इससे जुड़ने के लिए आमंत्रित करता हूं।"

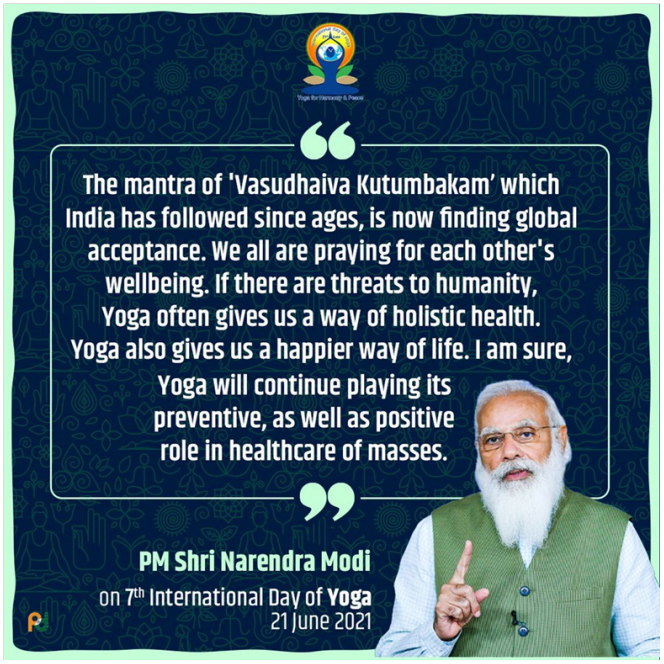

मन की बात सहित सभी मंचों पर प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों के परिणामस्वरूप योग एक विश्वव्यापी क्रांति बन गया है। चीन की महान दीवार से लेकर पेरू के माचू पिच्चू तक, फ्रांस के एफिल टॉवर से लेकर संयुक्त अरब अमीरात के अबू धाबी तक, अफगानिस्तान के फ्रेंडशिप डैम से सिंगापुर तक - दुनियाभर में योग का अभ्यास किया गया है। यहां

तक कि संयुक्त राष्ट्र के कर्मचारियों और राजनयिकों ने भी आंदोलन में भाग लिया। संयुक्त राष्ट्र ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और यूनेस्को द्वारा भारतीय योग को मानव जाति की शाश्वत विरासत के रूप में मान्यता देने के लिए समर्पित दस डाक टिकट जारी किए। 25 जून, 2017 को मन की बात के 33वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने कहा,

"योग पूरी दुनिया में व्याप्त है। समुद्र के किनारे से लेकर पहाड़ों तक लोगों ने योग के साथ सूर्य की पहली किरणों का स्वागत किया। किस भारतीय को इस पर गर्व नहीं होगा! ऐसा नहीं है कि पहले योग नहीं था, लेकिन अब योग के धागों ने सबको एकसूत्र में बांध रखा है और दुनिया को जोड़ने का जरिया बन गया है।"

भारत में योग ने कई विश्व रिकॉर्ड बनाए हैं। उदाहरण के लिए, अहमदाबाद में लगभग 55,000 लोगों ने 2017 में एक साथ योग किया, जिसने एक विश्व रिकॉर्ड बनाया। 25 जून, 2017 को प्रसारित मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री द्वारा पूरे देश को इसकी जानकारी दी गई, ताकि उनमें योग द्वारा प्रचारित मूल्यों को शामिल किया जा सके उन्हें इस प्राचीन विरासत का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया जा सके, साथ ही साथ सकारात्मकता और कल्याण का प्रसार किया जा सके। मन की बात के माध्यम से ही योग आंदोलन को इतनी सफलता मिली है। 25 जून, 2017 को मन की बात के 33वें एपिसोड में मोदी जी ने कहा, "मैंने आपसे परिवार की तीन पीढ़ियों की एक साथ योग करने वाली तस्वीरें साझा करने के लिए कहा था मुझे बहुत सारी तस्वीरें मिलीं, जिनमें से चयनित तस्वीरों को नरेंद्रमोदी ऐप पर संकलित और अपलोड किया गया है। दुनियाभर में जिस तरह से योग की बात की जा रही है, उसका एक महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि आज का स्वास्थ्य के प्रति जागरूक समाज अब फिटनेस से वेलनेस की ओर कदम बढ़ा रहा है और उन्होंने महसूस किया है कि फिटनेस बेशक महत्वपूर्ण है, लेकिन सच्चे स्वास्थ्य के लिए योग सबसे अच्छा तरीका है।"

पूरे देश के ठोस प्रयासों और प्रतिबद्धता के कारण योग एक जन-आंदोलन बन गया है। फरवरी, 2018 में योग दिवस से कुछ महीने पहले बोलते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि योग को सभी उम्र और सभी लिंगों के लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने की जरूरत है। अपना काम करते हुए प्रधानमंत्री ने योग अभ्यास सत्रों के अपने 3-डी एनिमेटेड वीडियो के बारे में जनता को सूचित किया, जो योगियों को विभिन्न आसन सीखने में मदद करेगा। स्वास्थ्य और तंदुरूस्ती को आगे बढ़ाते हुए मोदी जी ने सस्ती और सुलभ जन औषधि केंद्रों के बारे में बात की और मन की बात को एक सूचना आउटरीच मंच के रूप में इस्तेमाल किया, लोगों से यह जानकारी जरूरतमंद लोगों को प्रदान करने की अपील की। देश को तपेदिक मुक्त करने के कार्य को एक और जन-आंदोलन में बदलते हुए प्रधानमंत्री ने 25 फरवरी, 2018 को 41वीं कड़ी में कहा,

"2025 तक देश को टीबी मुक्त बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह एक बहुत बड़ा कार्य है। जन जागरूकता के लिए आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है। हम सभी को टीबी मुक्त बनने के लिए एकजुट प्रयास करने की आवश्यकता होगी।"

25 मार्च, 2018 को मन की बात के 42वें एपिसोड में देश के युवाओं को 'फिट इंडिया का आंदोलन शुरू करने के लिए एक साथ आने' के लिए आमंत्रित किया। 29 अप्रैल, 2018 को अगले संस्करण में उन्होंने अपनी अपील पर अमल किया और उल्लेख किया कि कैसे उनका अनुरोध एक जन-आंदोलन में बदल गया था। लोग उन्हें पत्र भेज रहे थे और सोशल मीडिया पर फिटनेस-मंत्र और कहानियां साझा कर रहे थे। प्रधानमंत्री द्वारा कहानियों को साझा किया गया कि श्री शशिकांत भोंसले, रूमा देवनाथ और यहां तक कि मशहूर हस्तियों और अक्षय कुमार जैसे फिटनेस के प्रति उत्साही योग के साथ फिटनेस के विचार को आगे जोड़ते हैं।

मोदी जी ने समझाया कि कैसे योग जाति, धर्म, क्षेत्र, रंग या लिंग की परवाह किए बिना लोगों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसे राष्ट्र को गौरवान्वित और गर्व महसूस करने का कारण बताया। इसके बाद उन्होंने कुछ और प्रेरक मामले सूचीबद्ध किए, जहां भारतीयों ने नए विश्व रिकॉर्ड बनाए। उदाहरण के लिए, लगभग 750 दिव्यांग योग करने के लिए एक स्थान पर एकत्रित हुए और विश्व रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने 24 जनवरी, 2018 को मन की बात के 45वें एपिसोड में इस मुद्दे को समेटते हुए कहा,

"मेरा मानना है कि आज कल्याण की अवधारणा एक क्रांति ला रही है। मुझे आशा है कि योग के माध्यम से

कल्याण के अभियान को और गति मिलेगी। अधिक से अधिक लोग इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए आगे आएंगे।"

30 जून, 2019 को मन की बात के 54वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने लोगों को उन लोगों और संस्थानों के बारे में बताया, जिन्होंने योग के प्रचार और विकास में उत्कृष्ट योगदान दिया। जैसे जापान योग निकेतन, जो पूरे जापान में कई संस्थान और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाता है, इटली की सुश्री एंटोनियेटा रोज़ी, जिन्होंने पूरे यूरोप में योग का प्रचार करने के लिए सर्व योग इंटरनेशनल की शुरुआत की, बिहार योग विद्यालय, स्वामी राजर्षि मुनि, जिन्होंने लकुलिश योग विश्वविद्यालय की स्थापना की।

देश भर से 750 दिव्यांग लोगों ने 'सबसे बड़ी साइलेंट योगा क्लास' का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया। स्रोत: ट्विटर @GujaratCMO

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है, "योग दिवस अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण की तलाश में सबसे बड़े जन-आंदोलनों में से एक बन गया है।" मन की बात ने इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने यह भी सुनिश्चित किया है कि मन की बात के करोड़ों श्रोता एक स्वस्थ और रोग मुक्त जीवन शैली विकसित करें। इसके लिए मोदी जी ने मन की बात के कई एपिसोड में महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं और कुपोषण (56वां संस्करण), टीबी और मधुमेह आदि को खत्म करने के लिए योग और फिट इंडिया आंदोलनों का उपयोग किया है, उन्हें अधिकतम लोगों की भागीदारी के साथ जन-आंदोलनों में बदल दिया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री ने देश को सच्चे अर्थों में स्वराज प्राप्त करने में मदद करने के लिए मन की बात मंच का सफलतापूर्वक उपयोग किया है।

पर्यावरण संरक्षण

"पृथ्वी के पास हमारी जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं।"

– एम.के. गांधी

"हम एक ऐसी संस्कृति का हिस्सा बनकर धन्य हैं, जहां पर्यावरण के साथ पूर्ण सद्भाव में रहना हमारे लोकाचार का केंद्र है। आइए, यह सुनिश्चित करें कि हमारे दैनिक जीवन में उठाया जाने वाला सबसे छोटा कदम भी प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में एक प्रयास हो।"

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री, महात्मा गांधी की तरह एक पर्यावरणविद साबित हुए हैं। दोनों दूरदर्शियों ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझा है और प्रकृति को हमारे जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए दावा किया है कि एक बेहतर ग्रह का पोषण

करना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। चूंकि स्वराज में स्वयं को जीतना और स्वयं को रोकना शामिल है, प्रकृति के साथ शून्य लोभ के साथ सह-अस्तित्व इसका एक महत्वपूर्ण पहलू बन जाता है। यह वह मूल्य है, जो श्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के साथ-साथ सरकार की कई पहलों के माध्यम से देश को समझाने का प्रयास किया है।

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, सामूहिक वृक्षारोपण अभियान से लेकर समग्र पर्यावरणवाद तक विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर बात की है। जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग की घटना और उनसे उभरने वाली असंख्य चिंताओं को देखते हुए, जो मानवता को खतरे में डालती हैं, प्रधानमंत्री की एक प्रमुख चिंता आम जनता के बीच पारिस्थितिक स्थिरता के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना और उन्हें भारत की प्राचीन संस्कृति की याद दिलाना है, जो पर्यावरण के अनुकूल मूल्यों और जीवन शैली की वकालत करता है। उदाहरण के लिए, मन की बात के 9वें एपिसोड में जल संरक्षण के बारे में बात करते हुए मोदी जी ने याद किया कि कैसे भारत के कई हिस्सों में सदियों पुराने भूमिगत जल टैंक हैं, जो पीने योग्य वर्षा जल को संग्रहित करते हैं। लोगों को इस तरह के पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ जीवन शैली में शामिल होने का आह्वान करते हुए मोदी जी ने कहा, "यह वास्तव में एक जन-आंदोलन बनना चाहिए। प्रत्येक गांव में वर्षा जल संचयन की सुविधा होनी चाहिए।" इसके बाद प्रधानमंत्री द्वारा युवाओं और सामाजिक संगठनों द्वारा बड़े पैमाने पर पौधारोपण अभियान शुरू करने की एक और अपील की गई, यह याद करते हुए कि कैसे उन्होंने देश के किसानों को हमेशा अपने खेतों की सीमाओं पर बैरिकेड्स लगाने के बजाय पेड़ लगाने के लिए कहा है। पेड़ किसी की लंबे समय में सबसे बड़ी संपत्ति बन सकते हैं।

मानवता को खतरे में डालने वाली दुर्दशा के बारे में जनता को जागरूक करने के लिए मोदी जी ने मन की बात में जलवायु परिवर्तन पर चर्चा की है। ग्लोबल वार्मिंग से पूर्व-औद्योगिक स्तरों की तुलना में वैश्विक तापमान में 1.5-2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि का खतरा है, जो ग्लेशियरों को पिघलाने और समुद्र के स्तर को बढ़ाने में सक्षम है, जो द्वीप देशों और तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लाखों लोगों के लिए खतरा बन सकता है तथा इसके कारण विभिन्न वनस्पतियों और जीवों के विलुप्त होने का खतरा भी बना हुआ है। कार्यक्रम के 14वें एपिसोड में उन्होंने कहा, ''धरती का तापमान अब और नहीं बढ़ना चाहिए। यह सबकी चिंता भी है और जिम्मेदारी भी। और बढ़ते तापमान से बचने के लिए पहला कदम है- ऊर्जा संरक्षण। प्रधानमंत्री ने नूरजहां नाम की कानपुर की एक महिला का भी उदाहरण दिया, जिसने प्रति घर प्रति दिन 3 रुपये की लागत से 500 घरों को रोशन करने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग किया था। महिला के प्रयासों की सराहना करते हुए मोदी जी ने पूरे देश को नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करने के लिए अभिनव तरीकों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करने की मांग की, जिनमें से सौर ऊर्जा सबसे प्रचुर स्रोत है।

यूपी में सामूहिक वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत करते प्रधानमंत्री मोदी

पानी की कमी देश के किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती है। भारत के 1.3 अरब लोगों के पास दुनिया के लगभग 4 प्रतिशत जल संसाधनों तक ही पहुंच है और देश की लगभग आधी आबादी को अत्यधिक जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। इसने प्रधानमंत्री को मामलों को अपने हाथ में लेने और लोगों को जल संरक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों और जीवन शैली के बारे में जागरूक करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने 27 मार्च, 2016 को मन की बात के 18वें संस्करण में इस मुद्दे को छुआ और लोगों से देश के तालाबों को कचरे से मुक्त करके उन्हें बहाल करने की अपील की। इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों से अधिक से अधिक संख्या में सरकार की योजनाओं से जुड़ने का आग्रह किया, ताकि सहभागी शासन का एक मॉडल तैयार किया जा सके।

24 अप्रैल, 2016 को मन की बात के 19वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने अपने श्रोताओं को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले की हिवरेबाजार ग्राम पंचायत के किसानों के बारे में बताया। किसानों ने फसल के पैटर्न को बदलकर और गन्ने और केले जैसी महत्वपूर्ण मात्रा में पानी की मांग करने वाली फसलों को छोड़कर पानी की कमी के मुद्दे का समाधान किया था। लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए मोदी जी ने मध्य प्रदेश के देवास जिले से एक और उदाहरण साझा किया, जहां गोरवा ग्राम पंचायत ने 27 तालाब बनाने, भूजल स्तर बढ़ाने और कृषि उत्पादन को 20 प्रतिशत तक बढ़ाने का अभियान चलाया। प्रधानमंत्री मोदी ने लोगों को हर गांव में पानी बचाने के लिए एक अभियान शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री की प्रतिभा ऐसी है कि उन्होंने अपने करोड़ों श्रोताओं को अपनाने के लिए व्यावहारिक विचार देने के लिए मंच का उपयोग किया है। सामूहिक रूप से और दृढ़ संकल्प के साथ काम करना, इसके महत्व पर जोर दिया है।

मन की बात ने अनिवार्य रूप से दो-तरफ़ा संवाद के एक मंच के रूप में काम किया है, जो प्रधानमंत्री को लोगों को संवेदनशील बनाने, सामाजिक बुद्धि को बढ़ाने और सहभागी शासन को प्रोत्साहित करने की अनुमति देता है। मंच ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों के लिए प्रधानमंत्री को पत्र लिखने और संदेश भेजने के लिए एक स्थान के रूप में भी काम किया है। चाहे वह बातचीत, प्रश्न या यहां तक कि शिकायतों के रूप में हो। बाद में प्रधानमंत्री द्वारा बढ़ाया जाता है, जनता के लिए। इसका मकसद एक स्वस्थ सार्वजनिक प्रवचन की प्रक्रिया में पूरे देश को एक साथ जोड़ना।

24 अप्रैल, 2016 को 19वें एपिसोड में एक पत्र का जवाब देते हुए, जिसमें एक सज्जन ने प्रधानमंत्री मोदी से गंगा सफाई अभियान की स्थिति पूछी थी, प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि सरकार इस दिशा में समर्पित है और हर दिन लगभग 3 से 11 टन कचरा हटाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा, "लोगों की सामूहिक भागीदारी के बिना गंगा को साफ करने की परियोजना सफल नहीं हो सकती। हम सभी को स्वच्छता हासिल करने के लिए बदलाव का एजेंट बनना होगा।" मन की बात में प्रधानमंत्री जी के अथक प्रयासों से ही देश की 'जन शक्ति' मजबूत हुई है और उभरी है। 2022 में 'नमामि गंगे' स्वयंसेवकों के एक समूह ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में दशाश्वमेध घाट पर एक नदी सफाई अभियान का आयोजन किया। एक स्वयंसेवक ने मोदी जी के मन की बात से प्रेरणा लेते हुए कहा,

"मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने लोगों से हमारी नदियों में स्वच्छता बनाए रखने की अपील की थी। उनकी अपील के बाद हम रोजाना घाटों की सफाई करते हैं और लोगों से उन्हें प्रदूषित न करने की अपील कर रहे हैं।"

पवित्र नदी गंगा लगभग आधे अरब लोगों को पानी उपलब्ध कराती है, जो दुनिया की किसी भी अन्य नदी से अधिक है। गंदगी और कचरे से नदी को मुक्त करना किसी भी नेतृत्व के लिए आसान काम नहीं है। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न केवल महत्वाकांक्षी 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के माध्यम से दृष्टि और नेतृत्व दिखाया है, जिसके तहत 2017 से 2022 तक राज्य सरकारों और कार्यकारी एजेंसियों को 10,000 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं। जनशक्ति को अनलॉक करने के लिए देश के समृद्ध जनसांख्यिकीय लाभांश में भी टैप किया गया है। जन-आंदोलनों की यह शुरुआत, जिसे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने आकार दिया है, जो मन की बात कार्यक्रम को राष्ट्र निर्माण में एक अद्वितीय और महान शक्ति बनाता है।

प्रधानमंत्री ने देश के विभिन्न राज्यों में जल संकट को हल करने के लिए लक्षित कई जन-संचालित अभियानों को सूचीबद्ध किया है। उदाहरण के लिए, तेलंगाना में 'मिशन भागीरथ', आंध्र प्रदेश में 'नीरू प्रगति मिशन', महाराष्ट्र में 'जल युक्त शिविर' अभियान, छत्तीसगढ़ में 'लोक सुराज, जल सुराज', मध्य प्रदेश में 'बलराम तालाब योजना', उत्तर प्रदेश में 'मुख्यमंत्री जल बचाओ अभियान' और कर्नाटक में 'कल्याणी योजना' शामिल है। मन की बात पर इन उदाहरणों का उल्लेख करते हुए और विभिन्न राज्यों और उनके निवासियों के प्रयासों को बधाई देते हुए, प्रधानमंत्री ने न केवल दूसरों को इस तरह के जन-संचालित अभियान चलाने के लिए प्रेरित किया, बल्कि मौजूदा प्रयासों को सामाजिक मान्यता भी प्रदान की, उनका सम्मान किया। प्रधानमंत्री मोदी ने मीडिया सहित समाज के सभी वर्गों में कटौती करते हुए देश में जल संरक्षण के प्रयासों को प्रोत्साहन प्रदान किया। उन्होंने कहा, "मैं भारत के लोगों से आग्रह करता हूं कि हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम पानी की एक बूंद भी बर्बाद नहीं होने देंगे। और

पानी का मुद्दा सिर्फ किसानों का नहीं है। यह गांव, गरीब, मजदूर, किसान, शहरी, ग्रामीण, अमीर, गरीब सभी से जुड़ा है... आने वाले चार महीनों को जल बचाओ अभियान में बदलना चाहिए, पानी की एक-एक बूंद को बचाना है। और यह केवल सरकारों के लिए नहीं है, केवल राजनेताओं के लिए नहीं है, यह बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा किया जाने वाला कार्य है। हाल ही में मीडिया ने जल संकट के बारे में बहुत विस्तार से रिपोर्ट किया। मुझे उम्मीद है कि मीडिया लोगों को पानी बचाने की राह दिखाएगा, अभियान चलाएगा और हमें हमेशा के लिए जल संकट से मुक्त करने की जिम्मेदारी भी साझा करेगा; मैं उन्हें भी आमंत्रित करता हूं।"

26 जून, 2016 को मन की बात के 21वें एपिसोड में प्रधानमंत्री को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल से संतोष नेगी का संदेश मिला, जिन्होंने बताया कि कैसे मोदी जी के कार्यक्रम ने उन्हें एक स्कूल में जल संरक्षण के लिए अभियान चलाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, "आपसे प्रेरणा लेते हुए हमारे स्कूल में मानसून की शुरुआत से पहले, हमने खेल के मैदान के किनारे 250 छोटी खाइयां खोदीं, जो 4 फीट गहरी थीं, ताकि इनमें बारिश का पानी जमा हो सके। इस तरह से खेल का मैदान साफ-सुथरा रहता था और इनमें बच्चों के डूबने का कोई खतरा नहीं था... और हम खेल के मैदान पर गिरने वाले करोड़ों लीटर बारिश के पानी को बचाने में कामयाब रहे।'' यह दिखाता है कि मन की बात देश के 130 करोड़ से अधिक नागरिकों के साथ-साथ प्रधानमंत्री के साथ सीधे अपनी उपलब्धियों को साझा करने के लिए लोगों को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान करते हुए देश के दूर-दराज के कोने में भी लोगों की भागीदारी को कैसे प्रेरित कर रही है।

गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल की एक प्रेरणादायक घटना को याद करते हुए मोदी जी ने उल्लेख किया कि कैसे एक गैर सरकारी संगठन ने माता अंबाजी के भक्तों को पौधे वितरित किए और कैसे भक्त माता अंबाजी के आशीर्वाद स्वरूप परिपक्व होने तक पौधों की देखभाल कर रहे थे। मोदी जी ने अन्य मंदिरों से भी यही प्रथा शुरू करने और इसे 'पेड़ लगाने के लिए एक जन-आंदोलन ' में बदलने का आग्रह किया। पर्यावरण संरक्षण के लिए सहभागी शासन की सुविधा के लिए भारत सरकार ने CAMPA कानून पारित किया, जिसके तहत पेड़ लगाने के लिए राज्यों को 40,000 करोड़ रुपये उपलब्ध कराए गए। मोदी जी ने अपने श्रोताओं को बताया कि कैसे जुलाई, 2016 में महाराष्ट्र में 2 करोड़ पौधे लगाए गए, जिससे कार्यक्रम को जन-आंदोलन में बदल दिया गया। उन्होंने आंध्र प्रदेश, राजस्थान और गुजरात आदि के कई अन्य उदाहरण सूचीबद्ध किए।

प्रधानमंत्री ने 'गिव इट अप' अभियान के लिए लोगों को जुटाने के लिए मन की बात का भी उपयोग किया है, जो भारत सरकार द्वारा घरेलू एलपीजी उपभोक्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए एक पहल थी, जो एलपीजी के लिए बाजार मूल्य का भुगतान कर सकते थे, स्वेच्छा से आत्मसमर्पण करने के लिए उनकी एलपीजी सब्सिडी, केंद्र को आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों तक पहुंचने के लिए सीमित संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। एलपीजी सब्सिडी छोड़ने वाले प्रत्येक एलपीजी उपभोक्ता को बदले में एलपीजी कनेक्शन प्राप्त करने के लिए बीपीएल परिवार से जोड़ा गया था। यह ग्रामीण और वंचित परिवारों को रसोई गैस जैसे स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन उपलब्ध कराने के बड़े उद्देश्य के साथ किया गया था, जो अन्यथा पारंपरिक खाना पकाने के ईंधन जैसे जलाऊ लकड़ी, कोयला, गोबर के उपले आदि का उपयोग कर रहे थे, जो ग्रामीण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थे। घरों के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी। ग्रामीण भारत में विभिन्न प्रदूषकों के परिवेश स्तरों में घरेलू दहन का प्रमुख योगदान है। अध्ययनों से पता चला है कि परिवेश का एक महत्वपूर्ण अंश (22-52 प्रतिशत) सीधे आवासीय खाना पकाने और हीटिंग से उत्सर्जित होता है। भारत में उनके व्यापक उपयोग को देखते हुए बायोमास जलाने वाले स्टोव (ब्रशवुड या गोबर के केक का उपयोग करके) से उत्सर्जन का क्षेत्रीय वायु गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ने का अनुमान है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण घरों में खाना पकाने से निकलने वाले धुएं के संपर्क में आने से सांस की बीमारियां और फेफड़ों में संक्रमण आम परिणाम हैं। दिल की बीमारियां, तपेदिक और मृत जन्म लंबे समय से प्रदूषण और ठोस ईंधन जलाने से उठने वाले धुएं से जुड़े हुए हैं, जिनमें महिलाएं और बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) की एक रिपोर्ट के अनुसार, दक्षिण एशिया में आधे से अधिक ब्लैक कार्बन अधूरे दहन से आता है। हिमालय पर इसके संभावित प्रभाव के कारण ब्लैक कार्बन ग्लेशियरों के पिघलने और दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण चिंता का एक गंभीर खतरा है। 28 जुलाई, 2015 तक पूरे भारत में 'गिव इट अप' अभियान के माध्यम से 200 करोड़ रुपये की बचत हुई। साथ ही जून, 2015 तक 2 करोड़ से अधिक नए एलपीजी कनेक्शन

जारी करने किये गये। इस जन-आंदोलन में लोगों के सहयोग और भागीदारी को बढ़ाने के लिए एक प्रमुख पहल प्रधानमंत्री द्वारा मन की बात के माध्यम से की गयी थी।

मन की बात के 12वें एपिसोड में, जो सितंबर, 2015 में प्रसारित हुआ था, प्रधानमंत्री ने अपडेट दिया था कि कैसे अमीरों के लिए मन की बात पर उनके स्पष्ट आह्वान के परिणामस्वरूप 30 लाख परिवारों ने अपनी सब्सिडी छोड़ दी थी। लोगों की भागीदारी या 'जन शक्ति' के इस उदाहरण को 'मूक क्रांति' बताते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के 12वें एपिसोड में कहा,

"आज मैं बड़े गर्व के साथ कह सकता हूं कि 30 लाख परिवारों ने अपनी गैस सब्सिडी छोड़ दी है और ये अमीर लोग नहीं हैं। मैंने टीवी पर एक सेवानिवृत्त शिक्षक, एक विधवा महिला को अपनी सब्सिडी छोड़ने के लिए कतार में खड़ा देखा। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग से संबंधित समाज के आम लोगों को सब्सिडी छोड़ने में कठिनाई होती है। लेकिन फिर उन्होंने अपनी सब्सिडी छोड़ दी। क्या यह एक मूक क्रांति नहीं है? क्या यह लोगों की शक्ति का प्रदर्शन नहीं है?"

24 अप्रैल, 2016 को मन की बात के 19वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने बताया कि 1 करोड़ परिवारों ने अपनी एलपीजी सब्सिडी छोड़ दी है और उनके प्रति आभार व्यक्त किया है। 30 अक्टूबर, 2016 को 25वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने एक 90 वर्षीया महिला से प्राप्त एक पत्र साझा किया, जिसने गरीब परिवारों को चूल्हे के धुएं से मुक्ति दिलाने के लिए मोदी जी की पीठ थपथपाई थी। यह दिखाता है कि कैसे मन की बात ने 'जन-भागीदारी ' की भावना को मनाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हुए देश की समग्र प्रगति के लिए भारत के नागरिकों के बीच निस्वार्थ भागीदारी का माहौल बनाया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने जल संरक्षण के मुद्दे को कृषि से जोड़ते हुए उपयुक्त तकनीक, योजना और समयबद्ध कार्रवाई के साथ-साथ लोगों की भागीदारी का आह्वान किया। 22 मई, 2016 को मन की बात के 20वें प्रसारण में उन्होंने पानी को 'भगवान का उपहार' बताया और जल भंडारण, जल संरक्षण और जल सिंचाई को समान महत्व दिया। उन्होंने उन फसलों की खेती के महत्व को बताया, जिनके लिए न्यूनतम पानी की खपत की आवश्यकता होती है। साथ ही 'प्रति बूंद अधिक फसल' को मूर्त रूप देने के लिए महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों का उदाहरण दिया, जिन्होंने ड्रिप सिंचाई के क्षेत्र में बड़े कदम उठाए हैं और लोगों की भागीदारी के माध्यम से हर साल 2-3 लाख हेक्टेयर भूमि को सूक्ष्म सिंचाई के तहत लाया गया है।

प्रधानमंत्री ने पूरे देश में जल संरक्षण प्रयासों को संस्थागत रूप देने का लगातार प्रयास किया है। 29 अप्रैल, 2018 मन की बात के 43वें प्रसारण में प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि कैसे जल संरक्षण सदियों पुरानी प्रथा है और उन्होंने तमिलनाडु, गुजरात और राजस्थान का उदाहरण दिया। जबकि उन्होंने तमिलनाडु के मन्नारकोविल, चिरन महादेवी, कोविलपट्टी या पुदुकोट्टई जैसे कुछ मंदिरों में सिंचाई प्रणाली, जल संरक्षण और सूखा प्रबंधन को दर्शाने वाली पत्थर की नक्काशी का उल्लेख किया, यह पाया गया कि 700-1,000 साल पहले के जल संरक्षण से संबंधी शिलालेख भी तमिलनाडु के मंदिरों में पाए गए हैं।

प्रधानमंत्री ने गुजरात के अडालज स्टेपवेल और पाटन की रानी की वाव के बारे में भी बात की, जो यूनेस्को के विरासत स्थल हैं, और चांद बावड़ी (जल मंदिर), जो पानी की कमी वाले क्षेत्रों में स्थित हैं। प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि कैसे उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले में सूख चुकी ससुर-खदेरी नदियों को जिला प्रशासन और क्षेत्र के 40-45 गांवों के लोगों ने बड़े पैमाने पर पुनर्जीवित किया, जिन्होंने मिट्टी और जल संरक्षण की जिम्मेदारी ली। प्रधानमंत्री ने कहा, "यह शानदार उपलब्धि पशु, पक्षियों किसानों, फसलों और गांवों के लिए एक बड़ा वरदान है। मैं इस बात पर जोर देता हूं... जल संचयन और जल संरक्षण के लिए हमें भी कुछ जिम्मेदारी लेनी चाहिए...''

प्रधानमंत्री ने मन की बात के 54वें प्रसारण में जनता से अपील की कि वे #JanShakti4JalShakti हैशटैग का उपयोग करके सोशल मीडिया पर भी यथासंभव अधिक से अधिक तरीकों की सूची बनाकर एक-दूसरे को जल संरक्षण के लिए प्रेरित करें।

30 जून, 2019 को 54वें मन की बात प्रसारण में यह बताते हुए कि उन्हें नमो ऐप और Mygov वेबसाइट पर

अपने श्रोताओं से जल संरक्षण के संबंध में कई पत्र मिले हैं, प्रधानमंत्री ने इस मुद्दे को छुआ। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत में पानी की कमी की समस्या पर प्रकाश डाला, कैसे पूरे भारत में प्रति वर्ष केवल 8 प्रतिशत वर्षा जल का संरक्षण किया गया था। कैसे 'जन-भागीदारी , जनशक्ति, शक्ति, सहयोग और 130 करोड़ नागरिकों के संकल्प के साथ इस संकट को हल करने का समय आ गया है।' प्रधानमंत्री ने जल शक्ति मंत्रालय के निर्माण के साथ देश में पानी से संबंधित सभी मुद्दों को तुरंत हल करने की सरकार की मंशा बताई। हालांकि, देश के लोगों को लामबंद करने के अपने दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित करते हुए मोदी जी ने बताया कि कैसे उन्होंने भारत के विभिन्न सरपंचों और ग्राम प्रधानों को पत्र लिखे, उन्हें पानी बचाने और बचाने के लिए प्रेरित किया। यहां उन्होंने उत्साहपूर्ण भागीदारी के लिए आभार व्यक्त किया। प्रधानमंत्री ने कहा, 'हजारों पंचायतों में करोड़ों लोगों ने श्रमदान किया है। हर गांव में लोगों ने पानी की एक-एक बूंद बचाने का संकल्प लिया।'

प्रधान मंत्री
Prime Minister

New Delhi
08 JUNE, 2019

Dear Sarpanch ji,

Greetings.

I hope that all my brothers and sisters in your Gram Panchayat are doing well.

My heartiest congratulations to you for enthusiastically participating in the recently concluded mega-festival of democracy and electing a government committed to building an empowered India. The building of a New India is possible only with your active participation and contribution.

The monsoon season is around the corner. We are fortunate that God has blessed our country with adequate rainwater. But it is our duty to respect this gift from nature. This is why, as soon as the monsoon begins, we have to make arrangements to conserve as much rainwater as possible.

Let us come together for construction of check dams and embankments along rivers and streams, bunding in fields, digging and cleaning of ponds, tree plantation, building reservoirs etc. for the storage of rain water, so that the water of the fields gets conserved in the fields, and the water of the village gets conserved in the village itself. If we are able to do this, then not only will the crop yield increase, but we will also have a large reserve of water, which we will be able to utilize for many purposes in our village.

I urge you to take a meeting of the Gram Sabha to read this letter out and discuss these issues further with the community. I am confident that we will make every effort at the rural level to improve our village environment by collecting and conserving every single drop of water.

Just as you made Swachhata a successful mass movement by making cleanliness a people's movement, I urge you to also lead this water conservation campaign and make it a people's movement as well.

Let's make the impossible possible and contribute to the creation of a New India.

Yours,

(Narendra Modi)

GRAM PANCHAYAT- ADILMAGIRI
BLOCK- CHOKPOT, DISTRICT- SOUTH GARO HILLS
MEGHALAYA

मेघालय के एक सरपंच को प्रधानमंत्री मोदी का पत्र।
स्रोत: Swachhindia.ndtv.com

25 अगस्त, 2019 को मन की बात की 56वीं कड़ी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों से भारत को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाने का आग्रह किया और गैर सरकारी संगठनों, कॉर्पोरेट क्षेत्र और नगर पालिकाओं को जमा हुए प्लास्टिक कचरे का दिवाली से पहले निस्तारण करने के लिए सुरक्षित तरीके खोजने के लिए प्रेरित किया। प्रधानमंत्री के स्वतंत्रता दिवस के संबोधन से पहले एक जन-आंदोलन का आह्वान किया गया था, जिसमें उन्होंने लोगों से पर्यावरण की रक्षा के लिए 'सिंगल-यूज़' प्लास्टिक का त्याग करने का आग्रह किया था। मोदी जी ने लोगों से वार्षिक 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान में भाग लेने का भी आग्रह किया, जो रेडियो प्रसारण के दिन से दो सप्ताह के भीतर शुरू होना था। प्लास्टिक के खिलाफ 'क्रांति' का आह्वान करते हुए मोदी जी ने कहा,

"इस वर्ष 2 अक्टूबर को जब हम बापू की 150वीं जयंती मना रहे हैं, हम न केवल उन्हें एक ऐसा भारत समर्पित करेंगे, जो खुले में शौच मुक्त हो, बल्कि पूरे विश्व में प्लास्टिक के खिलाफ एक नई क्रांति की नींव भी रखेंगे।" अपने श्रोताओं से पूछते हुए, "गांधी से बड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है?" श्री नरेंद्र मोदी ने गांधी जयंती को 'भारत माता को प्लास्टिक मुक्त' बनाने के लिए एक दिन के रूप में मनाने के लिए समाज के सभी वर्गों के लोगों से आग्रह किया।

प्रधानमंत्री ने मन की बात के साथ-साथ तटीय क्षेत्रों के कटाव और डूबने के वैश्विक खतरे को भी संबोधित किया है, जिसके लिए भारत सरकार द्वारा कई पहल की जा रही हैं। उन्होंने इस मुद्दे के बारे में अपने श्रोताओं को संवेदनशील बनाने और उन्हें अपने तरीके से तटीय क्षेत्रों के संरक्षण में भाग लेने और योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों द्वारा संचालित आंदोलनों के उदाहरणों का हवाला दिया है। आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने के लिए मन की बात पर जन-संचालित आंदोलनों के प्रेरक उदाहरणों को उजागर करने के अपने अभ्यास के अनुरूप प्रधानमंत्री ने 26 सितंबर, 2021 को 81वें एपिसोड में बिहार के मधुबनी से एक मामला साझा किया। प्रसारण में प्रधानमंत्री मोदी ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय और कृषि विज्ञान केंद्र की संयुक्त पहल के बारे में बात की, जिसे 'सुकेत मॉडल' नाम दिया गया, जिसके तहत गांव में किसानों से गोबर और अन्य घरेलू कचरा एकत्र किया गया और बदले में दिया गया, रसोई गैस सिलेंडर, जैव-उर्वरकों के लिए पैसा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गांव को प्रदूषण से मुक्त किया गया। प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु के शिवगंगा जिले की कांजीरंगल पंचायत से 'वेस्ट टू वेल्थ' का एक और उदाहरण साझा किया, जहां कचरे के उपचार से बिजली और

स्रोत: दैनिक भास्कर

कीटनाशक उत्पन्न हो रहे थे। अभिनव विचारों के माध्यम से देश को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में योगदान देने के लिए प्रेरित करते हुए प्रधानमंत्री ने 26 सितंबर, 2021 को 81वें मन की बात प्रसारण में कहा,

"यह आत्मनिर्भरता का आधार है। मैं अपील करता हूं कि देश की हर पंचायत को भी अपने-अपने गांव में ऐसा कुछ करने के बारे में सोचना चाहिए।"

27 फरवरी, 2022 को 86 वें संस्करण में मोदी जी ने जनभागीदारी के कई उदाहरण साझा किए, जैसे श्रीनगर, कश्मीर में 'मिशन जल थल', असम के कोकराझार में 'स्वच्छ और हरित कोकराझार' मिशन, विशाखापत्तनम में सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ अभियान, रणथंभौर में 'मिशन बीट प्लास्टिक'। मोदी जी ने कहा,

"सबका प्रयास' की भावना को प्रदर्शित करते हुए यह भावना... देश में सार्वजनिक भागीदारी को मजबूत करती है और जब सार्वजनिक भागीदारी होती है, तो बड़े से बड़े लक्ष्य भी निश्चित रूप से पूरे होते हैं।"

भारत में जल संरक्षण के सदियों पुराने उदाहरणों का हवाला देते हुए, जैसे गुजरात में 'वाव' या बावड़ी वाले कुएं, प्रधानमंत्री ने पूरे भारत में 75 अमृत सरोवरों के कायाकल्प के लिए मन की बात में अधिकतम भागीदारी की अपील की। मिशन अमृत सरोवर देशभर के प्रत्येक जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवरों के निर्माण और कायाकल्प के लक्ष्य के साथ अप्रैल, 2022 में शुरू की गई एक सरकारी पहल है। मिशन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट को दूर करना है, और 15 अगस्त, 2023 तक 50,000 अमृत सरोवर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। 8 फरवरी, 2023 तक इस लक्ष्य का 60 प्रतिशत या 30,000 से अधिक अमृत सरोवर का लक्ष्य पूरा हो चुका है। इस प्रगति को देश के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में मनाया जा रहा है, जिन्होंने ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ मिलकर 'जन-भागीदारी ' की क्षमता का प्रदर्शन किया। अब तक 1,095 स्वतंत्रता सेनानी, पंचायत के 13,940 सबसे बड़े सदस्य, स्वतंत्रता सेनानियों के 193 परिवार के सदस्य, शहीदों के 624 परिवार के सदस्य और 47 पद्म पुरस्कार विजेताओं ने मिशन में भाग लिया है।

27 मार्च, 2022 को 87वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने भारत की विभिन्न जनजातियों द्वारा किए गए जल संरक्षण के प्रयासों पर प्रकाश डाला, जैसे कि कच्छ के मालधारी जनजाति के रण का 'वृदास', जिसकी रक्षा के लिए छोटे कुएं बनाना और उसके चारों ओर पेड़ लगाना शामिल है, और मध्य प्रदेश की भील जनजाति का 'हलमा', जिसमें जनजाति के विचार-मंथन सत्रों के माध्यम से पानी से संबंधित समस्याओं का समाधान किया जाता है।

26 मार्च, 2023 को मन की बात के 99वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की सफलता और कैसे हमारा देश इस क्षेत्र में प्रभावशाली गति से आगे बढ़ रहा है, इस पर चर्चा की। उन्होंने सौर ऊर्जा के महत्व पर भी प्रकाश डाला और सूर्य की पूजा करने की परंपराओं के साथ भारत के लोगों का सूर्य के साथ एक विशेष संबंध कैसे है, इस पर बात की। प्रधानमंत्री ने इसके बाद पुणे और दीव में लोगों द्वारा सौर ऊर्जा को सफलतापूर्वक अपनाने के प्रयासों की सराहना की। पुणे में एमएसआर-ऑलिव हाउसिंग सोसाइटी के लोगों ने बिजली पैदा करने के लिए सोलर पैनल लगाए हैं, जिससे हर महीने करीब 40,000 रुपये की बचत हो रही है। दीव में, लोगों ने बंजर भूमि और कई इमारतों पर सौर पैनल स्थापित किए हैं, जिससे आवश्यकता से अधिक बिजली पैदा होती है और इसके परिणामस्वरूप बिजली की खरीद पर लगभग 52 करोड़ रुपये की बचत होती है।

डिजिटाइजेशन

प्रधानमंत्री ने मन की बात के माध्यम से देश की डिजिटलीकरण प्रक्रिया को मजबूत और तेज किया है, जिससे भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और डिजिटल अर्थव्यवस्था में बदलने में मदद मिली है। इसने सुनिश्चित किया है कि डिजिटल पहुंच को बढ़ाया जाए और डिजिटल डिवाइड को कम किया जाए, जिससे देश के एमएसएमई क्षेत्र को मजबूती मिले, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 30 प्रतिशत और इसके निर्यात का 50 प्रतिशत है। जबकि सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम ने सरकार और नागरिकों के बीच की दूरी को काफी हद तक कम कर दिया है, एक पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त तरीके से बुनियादी सुविधाओं का अंतिम मील वितरण सुनिश्चित किया है। यह प्रक्रिया केवल प्रधानमंत्री के मन की बात के माध्यम से उत्प्रेरित हुई है। अप्रैल, 2015 में मुद्रा योजना की शुरुआत के बाद से दिसंबर, 2022 तक 37 करोड़ से अधिक ऋण, 20 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि का वितरण किया जा चुका है। यह साबित करता है कि कैसे प्रधानमंत्री मोदी की विभिन्न पहलों के कारण भारत में डिजिटल डिवाइड बहुत कम हो गया है, जिसमें मन की बात एक महत्वपूर्ण आउटरीच कार्यक्रम के रूप में सामने आया है।

30 अगस्त, 2015 को 11वें मन की बात प्रसारण में प्रधानमंत्री ने अपने श्रोताओं को बताया कि कैसे गरीबों ने न केवल लगभग 18 करोड़ जीरो बैलेंस जन धन खाते खोले, बल्कि इन खातों में 22,000 करोड़ रुपये की राशि जमा करके अपनी अमीरी प्रदर्शित की है। उन्होंने कहा कि कैसे यह कदम गरीबों को बैंकिंग सुविधाओं से जोड़ने में मदद कर रहा है। 27 दिसंबर, 2015 को मन की बात के 15वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने पहल योजना का जिक्र करते हुए जिक्र किया कि कैसे जनधन खातों की वजह से दुनिया की सबसे बड़ी डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) योजना भारत में सफल हुई। इस योजना को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा घरों की संख्या के मामले में सबसे बड़े नकद हस्तांतरण कार्यक्रम के रूप में भी स्वीकार किया गया है। 1 अप्रैल, 2022 तक एलपीजी (डीबीटीएल) या पहल सब्सिडी के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के तहत 28,36,77,886 लोगों को लाभ हुआ था।

27 नवंबर, 2016 को मन की बात के 26वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा,

"राष्ट्र निर्माण के लिए एक कैशलेस अर्थव्यवस्था आवश्यक है। एक छोटा व्यापारी भी इस उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीक की मदद से व्यवसाय का विस्तार कर सकता है... मैं आप सभी को आमंत्रित करता हूं। कैशलेस सोसाइटी बनाने में आप बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। आप अपने मोबाइल फोन पर एक पूर्ण बैंकिंग सुविधा बना सकते हैं और कागजी मुद्रा का उपयोग किए बिना अपना व्यवसाय चलाने के लिए अब कई तरीके हैं। ऐसे तकनीकी तरीके हैं जो सुरक्षित, सुगम और तात्कालिक हैं। मैं चाहता हूं कि आप न केवल इस अभियान को सफल बनाने में अपना सहयोग दें, बल्कि बदलाव की प्रक्रिया का नेतृत्व भी करें और मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस बदलाव के अगुआ बन सकते हैं।"

30 अप्रैल, 2017 को 31वें मन की बात प्रसारण में प्रधानमंत्री ने लोगों को डिजिटल इंडिया आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री ने भीम ऐप की रेफर एंड अर्न स्कीम को साझा किया और कहा, "व्यापारी कमा सकते हैं, इसलिए छात्र कमा सकते हैं। और यह योजना 14 अक्टूबर तक वैध है। डिजिटल इंडिया बनाने में आपका योगदान होगा। आप नए भारत के प्रहरी बनेंगे।"

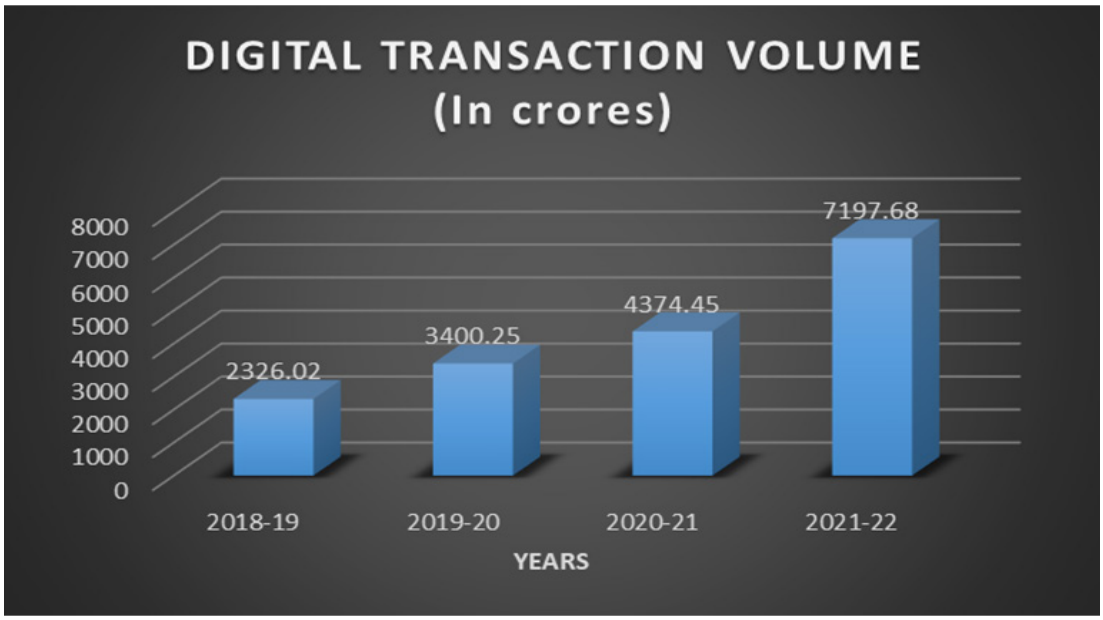

डिजिटल लेन-देन में वर्ष-वार महत्वपूर्ण उछाल। स्रोत: पीआईबी

26 सितंबर, 2021 में प्रसारित मन की बात के 81वें संस्करण में मोदी जी ने उल्लेख किया कि कैसे देश ने उस वर्ष अगस्त के महीने में 6 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के 350 करोड़ से अधिक यूपीआई लेनदेन दर्ज किए।

24 अप्रैल, 2022 को प्रसारित मन की बात एपिसोड में प्रधानमंत्री ने देश की जनता से देश में UPI भुगतान प्रणाली को मजबूत करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, "लोगों को 'कैशलेस डेआउट' के लिए जाना चाहिए, अब छोटे गांवों और कस्बों में भी लोग यूपीआई का उपयोग कर रहे हैं। इससे दुकानदारों और ग्राहकों दोनों को फायदा हो रहा है। ऑनलाइन भुगतान एक डिजिटल अर्थव्यवस्था का विकास कर रहे हैं, प्रतिदिन 20,000 करोड़ रुपये का ऑनलाइन लेन-देन हो रहा है। अब छोटे शहरों और ज्यादातर गांवों में भी लोग यूपीआई के जरिए ही लेन-देन कर रहे हैं। डिजटिल इकोनॉमी से देश में एक कल्चर भी पैदा हो रहा है।"

पिछले वर्षों में डिजिटल भुगतान लेन-देन में जबरदस्त वृद्धि देखी गई है। कोविड-19 संकट के दौरान यह डिजिटल भुगतान ही था, जिसने छोटे व्यापारियों सहित व्यवसायों के कामकाज को सुविधाजनक बनाया और सामाजिक दूरी बनाए रखने में मदद की।

भाग-II

मन की बातः मानसिकता में बदलाव लाकर सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए बयानों की प्रासंगिकता और उनके द्वारा दिए गए बयानों की सरासर मुखरता के कारण मन की बात का देश की आबादी पर गहरा प्रभाव पड़ा है। प्रधानमंत्री ने एक वैकल्पिक वातावरण उत्पन्न किया है, जिसमें उन्होंने खुले संवाद, देश के नागरिकों के साथ अपने अमूल्य विचारों को साझा करने और देश के शासन में अधिकतम भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए एक मंच तैयार किया है। इस तरह का मॉडल, जो प्रधानमंत्री ने बनाया है, वह स्वाभाविक रूप से अद्वितीय है और भारतीय लोकतंत्र में नेतृत्व के एक नए रूप का प्रस्ताव करता है। हालांकि, मन की बात केवल पारंपरिक शासन मॉडल के अतिरिक्त नहीं है। मन की बात के पीछे प्रधानमंत्री का रवैया भी काबिले-तारीफ है। देश की जनता से बात करते समय प्रधानमंत्री ने सफलतापूर्वक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखा है। देश के पिछले प्रधानमंत्रियों द्वारा अभ्यास किए गए सांसारिक नेतृत्व को सकारात्मक नेतृत्व में बदल दिया है। 2014 से पहले देश में कुछ समय के लिए सकारात्मक नेतृत्व अनुपस्थित था, जिसके परिणामस्वरूप सरकार और उनके चुने हुए नेता के प्रति लोगों में कम विश्वास था।

उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने और सहयोगियों के बीच नकारात्मक भावनाओं को दबाने के लिए चाहे वह राजनीतिक या व्यावसायिक हो, किसी भी संगठनात्मक सेटअप में सकारात्मक नेतृत्व आवश्यक है। सकारात्मक नेतृत्व को कभी-कभी नकली सकारात्मक भावनाओं या बयानों के सुपरइम्पोज़िशन द्वारा सशक्त सकारात्मकता की झूठी छतरी बनाने के लिए नियोजित एक निष्क्रिय विशेषता के रूप में देखा जाता है। हालांकि, वास्तव में सकारात्मक नेतृत्व केवल सकारात्मक भावनाओं या बयानों को उत्पन्न करने के बारे में नहीं है; यह सकारात्मक मूल्यों को मन में बिठाने के बारे में है, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से समर्थन दिया है। मन की बात के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने प्रमुख विद्वानों, ऐतिहासिक हस्तियों और स्वदेशी संस्कृतियों के विचारों को चित्रित करके नागरिकों में सकारात्मक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया। उनके द्वारा उपयोग किए गए संदर्भ श्रोताओं के लिए एक प्राकृतिक सुखदायक कारक के रूप में कार्य करते हैं, क्योंकि प्रधानमंत्री द्वारा उद्धृत मूल्य भारतीय संस्कृति के भीतर गहराई से उकेरे गए हैं, और भारतीय दर्शक बचपन से ही उन्हें सुनने के आदी हैं। देश के प्रधानमंत्री द्वारा इन मूल्यों को मजबूत करने के साथ, जनता अपने चुने हुए प्रतिनिधि के साथ एक सक्रिय मध्यस्थ के रूप में अपने नैतिक मूल्यों के पुनरुत्थान को महसूस करती है।

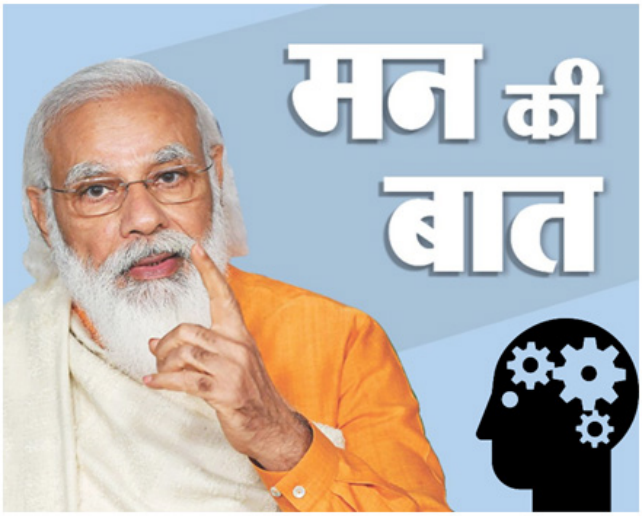

मन की बात मानसिकता में सुधार ला रही है

सकारात्मक नैतिक मूल्यों को जोड़ने के अलावा प्रधानमंत्री ने मन की बात के माध्यम से लोगों को प्रेरित करने और तनावपूर्ण स्थितियों में नागरिकों को एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करने के लिए अपने व्यक्तिगत अनुभवों का उपयोग किया है। हम इस अध्याय के दौरान बाद में इसके उदाहरणों पर चर्चा करेंगे।

2014 से पहले नेतृत्व ने कभी भी नागरिकों के साथ खुले संवाद का प्रयास नहीं किया। खुले संवाद को भूल जाइए,

गंभीर चिंता के मामलों पर स्पष्ट चुप्पी के लिए पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की अक्सर आलोचना की जाती थी। उनके कार्यकाल के दौरान यूपीए सरकार भ्रष्टाचार से संबंधित आरोपों के लिए लगातार रडार पर थी, लेकिन बदकिस्मत प्रधानमंत्री ने कभी भी स्थिति की कमान नहीं संभाली। 2014 से पहले की घटनाओं में नागरिकों को आश्वस्त करने के लिए मजबूत और सकारात्मक नेतृत्व की आवश्यकता थी, लेकिन यूपीए सरकार ने कभी ऐसा करने का प्रयास नहीं किया। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और उनकी विशेषताओं को आसानी से खराब नेतृत्व के उदाहरणों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिसने भारत को घुटन भरे दलदल में धकेल दिया। 2014 के बाद के नेतृत्व में भारी अंतर नग्न आंखों से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में कई मंचों पर भारत के नेतृत्व को पुनर्जीवित किया गया है। मजबूत अंतरराष्ट्रीय कद और जनता का विश्वास कई गुना बढ़ गया है, जिससे देश के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण स्थापित हुआ है। मन की बात ने भारत के दृष्टिकोण को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मन की बात के माध्यम से देश में लोग प्रेरित हो रहे हैं, जागरूक हो रहे हैं, नैतिक मूल्यों को सीख रहे हैं, मानसिकता को सकारात्मक दिशा में प्रभावित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मन की बात के माध्यम से देश में गंभीर चिंता के विषयों पर चर्चा में लगे हुए हैं, जैसे परीक्षा से संबंधित तनाव, नशाखोरी, खेल, विशेष रूप से सक्षम आबादी का कल्याण आदि। प्रधानमंत्री मोदी ने इस तरह की चर्चाओं को आयोजित करके राजनेताओं और आम जनता के बीच मौजूद दूरी को सफलतापूर्वक कम किया है। भारत में राजनेताओं को आमतौर पर अगम्य और तेजतर्रार माना जाता है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से अपने विचार साझा करके यह छाप छोड़ी है कि चुने हुए प्रतिनिधि और कुछ नहीं, बल्कि खुद जनता के लोग हैं। 'मैं आपका प्रधानमंत्री कम और प्रधान सेवक ज़्यादा हूं' जैसे बयानों के जरिए प्रधानमंत्री मोदी ने इस विमर्श को आगे बढ़ाया है। प्रधानमंत्री मोदी के सकारात्मक नेतृत्व ने आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण के एजेंडे को भी प्रभावित किया है। प्रधानमंत्री के प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से लोगों ने अपने आप पहल करनी शुरू कर दी है और सहभागी राष्ट्र निर्माण का एक मॉडल स्थापित किया है। इससे पहले नागरिक राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में योगदान देने या अपनी आजीविका को समृद्ध करने के लिए सरकारी योजनाओं पर निर्भर थे। हालांकि, मन की बात के बाद से लोगों ने अपने आप में निवेश करना शुरू कर दिया है और प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण को लगातार प्रेरक के रूप में इस्तेमाल किया है। मन की बात के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने उदाहरण के रूप में विदेशी रोल मॉडल का उपयोग करने के बजाय आबादी से ही रोल मॉडल बनाकर आबादी को और अधिक प्रेरित करने के लिए इन स्वयं की पहलों पर प्रकाश डाला है।

पहले संस्करण से ही प्रधानमंत्री ने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि वह नागरिकों की सुविधा के आधार पर उनसे जुड़े, ना कि नागरिकों को उनके लिए विशेष समय निकालना पड़े। उन्होंने अपनी चर्चा का समय रविवार को सुबह 11 बजे रखा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनका संदेश बड़े पैमाने पर दर्शकों तक पहुंचे, जिसमें अधिकतम जन-भागीदारी हो। इसके अलावा, पहले संस्करण में ही प्रधानमंत्री ने जनता को एक मजबूत संदेश दिया, जिसमें देश से सभी गंदगी को दूर करने, आने वाले संवादों के लिए एक ठोस नींव रखने का आग्रह किया। इसके बाद 2 नवंबर, 2014 को प्रसारित दूसरे संस्करण में प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों से अनुरोध किया कि वे अपनी मानसिकता बदलें और एक ऐसे सुधार की ओर बढ़ें, जहां आबादी को यह एहसास हो कि भारत किसी अन्य देश से कम नहीं है और न ही लोग हीन हैं। पहले दो संस्करणों की बातचीत ने एक ऐसे विमर्श के पर्याप्त आरंभकर्ता के रूप में काम किया, जो भारतीय लोकतंत्र को देखने के हमारे तरीके को बदल देगा। इसके अलावा, प्रधानमंत्री जानते थे कि 60 साल के कांग्रेस शासन के कारण परिवर्तन में समय लगेगा, जिसने शासन के एक पारंपरिक मॉडल का पालन किया, एक संकीर्ण मानसिकता लागू की और सार्वजनिक भागीदारी को कम किया। नतीजतन, शुरुआती एपिसोड में ही उन्होंने देश के सबसे अहम मुद्दों को संबोधित करना शुरू कर दिया।

मादक पदार्थों का दुरुपयोग

युवाओं के साथ शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे पहले बड़े पैमाने पर नशीली दवाओं के दुरुपयोग और लत के मुद्दे को संबोधित किया। मन की बात की तीसरी कड़ी में 14 दिसंबर, 2014 को प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे ड्रग्स एक विशाल बुराई है, जो न केवल व्यक्ति, बल्कि व्यक्ति के परिवार और अंततः राष्ट्र

को भी खा जाती है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किस प्रकार मादक द्रव्यों का सेवन व्यक्ति को एक दुष्चक्र में फंसा देता है और उनके भविष्य को व्यर्थ में नष्ट कर देता है। बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय आयोग के अनुसार, 2007-2012 की अवधि के दौरान कुल पदार्थ उपयोगकर्ताओं का 13.1 प्रतिशत 20 वर्ष से कम आयु के थे। इसके अतिरिक्त हर साल 20 मिलियन बच्चे धूम्रपान के आदी हो जाते हैं, इसी अवधि के दौरान 55,000 बच्चे प्रतिदिन इसके आदी हो जाते हैं। उपलब्ध डेटा इस बात पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार नशीली दवाओं के दुरुपयोग के मुद्दे ने युवा आयु वर्ग के भीतर अपना जाल फैला लिया है, जिससे देश की क्षमता को नुकसान पहुंचा है। मन की बात के तीसरे एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने तीन डी : अंधेरा, विनाश और तबाही के दायरे में ड्रग्स को दिखाया। जनता ने भी प्रधानमंत्री की पहल का सक्रिय रूप से जवाब दिया, क्योंकि दूसरे संस्करण में इस मुद्दे के उनके अल्प उल्लेख ने विभिन्न प्लेटफार्मों पर 7,000 से अधिक प्रतिक्रियाएं प्राप्त कीं, कुछ लोगों ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से एक पत्र भी लिखा, जो केवल यह दर्शाता है कि प्रधानमंत्री ने जो पहल की है, वह जनता के मानस पटल पर भी उकेरी गई है। प्रधानमंत्री ने बहुत ही विवेकपूर्ण ढंग से नागरिकों को विचारोत्तेजक दृष्टिकोण प्रदान करके ड्रग्स के मुद्दे को समझाया था।

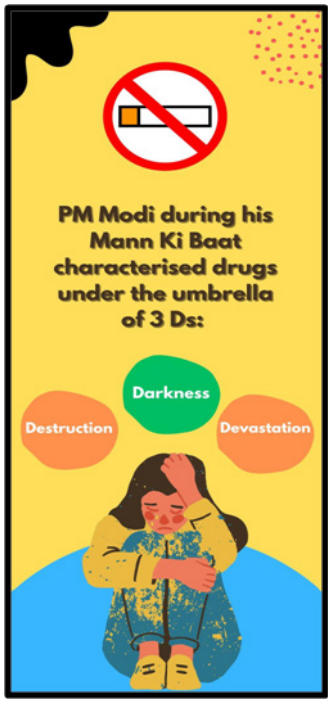

14 दिसंबर को प्रसारित तीसरे संस्करण में ही प्रधानमंत्री मोदी ने एक छोटी सी घटना सुनाई कि किस तरह ड्रग मनी से खरीदी गई गोली से सीमा पर एक जवान शहीद हो गया। घटना का वर्णन केवल एक कहानी नहीं है, बल्कि जनता को यह समझाने के लिए एक परिष्कृत रूप से बुना गया विचार है कि ड्रग्स आतंकवाद के एक चक्र को कैसे बढ़ावा देता है, जो अंततः राष्ट्र को नष्ट कर देता है। इसके अलावा, इसे युवाओं के लिए अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने इस मुद्दे को 'अभिनय शांत' के सहस्राब्दी विचार से जोड़ा, जो आमतौर पर युवा व्यक्तियों की तर्कसंगत सोच को इस दुष्चक्र में कैद कर देता है। प्रधानमंत्री द्वारा निर्धारित दो दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। फिर भी एक ही मुद्दे का वर्णन करते हैं। इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे प्रधानमंत्री अपने आंतरिक विचारों को साझा करके जनता की मानसिकता को व्यापक बनाने पर केंद्रित हैं। इसके अलावा, विमर्श को और समृद्ध करने के लिए प्रधानमंत्री ने स्वामी विवेकानंद की युवाओं को युवा महत्वाकांक्षा की धारणा से जोड़ते हुए सकारात्मक दिशा में में ले जाने की बात का उल्लेख किया। तीसरे संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने स्वामी विवेकानंद को उद्धृत करते हुए कहा, "एक विचार लो, इसे अपना जीवन बनाओ। इस पर विचार करो और इसके बारे में सपने देखो। इसे अपने सपनों का एक अभिन्न अंग बनाओ। इसे अपने मन, मस्तिष्क, नसों का हिस्सा बनाओ और अपने शरीर के एक-एक अंग को, और बाकी सब कुछ भूल जाओ।" इस उद्धरण के माध्यम से प्रधानमंत्री ने युवाओं को ड्रग्स में लिप्त होने से रोकने की कोशिश की और इसके बजाय उन्हें अपने मन, शरीर और आत्मा को महत्वाकांक्षा की ओर लगाने के लिए प्रेरित किया, जो किसी भी युवा के लिए आवश्यक है, जो जीवन में समृद्ध होना चाहता है। भारत के भटके हुए युवाओं में सकारात्मक विचारों को जगाने के लिए अपने सकारात्मक रवैये पर भरोसा करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने इस उदाहरण का हवाला देते हुए सकारात्मक नेतृत्व गुणों की मिसाल पेश की। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने माता-पिता को सकारात्मक पालन-पोषण की दिशा में भी निर्देशित किया, जिसमें उन्होंने माता-पिता को अपने बच्चे के साथ एक खुली बातचीत में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया, जो उन्हें अपने बच्चे के जीवन में समग्र अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा और उन्हें अधिक जागरूक बनाएगा। इस तरह माता-पिता अपने बच्चे के जीवन में एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य कर सकते हैं और उन्हें नियमों और विनियमों को लागू करने के बजाय सकारात्मक तरीके से बुरी प्रथाओं से दूर रख सकते हैं। इसके अलावा, चर्चा को समाप्त करने के लिए प्रधानमंत्री ने एजेंडे पर स्पष्ट ध्यान आकर्षित करने के लिए हैशटैग #DrugsFreeIndia के तहत एक निरंतर ऑनलाइन आंदोलन शुरू किया। हालांकि, नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ उनका अभियान केवल मादक द्रव्यों के सेवन तक ही सीमित नहीं था, क्योंकि उन्होंने मन की बात के बाद के संस्करणों में भी शराब और सिगरेट के दुष्प्रभावों को चर्चा में शामिल रखा।

स्रोत: यूट्यूब

29 सितंबर, 2019 को मन की बात के 57वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने तंबाकू और शराब की खपत की समस्या पर संबोधित किया, भले ही उनके नेतृत्व में दैनिक धूम्रपान करने वाले व्यक्तियों के प्रतिशत में गिरावट देखी जा रही थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन एमपॉवर फ्रेमवर्क के अनुसार, भारत में वयस्कों के बीच दैनिक धूम्रपान के प्रसार में 2013 में 14 प्रतिशत से 2015 में 11 प्रतिशत और 2017 में 10 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। हालांकि, प्रधानमंत्री समस्या को हमेशा के लिए खत्म करना चाहते थे और समस्या के प्रति जनता में जागरूकता की भावना विकसित करना चाहते थे। मन की बात के इसी संस्करण में प्रधानमंत्री ने विशेष रूप से ई-सिगरेट के उपयोग को लक्षित किया, जो उस समय भारत में विशेष रूप से किशोरों के बीच लोकप्रियता हासिल कर रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे पहले निकोटीन के नकारात्मक प्रभावों पर जोर दिया, जो तंबाकू में नशीले एजेंट के रूप में काम करता है। उन्होंने निकोटीन के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए शुरुआत की, क्योंकि देश की ग्रामीण आबादी शायद ही इसके दुष्प्रभावों से अवगत है।

29 सितंबर, 2019 को मन की बात के 57वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों को ई-सिगरेट से संबंधित गलत सूचनाओं से अवगत कराया, जिन्हें उनकी सुगंधित सुगंध के कारण कम हानिकारक के रूप में चित्रित किया जा रहा था। प्रधानमंत्री ने इस गलत सूचना बाधा को तोड़ दिया और आबादी पर ई-सिगरेट के हानिकारक प्रभावों का वर्णन किया। इसके अलावा, उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए ई-सिगरेट पर लगाए गए प्रतिबंध पर भी जोर दिया कि भारत में इन उत्पादों की उपलब्धता न होने से इन हानिकारक वस्तुओं के लिए बाजार कम हो। इस मुद्दे के बारे में जागरूकता फैलाने के अलावा, प्रधानमंत्री ने हमेशा की तरह जनता की मानसिकता को सकारात्मक रूप से सुधारने की भी कोशिश की। 57वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने सिगरेट की खपत के प्रति जनसंख्या की मानसिकता को बदलने के लिए एक उदाहरण के रूप में एक औसत भारतीय परिवार का इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि एक परिवार में भले ही पिता एक चेन स्मोकर हो, वह नहीं चाहता कि उसके परिवार के अन्य सदस्य भी इसमें शामिल हों, यह दर्शाता है कि भारतीय मानसिकता अभी भी धूम्रपान को वर्जित मानती है। हालांकि, जब प्रधानमंत्री इस उदाहरण का हवाला देते हैं, तो जनसंख्या न केवल उदाहरण से संबंधित होगी, बल्कि उनके लोकप्रिय चुने हुए नेता से आने वाले विचार उनके दिमाग में और भी अधिक प्रतिध्वनित होंगे। उदाहरणों के साथ इस तरह की सापेक्षता मन की बात को अद्वितीय बनाती है, क्योंकि यह राजनीतिक नेताओं और जनता के बीच पारंपरिक श्रेष्ठता के परिसर को तोड़ती है।

मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री ने न केवल एक सकारात्मक मानसिकता सुधार प्रदान किया है, बल्कि

सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए सकारात्मक समाधान भी दिया है। नशीली दवाओं के दुरुपयोग के मामले में उन्होंने नागरिकों को फिट इंडिया अभियान की याद दिलाई। फिट इंडिया अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री द्वारा व्यवहार परिवर्तन लाने और अधिक शारीरिक रूप से सक्रिय जीवन शैली की ओर बढ़ने के लिए की गई थी। प्रधानमंत्री ने फिट इंडिया को नशीली दवाओं के दुरुपयोग के मुद्दे से जोड़ा और कहा कि भारत को फिट बनाने के लिए दवाओं की समस्या का उन्मूलन आवश्यक है। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री ने वास्तव में नशीले पदार्थों और शराब के मुद्दे पर एक समग्र दृष्टिकोण स्थापित किया है।

परीक्षा संबंधी तनाव पर चर्चा

जैसे ड्रग्स का मुद्दा युवाओं के लिए परीक्षा से जुड़े तनाव का मुद्दा है। समाज की अत्यधिक प्रतिस्पर्धी प्रकृति के कारण परीक्षाएं लगातार युवाओं के लिए तनाव का स्रोत रही हैं, जो उनके कथित मानकों के आधार पर अपेक्षाएं निर्धारित करती हैं। इसके अतिरिक्त माता-पिता का दबाव एक निरंतर संगत के रूप में कार्य करता है, जिससे छात्र की मानसिकता और भी अधिक बोझिल हो जाती है। एक अन्य कारक, जिसे अक्सर अनदेखा किया जाता है, वह दबाव है, जो छात्र भीतर से महसूस करता है। परीक्षाओं में बार-बार अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव भीतर से दबाव उत्पन्न करता है, जो अपेक्षाओं के स्तर को और बढ़ा देता है। 2013 में कोटा पुलिस के रिकॉर्ड के अनुसार, हर महीने कम से कम एक छात्र परीक्षा के दबाव का सामना न कर पाने के कारण आत्महत्या कर रहा था। कोटा को भारत का शिक्षा केंद्र माना जाता है, जो इस मुद्दे की गंभीरता को उजागर करता है। प्रधानमंत्री मोदी ने परीक्षा से संबंधित तनाव को एक पुरानी समस्या के रूप में पहचाना और मन की बात के शुरुआती संस्करणों में ही इसे संबोधित करना शुरू कर दिया। उन्होंने उपर्युक्त कारणों को भी प्रभावी ढंग से रेखांकित किया, जो परीक्षा संबंधी तनाव का कारण बनते हैं।

22 फरवरी, 2015 को मन की बात की इसी कड़ी के माध्यम से प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह यहां परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पास करने की प्रक्रिया को निर्धारित करने के लिए नहीं हैं, बल्कि वे छात्रों द्वारा परीक्षाओं के प्रति अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण में सकारात्मक सुधार के लिए इस मुद्दे को संबोधित कर रहे हैं। मन की बात के उन संस्करणों का विश्लेषण करने के बाद, जिसमें प्रधानमंत्री ने परीक्षाओं के बारे में बात की थी, यह स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री छात्रों के शिक्षक के रूप में कार्य करने के बजाय उनके साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहते थे। प्रधानमंत्री मोदी ने इसी संस्करण में छात्रों से बाहरी दबावों और अपेक्षाओं के आगे झुकने के बजाय अपने भीतर की खोज करने का आग्रह किया। उन्होंने आगे आंतरिक प्रतिस्पर्धा पर जोर दिया और दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की चिंता करने से पहले छात्रों के मन में खुद को अपने सच्चे प्रतिस्पर्धी के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया। 5वें संस्करण में इस सोच को आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री ने 35 बार अपना ही रिकॉर्ड तोड़ने वाले एथलीट सर्गेई बुबका का उदाहरण दिया। उल्लेखित एथलीट हर बार अपने लिए एक नई चुनौती पेश करता था और उसे तोड़ने का प्रयास करता था, जिससे वह खुद के साथ एक प्रतियोगिता बन जाता था। इसके अलावा, 5वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने छात्रों से अनुरोध किया कि वे परीक्षा से पहले परिणामों के बारे में सोचना बंद कर दें, क्योंकि यह सिर में बने-फुले हुए परिणामों को पूरा करने के लिए एक अनावश्यक बोझ का कारण बनता है। चर्चा को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री ने परीक्षा को उत्सव के रूप में लेने के विचार को आगे बढ़ाया। मन की बात के 5वें एपिसोड के दौरान उन्होंने कहा, "क्या हम साल में दो बार, हर टर्म में एक बार, सप्ताह भर चलने वाला परीक्षा उत्सव नहीं मना सकते?" इसमें एक व्यंग्यात्मक कविता सत्र, एक कार्टून प्रतियोगिता और एक वाद-विवाद प्रतियोगिता होनी चाहिए। परीक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर व्याख्यान देने के लिए कोई होना चाहिए, ताकि परीक्षा के चारों ओर यह तनाव समाप्त हो जाए।"

यह परीक्षा के इर्द-गिर्द घूमने वाले विमर्श को बदलेगा और छात्रों को भीतर से आत्मविश्वासी बनाएगा। 5वें एपिसोड में चर्चा के बाद प्रधानमंत्री को इस मुद्दे पर जनता की प्रतिक्रिया भी मिली, जिसे उन्होंने 31 मई, 2015 को मन की बात के 8वें एपिसोड में हाइलाइट किया था। प्रधानमंत्री को कई पत्र प्राप्त हुए, जिसमें बताया गया कि उनके सकारात्मक प्रोत्साहन के शब्दों ने छात्रों को परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम किया। यह दर्शाता है कि प्रधानमंत्री की पहल ने एक महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा है।

आठवें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने असफलता के डर पर चर्चा करते हुए वहीं से शुरू किया, जहां से उन्होंने छोड़ा था। प्रधानमंत्री मोदी ने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि छात्रों को उनके उदाहरण से प्रेरणा लेनी चाहिए। पायलट बनने के कई प्रयासों के बाद भी डॉ. कलाम ने हार नहीं मानी और प्रयास करते रहे। आखिरकार वह एक महान वैज्ञानिक और देश के राष्ट्रपति बने। परिणामस्वरूप प्रधानमंत्री मोदी ने छात्रों से असफलता को एक समस्या के बजाय एक अवसर के रूप में देखने का आग्रह किया। उपर्युक्त उदाहरण एक और उदाहरण है, जिसमें प्रधानमंत्री ने देश में, विशेषकर युवाओं के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अपने सकारात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया। इसके अलावा, 2016 के परीक्षा सत्र से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात एपिसोड का आयोजन किया और छात्रों को प्रेरित करने और सफलता के वास्तविक जीवन के उदाहरण देने के लिए देश की प्रसिद्ध हस्तियों के संदेश पढ़े। हस्तियों की सूची में सचिन तेंदुलकर, विश्वनाथन आनंद, मुरारी बापू और सीएनआर राव शामिल थे। उनके पत्र उनके व्यक्तिगत अनुभवों और छात्रों को परीक्षा से डरने के बजाय सकारात्मक दिशा में निर्देशित करने के ज्ञान के शब्दों से भरे हुए थे। प्रधानमंत्री की यह पहल इस मुद्दे में उनकी भागीदारी को दर्शाती है, क्योंकि वह युवाओं को देश के भावी ध्वजवाहकों के रूप में देखते हैं। प्रधानमंत्री ने अपनी चर्चाओं से परीक्षा के प्रति मानसिकता में सुधार लाने के अलावा परीक्षाओं के संबंध में उपलब्धियों का भी गुणगान किया है।

बोर्ड के छात्रों के साथ प्रधानमंत्री मोदी की ऑनलाइन बातचीत

22 मई, 2016 को 20वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने बोर्ड परीक्षाओं में असाधारण प्रदर्शन के लिए देश की बेटियों की सराहना की। यह देश की बेटियों के लिए एक प्रेरक कारक के रूप में कार्य करेगा, महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करेगा। दिलचस्प बात यह है कि 29 जनवरी, 2017 को मन की बात के 28वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने परीक्षा चर्चा के लिए मंच खोला, जिसमें लोगों ने परीक्षाओं पर अपने सुझाव और टिप्पणियां कीं। यह प्रधानमंत्री की अनूठी पहल थी और देश में पहली बार ऐसा हो रहा था। प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से सभी फोन कॉल का जवाब दिया और उनके सवालों और टिप्पणियों का पूरी ईमानदारी से जवाब दिया। प्रधानमंत्री द्वारा की गई इस दोतरफा चर्चा से न केवल लोगों का जुड़ाव बढ़ा, बल्कि उन्हें देश के नागरिकों के साथ एक मधुर संबंध बनाने में भी मदद मिली। प्रधानमंत्री के मन की बात को 'जन की प्रधानमंत्री से बात' में बदल दिया गया था।

29 जनवरी, 2017 को मन की बात की 28वीं कड़ी ने देश के साथ-साथ प्रधानमंत्री के लिए भी एक विश्वास-निर्माण मंच के रूप में काम किया। इसके बाद 29 अप्रैल, 2018, 26 जनवरी, 2020, 23 फरवरी, 2020 के प्रसारण में प्रधानमंत्री ने परीक्षाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए कई वैकल्पिक उदाहरण भी पेश किए। 29 अप्रैल, 2018 को 43वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि परीक्षा के दौरान सभी छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए सकारात्मक रूप से मेहनत की है, और इसलिए पुरस्कार के रूप में उन्हें यात्रा करनी चाहिए। उन्होंने उन्हें अपनी यात्रा की कहानियां उनके साथ साझा करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने परीक्षा के मुद्दे के माध्यम से युवाओं को सांस्कृतिक विरासत के स्थलों पर जाने के लिए कहकर भारत के पर्यटन को भी बढ़ावा दिया। इसके अतिरिक्त 26 जनवरी, 2020 को 61वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने फिटनेस के विचार को परीक्षा से संबंधित तनाव के साथ जोड़ा, क्योंकि शारीरिक फिटनेस गतिविधियां या खेल मन और शरीर से तनाव को दूर करने के लिए एक सक्रिय उपाय के रूप में कार्य कर सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने फिट इंडिया अभियान के माध्यम से शारीरिक फिटनेस को इस मुद्दे से जोड़ा, जैसा कि उन्होंने मादक द्रव्यों के सेवन पर अपने संबोधन के दौरान किया था। हालांकि, परीक्षा के मुद्दे पर प्रधानमंत्री का रुख मन की बात तक ही सीमित नहीं है। 2018 में प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी पुस्तक एग्जाम वॉरियर्स लॉन्च की, जो युवा छात्रों को परीक्षा

के तनाव से निपटने में मदद करने के लिए लिखी गई थी। पुस्तक को कई छात्रों द्वारा पढ़ा गया था, और प्रधानमंत्री उन छात्रों से प्रतिक्रिया पाकर खुश थे, जिन्होंने मन की बात पर उनकी पुस्तक की सराहना की थी। उदाहरण के लिए, 29 सितंबर, 2019 को 57वें संस्करण में रोइंग, अरुणाचल प्रदेश की अलीना तैयांग ने प्रधानमंत्री की पुस्तक की सराहना की, क्योंकि उन्होंने इसे दो से तीन बार पढ़ा था और परीक्षा की अवधि के दौरान इसने वास्तव में उनकी मदद की थी। अलीना की मिसाल ऐसी ही एक मिसाल है। इसके अलावा 27 अक्टूबर, 2019 को प्रधानमंत्री मोदी ने 'परीक्षा पर चर्चा' पर प्रकाश डाला। एक टेलीविजन शो, जिसे प्रधानमंत्री ने बोर्ड परीक्षा देने वाले छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए बनाया था, परीक्षा को पूरी तरह से अलग मंच प्रदान किया। हालांकि, 'परीक्षा पे चर्चा' की उत्पत्ति को भी मन की बात के लिए प्रेरणास्रोत ठहराया जाएगा। मन की बात में शुरुआती बातचीत ने एक वैकल्पिक मंच के लिए एक ठोस नींव रखी, जिसने छात्रों के बीच परीक्षा के प्रति अधिक मजबूत सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया।

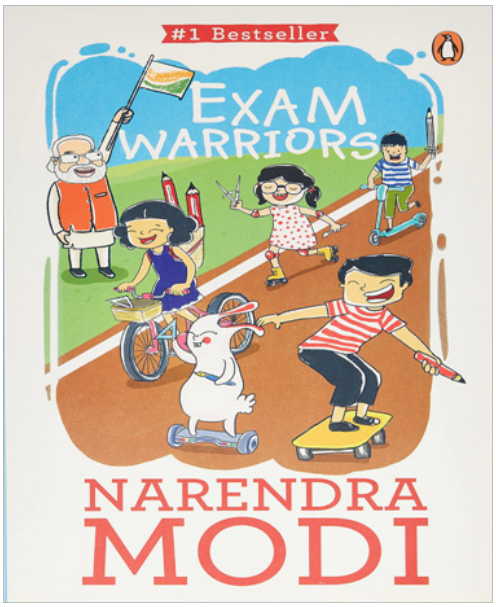

अधिकांश मुद्दों की तरह प्रधानमंत्री ने भी समग्र सार्वजनिक भागीदारी बढ़ाने और इस मुद्दे पर विविध दृष्टिकोण हासिल करने के लिए परीक्षा से संबंधित तनाव के लिए एक सोशल मीडिया आंदोलन बनाया। #StressFree-Exams के साथ, प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों से इस मुद्दे पर अपने विचार और चिंता व्यक्त करने के लिए विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग करने का आग्रह किया। परीक्षा के तनाव के संबंध में 28 फरवरी, 2021 को प्रसारित संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने पूरे दिल से एक लाख से अधिक छात्रों, लगभग 40 हजार माता-पिता और लगभग 10 हजार शिक्षकों की देशव्यापी भागीदारी का उल्लेख करते हुए, उनकी परीक्षा पे चर्चा पहल द्वारा की गई उपलब्धियों को व्यक्त किया। प्रधानमंत्री द्वारा परीक्षाओं को लेकर लगातार हो रही चर्चाओं ने उन्हें युवाओं के बीच एक लोकप्रिय शख्सियत बना दिया है। हालांकि, उनकी लोकप्रियता से अधिक यह छात्रों की मानसिकता में सुधार है, जो मायने रखता है, क्योंकि एक तनाव मुक्त युवा भारत की दीर्घकालिक राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हो सकता है।

खेल और शारीरिक स्वस्थता : भारत की खेल संस्कृति में बदलाव

हमने पिछले दो मुद्दों की अपनी चर्चा में देखा है कि प्रधानमंत्री ने फिटनेस और शारीरिक गतिविधि को जोड़ने की धारणा को लगातार रेखांकित किया है। मन की बात के दौरान प्रधानमंत्री ने इस मुद्दे के बारे में लोगों के दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास करते हुए खेल और फिटनेस पर ध्यान केंद्रित किया। जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने भी रेखांकित किया है, परंपरागत रूप से माता-पिता अपने बच्चे की पढ़ाई से ज्यादा खेल में भागीदारी को लेकर झिझकते हैं। भारतीय समाज में वर्षों से यह मानसिकता अंकित है। हालांकि, यह मानसिकता काफी हद तक त्रुटिपूर्ण है और आने वाले वर्षों में भारत की प्रगति में बाधा बन सकती है। शैक्षणिक उत्कृष्टता के सामने खेल वर्जित नहीं हैं, लेकिन देश के पारंपरिक पालन-पोषण ढांचे के कारण उन्हें इस तरह चित्रित किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं में भारत के पदक की कमी पर यूरो न्यूज के साथ एक साक्षात्कार में भारतीय खेल मनोवैज्ञानिक मधुली कुलकर्णी ने कहा, "अधिकांश भारतीय माता-पिता और उनके बच्चों के लिए खेल कभी भी प्राथमिकता नहीं रहा है।" इसके अतिरिक्त हिंदी भाषा में एक प्रसिद्ध कहावत है- "खेलोगे-कूदोगे तो होंगे खराब, पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब", जो देश में खेल के प्रति स्थापित स्वाभाविक पक्षपाती सोच को इंगित करती है। हालांकि, प्रधानमंत्री इस मानसिकता की बाधा को तोड़ने के इच्छुक थे। मन की बात के दूसरे एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री ने खेल के क्षेत्र में पदक जीतने वाले युवा खेल पेशेवरों के साथ चाय पीने का जिक्र किया। प्रधानमंत्री ने बैठक के बारे में अपनी भावनाओं को साझा किया, क्योंकि वे युवा पेशेवरों से मिलने के बाद व्यक्तिगत रूप से वास्तविक जोश और उत्साह से भरे

हुए थे। इन भावनाओं को साझा करने का प्रधानमंत्री मोदी का इरादा सरल था; वह चाहते थे कि उनकी भावनाएं पूरे देश में गूंजें और खेल, और खेल हस्तियों के प्रति सकारात्मकता की भावना पैदा करें। 2 नवंबर, 2014 को दूसरे एपिसोड में ही प्रधानमंत्री ने देश में खेल सुविधाओं की कमी पर निराशा व्यक्त की, लेकिन एथलीटों के दृढ़ संकल्प की सराहना की, जिससे यह देश की आबादी के लिए एक प्रेरक कहानी बन गई।

इसके बाद 14 दिसंबर, 2014 को तीसरी कड़ी में प्रधानमंत्री ने मादक द्रव्यों के सेवन के बारे में बात करते हुए एक सकारात्मक वैकल्पिक कथा प्रदान करने के लिए खेल को इस मुद्दे से जोड़ा। उन्होंने देश के नागरिकों से एक खिलाड़ी के उदाहरण का अनुसरण करने का अनुरोध किया, क्योंकि वे केंद्रित हैं और उनके मन में एक निर्धारित लक्ष्य है, जो उन्हें सामान्य लोगों की तुलना में अधिक अनुशासित बनाता है। प्रधानमंत्री के सुझाव से जनता ने पहली बार एथलीटों को वास्तविक रोल मॉडल के रूप में देखा। इसके अतिरिक्त 31 मई, 2015 को 8वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने खेल गतिविधियों के व्यापक क्षितिज पर चर्चा की और जनता को दिखाया कि खेल गतिविधियां शामिल एथलीट से परे हैं और समृद्ध होने के लिए उचित मानव संसाधन विकास की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने उसी संस्करण में किसी भी खेल के मुख्य पहलुओं पर जोर दिया, जो जीत और हार हैं, और देश के नागरिकों से अनुरोध किया कि वे परिणाम की परवाह किए बिना अपने एथलीटों का समर्थन करें। शुरुआती संस्करणों में प्रधानमंत्री केवल खेल और शारीरिक फिटनेस के प्रति भविष्य के दृष्टिकोण में बदलाव के बीज बो रहे थे। हालांकि, 27 मार्च, 2016 को 18वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने स्पष्ट रूप से देश में खेल और फिटनेस के प्रति अपने दृष्टिकोण की घोषणा की। प्रधानमंत्री मोदी देश की खेल संस्कृति में क्रांति लाना चाहते थे और मन की बात में इसका उल्लेख करके उन्होंने बहुत जरूरी जनभागीदारी हासिल की। इसके सफल होने के लिए लोगों की भागीदारी सर्वोपरि थी, क्योंकि लोगों की खेल और फिटनेस के प्रति एक पूर्वकल्पित धारणा थी, जिसे ऊपर हाइलाइट किया गया है। 18वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने गर्व से घोषणा की कि भारत अंडर-17 फीफा विश्व कप की मेजबानी करेगा और बाद में राष्ट्र में फुटबॉल की बढ़ती संस्कृति पर संकेत दिया। इस संबंध में उन्होंने कहा कि विश्व कप जैसे वैश्विक आयोजन की मेजबानी देश के खेल के बुनियादी ढांचे को स्थापित करने और सुधारने के प्रयासों के लिए लाभदायक हो सकती है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री मोदी ने देश के युवाओं को टूर्नामेंट के लिए ब्रांड एंबेसडर के रूप में सक्रिय रूप से सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे भारत वैश्विक मंच पर आ गया। प्रधानमंत्री मोदी ने टूर्नामेंट को एक अवसर के रूप में देखा।

खेल के विकास के प्रति प्रधानमंत्री की मंशा 2016 के बजट आवंटन के दौरान देखी गई, जिसमें नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने देश में खेल सुविधाओं के विकास को बढ़ावा देने के लिए खेल विभाग को 1592 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की। 31 जुलाई, 2016 को 22वें संस्करण में रियो ओलंपिक के करीब प्रसारित प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय एथलीटों की तैयारी को 'तपस्या' के रूप में वर्णित किया और एथलीटों को खुश करने के लिए नरेंद्र मोदी ऐप पर अपने संदेश भेजने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात के माध्यम से फिर से खेल पेशेवरों की दृढ़ता की प्रशंसा की और उनके दृढ़ संकल्प को गले लगा लिया, क्योंकि उनके अनुसार, एक खिलाड़ी होना रातोंरात का काम नहीं है और इसके लिए वास्तविक कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। हालांकि, इस बार उनकी तारीफ 2016 के रियो ओलंपिक के प्रकाश में थी, जिसका देश के मानस और इसमें शामिल एथलीटों पर अधिक स्थायी प्रभाव पड़ा। इसी तरह 28 अगस्त, 2016 मन की बात के 23वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय खेल दिवस के बदले एक एथलीट के रूप में मेजर ध्यानचंद की राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री ने नरेंद्र मोदी ऐप पर की गई जनसंख्या की मांग के आधार पर हमारी महिला एथलीटों द्वारा की गई उपलब्धियों को साझा किया, जिसमें दिखाया गया कि प्रधानमंत्री मोदी अपने परिवर्तन के दौरान सार्वजनिक भागीदारी को कैसे महत्व देते हैं। उन्होंने आगे वैश्विक खेल आयोजनों में देश के प्रदर्शन में सुधार पर जोर दिया और भविष्य की घटनाओं के लिए खेल क्षेत्र में सुधार की किसी भी गुंजाइश को देखने के लिए राज्य सरकारों से समितियों का गठन करने का आग्रह किया। इसी तर्ज पर प्रधानमंत्री मोदी ने खेल संघों को इस मुद्दे पर निष्पक्ष रूप से मंथन करने के लिए प्रेरित किया। प्रधानमंत्री के बयानों से साफ है कि प्रधानमंत्री बहुसंख्यक युवा आबादी के कारण भारत की खेल संस्कृति को फिर से ऊर्जावान बनाना चाहते थे और भारत को खेल के पायदान पर खड़ा करना चाहते थे। 25 सितंबर, 2016 को 24वीं कड़ी में प्रधानमंत्री ने दिव्यांगों (विकलांग लोगों) द्वारा हासिल

मन की बात मंच प्रधानमंत्री मोदी के भारत को एक खेल केंद्र बनाने के दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रहा है

की गई खेल उपलब्धियों को रेखांकित किया, ताकि उनके प्रति देश की संकीर्ण मानसिकता को बदला जा सके। भारतीय आबादी अक्सर अक्षम आबादी को अनावश्यक सामान के रूप में देखती है। यह मानसिकता गंभीर रूप से समस्याग्रस्त है। खेल के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों को सूचीबद्ध करके प्रधानमंत्री ने एक वैकल्पिक कथा की शुरुआत की, जो उन्हें एक बहुत ही योग्य सकारात्मक प्रकाश में चित्रित करती है। Paralympics ने निश्चित रूप से विशेष रूप से विकलांगों को अपने कौशल को चमकाने और अपनी प्राकृतिक प्रतिभा को दिखाने के लिए सामान्य चर्चा का हिस्सा बनने के लिए एक सजा-सजाया मंच दिया है। प्रधानमंत्री द्वारा अनिवार्य रूप से इसे मान्यता दी गई थी।

भारत के खेल उद्योग को प्रधानमंत्री मोदी की नजर में बड़े पैमाने पर उछाल की जरूरत है, क्योंकि भारत एक युवा राष्ट्र है। मन की बात देश के नवोदित युवाओं को प्रेरित करने के लिए अनिवार्य रूप से प्रधानमंत्री के लिए एक मंच बन गई है, जिसमें प्रधानमंत्री ने युवाओं को उनकी क्षमताओं की याद दिलाई है और उन्हें खेल के क्षेत्र सहित विभिन्न व्यवसायों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया है। उन्होंने 27 अगस्त, 2017 को 35वें संस्करण में युवाओं को खेलों द्वारा विकसित मुख्य विशेषताओं की याद दिलाई, जिसमें शारीरिक फिटनेस, मानसिक सतर्कता और व्यक्तित्व वृद्धि शामिल है। प्रधानमंत्री मोदी ने युवाओं को खेलों के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान किया और उनसे खेल बिरादरी को आगे बढ़ाने की अपील की। खेल और शारीरिक फिटनेस के लिए प्रधानमंत्री द्वारा किए गए अनगिनत प्रयासों की सूची में देश में मौजूद युवा प्रतिभाओं को तराशने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया स्पोर्ट्स टैलेंट सर्च पोर्टल एक मूल्यवान मंच है। पोर्टल इच्छुक उम्मीदवारों को, उभरती प्रतिभाओं को अपनी पहचान बनाने के लिए अपना बायोडाटा या वीडियो अपलोड करने की अनुमति देता है।

हालांकि, प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण केवल देश की खेल संस्कृति को बदलने तक ही सीमित नहीं था। प्रधानमंत्री मोदी लोगों की सामान्य फिटनेस को लेकर भी चिंतित थे। इसी एजेंडे को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री ने 25 अगस्त, 2019 को मन की बात के 56वें संस्करण के दौरान फिट इंडिया मूवमेंट की घोषणा की थी। इस आंदोलन के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी आबादी के बीच सामान्य फिटनेस की एक प्रथा को विकसित करना चाहते थे, जिसमें भारतीय आबादी सालभर फिट रहने के लिए स्वयं पहल करती है। फिट इंडिया की छत्रछाया में प्रधानमंत्री ने रन फॉर यूनिटी अभियान की भी घोषणा की, जिसमें उन्होंने व्यापक फिटनेस के विचार को बढ़ावा देने के लिए आयोजित राज्यव्यापी मैराथन में भाग लेने के लिए देश के नागरिकों को प्रोत्साहित किया। इस संबंध में प्रधानमंत्री मोदी ने दौड़ने के लाभों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे इस गतिविधि का न केवल शरीर पर, बल्कि मन और आत्मा पर भी प्रभाव पड़ता है।

इसके बाद 24 नवंबर, 2019 को 59वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने फिट इंडिया वीक पर ध्यान आकर्षित किया, जिसकी शुरुआत केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने की थी। सप्ताह में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां शामिल थीं, जैसे क्विज़, निबंध, लेख, पेंटिंग, पारंपरिक और स्थानीय खेल, योग, नृत्य और खेल प्रतियोगिताएं। सप्ताह ने माता-पिता और शिक्षकों से भी भागीदारी की। पहल को अधिक लाभकारी बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की कि फिट इंडिया वीक के दौरान उनकी प्रगति के आधार पर स्कूलों की रैंकिंग के लिए एक प्रणाली विकसित की जाएगी। इस रैंकिंग को हासिल करने वाले सभी स्कूल फिट इंडिया के लोगो और झंडे का इस्तेमाल भी कर सकेंगे। फिट इंडिया पोर्टल पर जाकर स्कूल खुद को फिट घोषित कर सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी इसे एक जन-आंदोलन बनाने और भारत को एक फिट देश बनाने के इच्छुक थे। इस प्रकार उन्होंने सक्रिय रूप से देश के नागरिकों से इस प्रक्रिया का हिस्सा बनने का आग्रह किया। फिट इंडिया आंदोलन का उद्देश्य सामान्य फिटनेस की शुरुआत करके भारत के खेल क्षेत्र को दूसरे स्तर पर ले जाना था, क्योंकि देश की समग्र फिटनेस का खेल क्षेत्र के साथ-साथ अन्य संबंधित समस्याओं पर सीधा प्रभाव पड़ेगा। फिट इंडिया आंदोलन की शुरुआत करते हुए भी प्रधानमंत्री मोदी ने आंदोलन को असीमित रिटर्न के साथ शून्य-निवेश पहल होने का दावा किया। फिट इंडिया अभियान में जन-भागीदारी के साथ प्रधानमंत्री के प्रयासों के शानदार परिणाम सामने आए हैं, क्योंकि 2020 में प्रसारित मन की बात के 61वें संस्करण में 65,000 स्कूलों को फिट इंडिया सर्टिफिकेट मिले हैं।

फिट इंडिया मूवमेंट की तरह प्रधानमंत्री मोदी ने खेलो इंडिया गेम्स को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। खेलो इंडिया गेम्स 2018 में लॉन्च किए गए थे। खेलों के प्रति लोगों के रवैये को बदलकर प्रधानमंत्री उभरती युवा प्रतिभाओं को पोषित करने वाले खेलो इंडिया गेम्स के लिए अधिकतम युवा भागीदारी को आकर्षित करने में कामयाब रहे। 26 जनवरी, 2020 को मन की बात के 61वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने आयोजन में बढ़ती भागीदारी को रेखांकित किया, क्योंकि खेलों में भागीदारी संख्या तीन साल की समय सीमा के भीतर दोगुनी हो गई। इसके अलावा, इसी कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने भाग लेने वाले बच्चों और उनके माता-पिता के धैर्य और दृढ़ संकल्प की भी सराहना की, जो आगे प्रोत्साहन के लिए बीज बो रहे थे। खेलो इंडिया के जनादेश के परिणामस्वरूप देश में खेल के क्षेत्र में शानदार विकास हुआ है। खेलो इंडिया के माध्यम से युवा मामले और खेल मंत्रालय (MYAS) ने ओडिशा, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और केरल में स्थित आठ खेलो इंडिया स्टेट सेंटर ऑफ एक्सीलेंस लॉन्च किए हैं। केंद्र संबंधित राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे हैं और युवा एथलीटों को कोच और प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त, खेलो इंडिया गेम्स ने भविष्य के ओलंपिक खेलों के लिए युवाओं को एक मजबूत मंच भी प्रदान किया है। 2018 यूथ ओलंपिक के नतीजे इसका सबूत हैं। भारत ने इस आयोजन में 3 स्वर्ण, 9 रजत और 1 कांस्य सहित प्रभावशाली 13 पदक जीते। खेलो इंडिया गेम्स के और विस्तार के लिए स्पोर्ट्स फॉर ऑल ने अगले पांच वर्षों के दौरान 12.5 करोड़ रुपये का निवेश करके खेलो इंडिया के साथ हाथ मिलाया है। फिट इंडिया मूवमेंट और खेलो इंडिया के अलावा, प्रधानमंत्री ने आबादी के बीच पारंपरिक भारतीय खेलों को बढ़ावा देकर खेल संस्कृति को बदलने का भी प्रयास किया है। 25 अक्टूबर, 2020 को मन की बात के 70वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने मलखंब के खेल के दुनियाभर में लोकप्रिय होने का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिका में इसकी बढ़ती लोकप्रियता की ओर ध्यान आकर्षित किया और कहा कि यह खेल अब जर्मनी, पोलैंड, मलेशिया और बीस अन्य देशों में फैल गया है। प्रधानमंत्री के खेल के उल्लेख के साथ मलखंब जैसे पारंपरिक खेल देश में पुनरुत्थान की भावना देख सकते हैं।

28 फरवरी, 2021 को 74वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने स्पोर्ट्स कमेंट्री के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने संकेत दिया कि स्पोर्ट्स कमेंट्री सुनना अपने आप में एक अनुभव है और इससे जो आभा बनती है, वह अतुलनीय है। प्रधानमंत्री ने विभिन्न प्लेटफार्मों पर इन खेलों को बढ़ावा देने के लिए देश के स्थानीय खेलों में भी कमेंट्री करने पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने विविधता को आगे बढ़ाने के लिए स्पोर्ट्स कमेंट्री को विभिन्न भारतीय भाषाओं में होने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री द्वारा उद्धृत यह विशेष कथा इस बात को रेखांकित करती है कि कैसे प्रधानमंत्री खेल क्षेत्र के हर पहलू को अपनाने के इच्छुक हैं और एक एकीकृत खेल वातावरण विकसित करना चाहते हैं।

28 मार्च, 2021 को मन की बात के 75वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने खेल के क्षेत्र में हमारी भारतीय बेटियों की

उपलब्धियों को दोहराया। प्रधानमंत्री ने मन की बात के दौरान महिला खेल पेशेवरों द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों को लगातार रेखांकित किया है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक महिला एथलीट और महिला सशक्तिकरण के लिए एक अतिरिक्त उपकरण के रूप में काम कर रही हैं। 29 अगस्त, 2021 को मन की बात के 80वें संस्करण में प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया सकारात्मक दृष्टिकोण खेल संस्कृति के मामले में अपने चरम पर पहुंच गया। इसी एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने ओलंपिक और पैरालंपिक स्पर्धाओं में भारतीय एथलीटों के प्रदर्शन पर एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ओलंपिक में हमारा प्रदर्शन भले ही दुनिया की तुलना में अच्छा नहीं रहा हो, लेकिन निश्चित रूप से पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव आया है, जो भविष्य में दिखाई देगा। प्रधानमंत्री मोदी ने परिणामों और घटनाओं की श्रृंखला को कुछ ऐसा बताया, जो भविष्य में खेल के प्रति देश के प्रत्येक नागरिक के विश्वास को मजबूत करे। इसी संदर्भ में उन्होंने 'सबका प्रयास' के अपने विचार को दोहराया, जो सामूहिक प्रयास के माध्यम से भारत को खेल के क्षेत्र में गौरवशाली ऊंचाइयों को प्राप्त करने में मदद करेगा। प्रधानमंत्री ने मेजर ध्यानचंद द्वारा रखी गई नींव को आगे बढ़ाने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने देश को बधाई दी, क्योंकि लंबे समय के बाद पूरा देश खेल और शारीरिक फिटनेस के प्रति एकनिष्ठ हो गया है। देश के खेल के बुनियादी ढांचे को विकसित करने का प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण सबसे अलग-थलग क्षेत्रों तक पहुंचा लद्दाख में ओपन सिंथेटिक ट्रैक और एस्ट्रो टर्फ फुटबॉल स्टेडियम के विकास के साथ। 30 जनवरी, 2022 को मन की बात के 85वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने इसका उल्लेख किया। स्टेडियम फीफा द्वारा प्रमाणित है और इसमें 30,000 दर्शकों के बैठने की क्षमता है। प्रधानमंत्री के अनुसार, स्टेडियम क्षेत्र में पर्यटन, रोजगार और युवा विकास के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करेगा। अतीत में कई सरकारें आईं और चली गईं, पर इस क्षेत्र की उपेक्षा की।

प्रत्येक एपिसोड बीतने के साथ प्रधानमंत्री मोदी ने देश की खेल संस्कृति को बदलने के बारे में अपने भाव को मजबूत किया। 30 अक्टूबर, 2022 को 94वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने 'जुड़ेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया' थीम के साथ राष्ट्रीय खेलों के बारे में बात की। भारत की एकता से उभरती ताकत का संकेत दिया। 2022 में आयोजित राष्ट्रीय खेल अब तक के सबसे बड़े थे और इसमें हमारी राष्ट्रीय विरासत को बढ़ावा देने के लिए पारंपरिक भारतीय खेल शामिल थे। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, मलखंभ जैसे भारतीय पारंपरिक खेलों ने देश के साथ-साथ दुनिया भर में प्रमुखता प्राप्त करना शुरू कर दिया है। भारतीय पारंपरिक खेलों को और बढ़ावा देने के लिए मन की बात के दौरान प्रधानमंत्री ने 2022 खेलो इंडिया, यूथ गेम्स और राष्ट्रीय खेल का जिक्र किया। राष्ट्रीय खेलों में योगासन और मल्लखंब को शामिल किया गया, जबकि खेलो इंडिया यूथ गेम्स में गतका, थांग-ता, योगासन, कलरीपयट्टू और मल्लखंब शामिल हुए। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात के माध्यम से निश्चित रूप से

पीएम मोदी देश के ओलंपिक और पैरालंपिक एथलीटों को प्रोत्साहित कर रहे हैं

एक पहल की है, उस चर्चा बिंदु पर, जिसे अक्सर देश में नजरअंदाज कर दिया गया था। एक विकासशील देश के रूप में एक वैश्विक शक्ति बनने का लक्ष्य रखते हुए यह अनिवार्य है कि भारत संभावित उछाल वाले क्षेत्रों पर ध्यान दें। भारत के युवाओं के साथ खेल क्षेत्र निश्चित रूप से संभावित उछाल का क्षेत्र है। इसके अलावा, देश की खेल संस्कृति को बदलने से न केवल व्यापक विकास का मार्ग प्रशस्त होगा, बल्कि देश को अंतरराष्ट्रीय गौरव भी मिलेगा। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने वास्तव में देश की खेल संस्कृति में एक सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रेरित किया है। पैरालंपिक, ओलंपिक और यूथ ओलंपिक खेलों में भारतीय एथलीटों के प्रदर्शन का हालिया चलन इसका निश्चित प्रमाण है।

कोविड : भारत को विश्वव्यापी महामारी से लड़ने में सक्षम बनाना

प्रधानमंत्री मोदी की मन की बात राष्ट्र के लिए एक एकीकृत कारक के रूप में उभरी, खासकर कोविड-19 के प्रकोप के दौरान। मंच पर अपने संबोधन के माध्यम से प्रधानमंत्री ने न केवल आबादी के प्रयासों पर प्रकाश डाला, बल्कि देशव्यापी महामारी के प्रति आबादी के बीच लचीलेपन की भावना भी पैदा की। प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र से एक साथ रहने और सामूहिक रूप से एक राष्ट्र के रूप में कोविड-19 की लड़ाई लड़ने का आग्रह किया।

मन की बात के दौरान कोविड-19 के मुद्दे पर अपने पहले ही संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने देश के नागरिकों, विशेष रूप से वंचितों से माफी मांगी, क्योंकि देशव्यापी तालाबंदी ने कई आर्थिक गतिविधियों को बाधित कर दिया, जिससे पूरे देश में कई लोगों की आजीविका प्रभावित हुई। भले ही महामारी के दुष्प्रभावों को रोकने के लिए देशव्यापी तालाबंदी आवश्यक थी, लेकिन प्रधानमंत्री ने राष्ट्र से माफी मांगी, क्योंकि उन्होंने देश के नागरिकों के प्रति अपनी सहानुभूति और भावनाओं को प्रदर्शित करते हुए खुद को इस परिदृश्य के लिए जिम्मेदार देखा। लॉकडाउन के महत्व को उजागर करने के लिए, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात में कहा, "इवान एवम विकार, अपि तरुन्हा साध्यते सुखम," यानी बीमारी और इसके प्रकोप से शुरुआत से ही निपटा जाना चाहिए। इसलिए कोविड-19 वायरस के प्रभाव को कम करने के लिए लॉकडाउन लागू करना अत्यावश्यक था। 29 मार्च, 2022 को 63 वीं कड़ी के दौरान प्रधानमंत्री ने फ्रंटलाइन सैनिकों द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की, क्योंकि वे कोविड-19 के प्रकोप के बीच लगातार काम कर रहे थे। इन अग्रिम पंक्ति के सैनिकों में नर्स, डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ शामिल थे। उनकी प्रशंसा से परे प्रधानमंत्री ने इन फ्रंटलाइन वर्कर्स के लिए 50 लाख रुपये के बीमा कवर की भी घोषणा की, क्योंकि वे अपनी जान जोखिम में डाल रहे थे ताकि हममें से ज्यादातर लोग रात में बेफिक्र होकर सो सकें। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात के माध्यम से महामारी के खिलाफ एहतियाती उपायों पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने अनावश्यक ब्रेकआउट से बचने के लिए घर पर रहने के महत्व के साथ-साथ सामाजिक दूरी के विचार को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय आबादी को समझाया कि कोविड-19 के संदर्भ में सामाजिक दूरी का मतलब सामाजिक संपर्क को तोड़ना नहीं है, बल्कि इसका मतलब केवल अनावश्यक शारीरिक संपर्क से बचना है। प्रधानमंत्री ने लोगों से सोशल डिस्टेंसिंग बढ़ाने और पुराने सामाजिक रिश्तों को मजबूत करने पर फोकस करते हुए इमोशनल डिस्टेंसिंग कम करने का आग्रह किया। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने यह भी बताया कि कैसे महामारी के दौरान नागरिक के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अन्य नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करें, भले ही हमारे पास कोविड-19 के मामूली लक्षण हों। प्रधानमंत्री अपने मन की बात के माध्यम से, भारतीय समाज को कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिए एकत्रित करना चाहते थे।

स्रोत: इंडिया टुडे

महामारी के प्रति एकता की भावना पैदा करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 26 अप्रैल, 2020 को 64वें संस्करण में

इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे प्रत्येक नागरिक अपने तरीके से वायरस से लड़ने में योगदान दे रहा है। कोई किराया माफ कर रहा है तो कोई अपनी पूरी पेंशन या पुरस्कार राशि प्रधानमंत्री केयर्स में जमा कर रहा है। कोई खेत की सारी सब्जियां दान कर रहा है तो कोई रोजाना सैकड़ों गरीबों को मुफ्त भोजन करा रहा है। कोई मास्क बना रहा है तो कहीं हमारे मजदूर क्वारंटाइन में रहकर जिस स्कूल में रह रहे हैं, उसकी रंगाई-पुताई कर रहे हैं. इस एकता और सामूहिकता की भावना के साथ, प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में देश के सभी नागरिकों को कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाले सैनिकों के रूप में माना, देशव्यापी महामारी के बीच राष्ट्र के भरण-पोषण में योगदान दिया। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में जनता की भागीदारी बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने covid-warriors.gov.in के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी प्रकाश डाला, जिसमें नागरिक स्वयं को स्वयंसेवकों के रूप में पंजीकृत कर सकते हैं और कोरोना के खिलाफ देश की लड़ाई में योगदान दे सकते हैं। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने स्थानीय स्तर पर उनके प्रबंधन कौशल और योजना के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में इन कोविड योद्धाओं के प्रयासों का उल्लेख किया। अपने मन की बात के इसी संस्करण के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने महामारी के दौरान नागरिकों की मदद करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार की कई पहलों का भी हवाला दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने इन योजनाओं को लेकर चर्चा की, जिससे वायरस के चरम पर होने के दौरान भी नागरिकों को आश्वस्त किया जा सके कि उनके दैनिक कामकाज बाधित नहीं होंगे। इस संबंध में प्रधानमंत्री ने गरीबों के लिए मुफ्त गैस और राशन के साथ-साथ लाइफलाइन उड़ान और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज का हवाला दिया। लाइफलाइन उड़ान के जरिए प्रधानमंत्री ने देश के हर हिस्से में दवाओं की डिलीवरी सुनिश्चित की। उन्होंने आगे कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से देश के कोने-कोने में 500 टन से अधिक चिकित्सा सामग्री पहुंचाई गई है। इसी तरह रेलवे भी लॉकडाउन के दौरान लगातार मेहनत कर रहा है, ताकि देश के आम लोगों को आवश्यक वस्तुओं की कमी का सामना न करना पड़े। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस उद्देश्य के लिए भारतीय रेलवे 60 से अधिक रेल मार्गों पर 100 से अधिक पार्सल ट्रेनें चला रहा है।

फ्रंटलाइन वर्कर्स की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात में फ्रंटलाइन वर्कर्स की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पारित अध्यादेश के बारे में बात की। प्रधानमंत्री ने नागरिकों को समझाया कि अध्यादेश के तहत हिंसा, उत्पीड़न और किसी भी तरह से चोट पहुंचाने वाले कोरोना योद्धाओं के खिलाफ बहुत सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। यह कदम हमारे डॉक्टरों, नर्सों, पैरामेडिकल स्टाफ, सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मियों और ऐसे सभी लोगों की सुरक्षा के लिए जरूरी था, जो देश को 'कोरोना मुक्त' बनाने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। महामारी के बीच अपने मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री ने नागरिकों को यह भी दिखाया कि कोविड-19 वायरस के कारण विभिन्न मामलों पर हमारी चेतना और जागरूकता फिर से बढ़ी है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री ने मास्क पहनने, फल खरीदने वाले लोगों, अपने पड़ोसियों की जांच करने और खुले में थूकने में भारी कमी के महत्व के बारे में बात की। 26 अप्रैल, 2020 को 64 वें संस्करण में ही प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की भी प्रशंसा की और भारतीय आबादी के लिए घोषणा की कि भारत दुनिया के हर जरूरतमंद देश को दवा वितरित करेगा। प्रधानमंत्री की इस घोषणा ने सीधे तौर पर भारत की सेवा शक्ति का महिमामंडन किया। भारत की संस्कृति पर और जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने 31 मई, 2020 को मन की बात के अपने 65वें संबोधन में योग के अभ्यास पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री मोदी ने उल्लेख किया कि कैसे विदेशी नेता उनके साथ बातचीत कर रहे हैं ताकि कोविड -19 वायरस से निपटने के लिए योग के अनुप्रयोग को समझा जा सके। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के माध्यम से भारतीय नागरिकों को योग के लाभों के बारे में जागरूक किया और कैसे कुछ योग अभ्यास क्रोनी वायरस से निपटने में महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। इसके अलावा, मन की बात के 99वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने देश में कोरोना के बढ़ते मामलों पर बात की और नागरिकों से कोरोना के प्रसार को रोकने और आसपास के क्षेत्र को साफ रखने के लिए आवश्यक सावधानी बरतने का आग्रह किया।

इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात के दौरान कोरोना के संबंध में भारतीय नागरिकों के प्रयासों का उल्लेख किया। कई लोगों ने अपने दम पर कई पहल की, जिसे प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात के विभिन्न संस्करणों में उजागर किया। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री का मानसिकता में सुधार लाने का प्रयास इस बात से स्पष्ट होता है कि अब भारतीय नागरिक सरकार की पहलों की प्रतीक्षा करने के बजाय स्वयं पहल कर रहे

है और यह नागरिकों के बदलते नजरिये का प्रमाण है। यहां तक कि प्रधानमंत्री ने इन पहलों की सराहना भी की, क्योंकि इन स्वयं की पहलों ने सरकारी योजनाओं का पूरक बनाया और स्थानीय स्तर पर बदलाव लाया। महामारी के दौरान देश ने वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात से प्रभावित स्थानीय नायकों के उदय को देखा।

दिव्यांगों के प्रति भारतीय मानसिकता में बदलाव : समावेशिता की ओर एक कदम

मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने उन विभिन्न मुद्दों को छुआ है, जिन्हें अक्सर आम जनता के साथ चर्चा में उपेक्षित किया जाता था। ऐसा ही एक मुद्दा भारतीय आबादी द्वारा विकलांगों को दिया जाने वाला उपचार था। विशेष रूप से सक्षम आबादी को अक्सर हीन दृष्टि से देखा जाता है, और भारतीय आबादी की उनके प्रति एक निर्धारित मानसिकता है। इस मानसिकता को तोड़ना अत्यंत आवश्यक था। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में विकलांग लोगों की आबादी 26.8 मिलियन है। प्रतिशत के संदर्भ में यह कुल जनसंख्या का 2.21 प्रतिशत है। प्रधानमंत्री मोदी अपने मन की बात मंच के माध्यम से इस अंतर्मुखी मानसिकता को बदलना चाहते थे, क्योंकि उन्होंने भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग को समान दृष्टि से देखा। 26 जुलाई, 2015 को मन की बात की 10वीं कड़ी के दौरान प्रधानमंत्री ने विकलांग आबादी की बेहतरी के लिए श्री अखिलेश द्वारा दिए गए एक सुझाव पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने सिर्फ उनके सुझाव को हाईलाइट ही नहीं किया, बल्कि उस पर अमल भी किया। सुझाव था कि आईआरसीटीसी से टिकट बुक करने के लिए विकलांगों के लिए अलग कोटा बनाया जाए। प्रधानमंत्री ने इस मुद्दे को रेखांकित करते हुए कहा कि दिया गया सुझाव उल्लेखनीय है, क्योंकि आईआरसीटीसी से टिकट बुक करने की थकाऊ प्रक्रिया में विकलांगों को खड़ा नहीं होना चाहिए। यह उदाहरण दर्शाता है कि प्रधानमंत्री मोदी समाज के हर वर्ग के बारे में चिंतित हैं और उनकी बेहतरी के लिए लोगों की भागीदारी को महत्व देते हैं। 27 दिसंबर, 2015 को 15वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने अहमदाबाद के एक नेत्रहीन शिक्षक के अपने स्कूल में 'एक्सेसिबल इंडिया डे' मनाने के प्रयासों की सराहना की। प्रधानमंत्री ने पूरे देश के लिए अपना संदेश पढ़ा, अपने प्रयासों को प्रदर्शित किया और लोगों को इस बात से अवगत कराया कि कैसे विकलांग बच्चों के लिए प्रेरक कारक के रूप में काम कर रहे हैं और उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्गदर्शन कर रहे हैं। उसी पर आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री ने फिर लोगों को समझाया कि हम जिन शब्दों का उपयोग करते हैं, उनके अर्थ भी हमारी मानसिकता के आधार पर होते हैं। उन्होंने उदाहरण दिया कि जब हम विकलांग लोगों को देखते हैं, तो हमारे दिमाग में अलग-अलग शब्द कैसे आते हैं। हालांकि, इनमें से अधिकांश शब्दों का एक नकारात्मक अर्थ जुड़ा हुआ है, जो विकलांग आबादी की सार्वजनिक छवि को खराब करता है। प्रधानमंत्री इस मुद्दे के बारे में गहराई से चिंतित थे और भारतीय आबादी के बीच इसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करना चाहते थे। इसे ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री ने भारतीय नागरिकों को ठीक किया और इस धारणा के आधार पर विचार की एक श्रृंखला शुरू की कि विकलांग आबादी के पास कुछ विशेष हो सकता है, यदि वे स्वाभाविक रूप से किसी अंग या किसी प्रकार की विकृति से वंचित हैं। 15वें एपिसोड के दौरान ही प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के लोगों से विकलांग आबादी को उनकी विकलांगता को देवत्व से जोड़कर "दिव्यांग" के रूप में संदर्भित करने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा प्रोत्साहित मानसिकता उनकी नैतिकता के बारे में बहुत कुछ बताती है और वह कैसे चाहते हैं कि देश के सभी नागरिक अपने समकक्षों को समान रूप से देखें ताकि एक अधिक एकीकृत भारतीय समाज की स्थापना हो सके। इसे एक जन-आंदोलन बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने लोगों से इस शब्द को लोकप्रिय बनाने और पहले से स्थापित अंतर्मुखी मानसिकता को नष्ट करने का अनुरोध किया।

भारतीय आबादी की पारंपरिक मानसिकता को तोड़ने के अलावा, प्रधानमंत्री मोदी यह भी चाहते थे कि 'दिव्यांग' आबादी सशक्त महसूस करे और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखे। इसके लिए प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात के दौरान घोषणा की कि सरकार अपने 'एक्सेसिबल इंडिया' अभियान के तहत 'दिव्यांगों' के लिए भौतिक और आभासी दोनों बुनियादी ढांचे में सुधार करेगी और उन्हें इन लोगों के लिए सुलभ बनाएगी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस संबंध में जनभागीदारी को भी प्रेरित किया और भारतीय नागरिकों से अपने तरीके से योगदान देने का अनुरोध किया। मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा शुरू किया गया सुगम्य भारत अभियान विशेष रूप से सक्षम आबादी के जीवन को बदलने में आवश्यक रहा है। इस अभियान के तहत 1630 सरकारी भवनों को सुगम्य बनाया गया है।

इसके अलावा, 'दिव्यांग' आबादी की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए, हवाई अड्डों, मेट्रो स्टेशनों और रेलवे स्टेशनों में भी सुधार किया गया है। सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भी उनकी सुविधा के लिए बदलाव आया है। 627 राज्य सरकार की वेबसाइटों और 95 केंद्र सरकार की वेबसाइटों को सुलभ बनाया गया है, और सरकार ने इसी उद्देश्य के लिए 1500 से अधिक सांकेतिक भाषा दुभाषियों को प्रशिक्षित भी किया है। इस प्रकार प्रधानमंत्री और केंद्र सरकार ने मन की बात मंच से परे 'दिव्यांग' आबादी की बेहतरी के लिए सकारात्मक रूप से काम किया है और भारतीय आबादी द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर अपने जनादेश को आगे बढ़ाया है। इसके अलावा 25 सितंबर, 2016 को मन की बात के 24वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात में केंद्र सरकार द्वारा आयोजित दिव्यांगों के लिए मेगा कैंप पर भी प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री मोदी ने इस आयोजन का उल्लेख करते हुए विशेष रूप से सक्षम आबादी द्वारा की गई स्मारकीय उपलब्धियों का संकेत दिया, क्योंकि अभियान के दौरान कई विश्व रिकॉर्ड स्थापित किए गए थे। देश में दिव्यांग आबादी की क्षमताओं को रेखांकित करते हुए एक ही दिन में तीन विश्व रिकॉर्ड स्थापित किए गए। प्रधानमंत्री ने एक सकारात्मक नेता के रूप में दिव्यांग देशवासियों की इन उपलब्धियों को गले लगाया और लोगों के बीच प्रेरणा का बीज बोया। इसके अलावा, 29 नवंबर, 2015 को 14वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने विशेष रूप से सक्षम समुदाय के भीतर से उनके जीवन की भावना की प्रशंसा करते हुए रोल मॉडल की ओर इशारा किया। प्रधानमंत्री ने इन रोल मॉडल्स पर प्रकाश डालते हुए 'दिव्यांग' आबादी के लिए एक सकारात्मक वातावरण बनाने का प्रयास किया, क्योंकि रोल मॉडल्स के पास पूरे देश के लिए सीखने की प्रेरक यात्रा थी। इसके अतिरिक्त, 25 सितंबर, 2016 को 24वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने पैरालंपिक खेलों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने का आह्वान किया, जिसमें उन्होंने देश का नाम रोशन करने के लिए विशेष रूप से सक्षम एथलीटों की सराहना की। इसी तर्ज पर 49वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने पैरा एशियाई खेलों में पदक जीतने वाले एथलीटों को बधाई दी। 2018 पैरा एशियाई खेलों में विशेष रूप से सक्षम एथलीटों ने एक अभूतपूर्व रिकॉर्ड स्थापित करते हुए 72 पदक जीते। प्रधानमंत्री मोदी ने उनकी खेल उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए, विशेष रूप से विकलांग एथलीटों को एक नियमित घरेलू नाम बना दिया, उन्हें अलगाव से बाहर निकाल दिया।

IRCTC के विशेष कोटे से लाभ पाने वाले एक दिव्यांग की दिल को छू लेने वाली तस्वीर

प्रधानमंत्री मोदी खुद विकलांग आबादी के अधिकारों को सुरक्षित करना चाहते थे और उस सम्मान का सम्मान करना चाहते थे जिसके वे हकदार हैं। इसी सोच को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री ने खुद उनकी बेहतरी के लिए प्रयास किया। ऊपर हाइलाइट किए गए केंद्र सरकार के अभियानों को छोड़कर, प्रधानमंत्री ने उनके समावेश को बढ़ावा देने के लिए कई विधायी बदलाव भी शुरू किए। 25 दिसंबर, 2016 को 27वें एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने केंद्र सरकार की नौकरियों में दिव्यांग आबादी के लिए आरक्षण बढ़ाने की ओर इशारा किया। विकलांगों के लिए रोजगार के अधिक अवसर सुनिश्चित करने के लिए आरक्षण को 3 प्रतिशत से बढ़ाकर 4 प्रतिशत कर दिया गया। इसके अलावा, उन्हें लंबे समय से अपेक्षित न्याय और समानता प्रदान करने के लिए मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने 'दिव्यांग कोटा' के तहत नई श्रेणियों को शामिल किया, जिसमें संख्या सात से बढ़ाकर कुल इक्कीस कर दी गई। बढ़ी हुई श्रेणियां संयुक्त राष्ट्र के जनादेश को ध्यान में रखते हुए डिजाइन की गई थीं। इसी एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी घोषणा की कि भाजपा सरकार ने सत्ता में आने के बाद 2014 से 2017 के बीच दिव्यांगों के लिए 5,500 अभियान चलाए हैं। दिव्यांगों के जीवन को बदलने की दिशा में प्रधानमंत्री मोदी की प्रतिबद्धता को

केंद्र द्वारा की गई पहलों के माध्यम से निरंतर आश्वासन मिला है। इस मुद्दे के प्रति प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता का एक वसीयतनामा 28 फरवरी, 2018 को प्रसारित मन की बात के 41 वें संस्करण में दिखाई दिया, जिसमें प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिक समुदाय से एक ऐसी प्रक्रिया स्थापित करने का आग्रह किया, जिसके माध्यम से दिव्यांग आबादी की मदद के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जा सके। प्रधानमंत्री के समग्र दृष्टिकोण की एक झलक 23 फरवरी, 2020 को 62वें एपिसोड में देखने को मिली, जब हुनर हाट में एक दिव्यांग महिला ने अपने जीवन को बदलने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया, क्योंकि उनकी पेंटिंग्स को हुनर हाट के माध्यम से एक मंच मिला; पहले वह अपनी पेंटिंग फुटपाथ पर बेचती थीं। इसी संदर्भ में प्रधानमंत्री ने मुरादाबाद के सलमान के प्रयासों की सराहना की, जिन्होंने अपने व्यवसाय के माध्यम से अपने जैसे दिव्यांगों के लिए रोजगार और प्रशिक्षण सुनिश्चित किया। इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री मोदी के ध्यान के परिणामस्वरूप दिव्यांगों को आश्चर्यजनक उपलब्धियां मिलीं, जिन्हें मन की बात के बाद के संस्करणों में उजागर किया गया था। 26 सितंबर, 2021 को 81वें संस्करण में प्रधानमंत्री ने सहर्ष आठ दिव्यांगों की उपलब्धि की घोषणा की, जिन्होंने सियाचिन ग्लेशियर पर 15,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर स्थित कुमार पोस्ट पर भारतीय ध्वज फहराया। उत्तर प्रदेश में एक स्कूल के प्रिंसिपल ने दिव्यांग बच्चों को आस-पास के गांवों में ढूंढ़कर और उन्हें स्कूलों में प्रवेश देकर शिक्षित करने के लिए एक अनूठी पहल शुरू की। पहल को "वन टीचर, वन कॉल" नाम दिया गया था। ये दो उदाहरण स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कैसे पहले के संस्करणों में प्रधानमंत्री के संबोधन ने एक पुनर्जीवन कारक के रूप में काम किया जिसने दिव्यांग आबादी के छिपे हुए आंतरिक विश्वासों को प्रज्वलित किया, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण उपलब्धियां मिलीं।

जैसा कि पहले हाइलाइट किया गया था, पिछले संस्करणों में प्रधानमंत्री ने दिव्यांगों की बेहतरी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और तकनीक का उपयोग करने की बात कही थी। 24 अप्रैल, 2022 को 88वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ ऐसा ही किया था। प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि कैसे वर्तमान में प्रौद्योगिकी दिव्यांग आबादी के लिए एक संबल के रूप में काम कर रही है, जिससे उनका जीवन आसान हो गया है। इसी एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री ने तकनीक के क्षेत्र में एक ऐसे संगठन का जिक्र किया जिसने दिव्यांग आबादी की मदद की। 'वॉयस ऑफ द स्पेशली एबल्ड पॉपुलेशन' नाम की एक संस्था सहायक तकनीक के क्षेत्र में नए अवसरों को बढ़ावा दे रही है। संगठन ने दिव्यांगों द्वारा बनाए गए चित्रों की एक डिजिटल आर्ट गैलरी बनाई है, जो उनकी कला को एक बहुत ही आवश्यक मंच प्रदान करती है। प्रधानमंत्री ने इस संदर्भ में दिव्यांगों की प्रतिभाओं की भी सराहना की। अभियानों, पहलों और दिव्यांगों को प्रधानमंत्री मोदी के लगातार संबोधन ने निश्चित रूप से दिव्यांगों से जुड़ी भारतीय मानसिकता को बदल दिया है। दिव्यांग आबादी खुद को सशक्त, आत्मनिर्भर और भारतीय समाज में शामिल महसूस करती है। इसके अलावा, समग्र रूप से भारतीय समाज ने उनके दर्द को समझा है और उनकी मदद के लिए खुद ही कदम उठाए हैं। यह और कुछ नहीं बल्कि एक सामूहिक भारतीय समाज की एक झलक है जिसमें सभी वर्ग शामिल और सशक्त महसूस कर रहे हैं। हाल ही में 29 जनवरी, 2023 को 97वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री ने दिव्यांग आबादी के लिए एक और बड़ी घोषणा की। प्रधानमंत्री ने दिल खोलकर गोवा में हुए

पर्पल फेस्ट की बात की। महोत्सव में पचास हजार से अधिक दिव्यांग भाई-बहनों ने शिरकत कर इसकी भव्यता का परिचय दिया। इस फेस्टिवल में दिव्यांगों को प्रोत्साहित करने वाली कई खेल प्रतियोगिताएं और गतिविधियां शामिल थीं। इस फेस्टिवल ने प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए एक्सेसिबल इंडिया कैंपेन के विजन को बढ़ावा दिया। ऐसे में यह कहना उचित होगा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में दिव्यांग आबादी का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल नजर आ रहा है, जो पहले नहीं था।

कौशल विकास और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में निवेश : आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम

जैसा कि देखा गया है, प्रधानमंत्री मोदी ने कई सामाजिक मुद्दों को कवर किया है और इन मुद्दों के प्रति एक प्रगतिशील दृष्टिकोण लाने का लक्ष्य रखा है। वर्तमान भारतीय आबादी को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री ने मन की बात मंच के माध्यम से युवाओं को अनुत्पादक गतिविधियों पर समय और ऊर्जा बर्बाद करने के बजाय आत्मनिर्भर बनने और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, भारत में दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी है, कुल आबादी का लगभग 66 प्रतिशत (808 मिलियन से अधिक लोग) 35 वर्ष से कम आयु के हैं। यह संख्या चौंका देने वाली है और सही दिशा एवं मंच, इसे राष्ट्र के लिए दीर्घकालिक उत्पादक संपत्ति में बदला जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कौशल विकास के संबंध में युवाओं पर ध्यान केंद्रित करके ठीक यही किया है। इसके अलावा, उन्होंने सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विकास को देखते हुए एक विषय के रूप में विज्ञान के मूल्य पर भी जोर दिया है। नैस्कॉम के अनुसार, भारत के आईटी उद्योग का राजस्व वित्त वर्ष 22 में 15.5 प्रतिशत था, जो वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि के साथ 227 बिलियन डॉलर को छू गया। इसके अतिरिक्त, अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत का बढ़ता विस्तार भी विज्ञापन के विषय के लिए एक संभावित बढ़ावा के रूप में कार्य करता है। कौशल विकास, आत्मनिर्भरता, विज्ञान और नवाचार के साथ-साथ भारत की बढ़ती हुई युवा शक्ति भारत की दीर्घकालिक राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया की दिशा में निर्णायक हो सकती है। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने युवाओं में मानसिकता में बदलाव लाने के लिए इन क्षेत्रों को व्यापक रूप से छुआ है। हालांकि, उनका ध्यान केवल युवाओं पर नहीं, बल्कि भारतीय समाज के समग्र कौशल विकास पर था।

प्रधानमंत्री मोदी ने पहले एपिसोड से ही देश में कौशल विकास की दिशा में जनता के सुझावों को संबोधित करना शुरू कर दिया था। लोगों के सुझावों के आधार पर, प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों को आश्वासन दिया कि एमएसएमई पंजीकरण प्रक्रिया को सरल बनाया जाएगा। साथ ही उन्होंने छोटी उम्र से ही कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में कौशल विकास पाठ्यक्रम शामिल करने के सुझाव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके अलावा, प्रधानमंत्री मोदी ने 26 जुलाई, 2015 को 10वें एपिसोड में मंगल मिशन की सफलता पर चर्चा करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में युवाओं की रुचि कम होने के मुद्दे पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री इस मुद्दे को लेकर चिंतित थे, क्योंकि उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को विकास के लिए एक प्रकार के डीएनए के रूप में देखा। इसलिए उसी तर्ज पर प्रधानमंत्री मोदी ने मानव संसाधन और विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय खोज अभियान का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री मोदी ने आगे इस पहल के बारे में बात की, यह प्रदर्शित करते हुए कि अभियान के एक हिस्से के रूप में आईआईटी, एनआईटी और केंद्रीय और राज्य विश्वविद्यालय छात्रों को सही कैरियर मार्ग तय करने में मदद करने के लिए मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में कार्य करेंगे। इसके अतिरिक्त, समग्र ज्ञान को सक्षम करने के लिए प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि सरकार के भीतर के आईएएस अधिकारियों को दो से तीन घंटे के लिए पास के स्कूलों में व्याख्यान देना चाहिए और अपने अनुभव और यात्राएं साझा करनी चाहिए।

27 दिसंबर, 2015 को मन की बात के 15वें संस्करण के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने एक स्मारकीय घोषणा की, जो अंततः आने वाले वर्षों के लिए भारतीय मानसिकता में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी। प्रधानमंत्री ने भारत की बढ़ती युवा आबादी पर विशेष जोर देते हुए देश में स्टार्ट-अप कल्चर स्थापित करने की बात कही। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन के दौरान स्टार्ट-अप के प्रति निश्चित मानसिकता बदलने पर जोर दिया। स्टार्ट-अप्स अक्सर डिजिटल और आईटी क्षेत्रों से जुड़े होते हैं। हालांकि, प्रधानमंत्री भारतीय क्षेत्र के भीतर मौजूद हर क्षेत्र में स्टार्टअप्स के विमर्श का विस्तार करने के इच्छुक थे। प्रधानमंत्री मोदी का दूरदर्शी होना दर्शाता है कि कैसे स्टार्ट-अप की संस्कृति को भारत की जरूरतों के अनुसार अपनाने की जरूरत है। इसके अलावा, देश में स्टार्ट-अप संस्कृति को

बढ़ावा देने के लिए, प्रधानमंत्री मोदी ने बैंकिंग क्षेत्र को नई पहल का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे भारत के युवाओं को आत्मनिर्भर बनने और भारत की आर्थिक वृद्धि का हिस्सा बनने में मदद मिली। इसी संस्करण के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट रूप से भारत को एक स्टार्टअप राजधानी बनाने के अपने दृष्टिकोण का उल्लेख किया। उन्होंने स्टार्ट-अप इंडिया को स्टैंड-अप इंडिया के रूप में देखा। मन की बात मंच पर स्टार्टअप्स को लेकर प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन महज चापलूसी भरा प्रवचन नहीं था। भारत सरकार ने प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण पर कार्य किया और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) में 10,000 करोड़ रुपये के कोष के साथ 'स्टार्टअप्स के लिए कोष (एफएफएस)' बनाने के लिए स्टार्टअप्स के लिए सहायता प्रदान की। एफएफएस का उद्देश्य विभिन्न स्टार्टअप्स के इक्विटी और इक्विटी से जुड़े उपकरणों में निवेश के लिए वैकल्पिक निवेश कोष (एआईएफ) के कोष में योगदान करना है। 2015-16 में एफएफएस कॉर्पस के लिए 500 करोड़ रुपये जारी किए गए।

युवाओं के कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने 27 मार्च, 2016 को मन की बात के 18वें एपिसोड के दौरान युवाओं को कौशल विकास के उद्देश्य से अपनी छुट्टियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री ने देश के युवाओं को समझाया कि व्यक्तित्व विकास के लिए कौशल विकास कितना जरूरी है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि कैसे एक नया कौशल सीखने से न केवल उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और उनकी मूल पहचान मजबूत होगी। भारत में युवा अक्सर अपनी गर्मियों की छुट्टियों को इधर-उधर देखने में बर्बाद कर देते हैं; प्रधानमंत्री मोदी एक सकारात्मक नेता के रूप में युवाओं की मानसकिता को बदलकर इस दृष्टिकोण को बदलना चाहते थे। इसके बाद के एपिसोड में प्रधानमंत्री ने शिक्षा के साथ कौशल विकास के महत्व को भी रेखांकित किया। साथ ही, उन्होंने इस बात पर भी बात की कि कैसे इस संबंध में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि प्रौद्योगिकी और नवाचार क्षेत्र देश के भीतर व्यक्तियों के कौशल विकास के लिए धन्यवाद देंगे। इसी सोच को ध्यान में रखते हुए टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के क्षेत्र में तेजी लाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 31 जुलाई, 2016 को मन की बात के 22वें संस्करण में इनोवेशन के उद्देश्य से अटल इनोवेशन मिशन के बारे में बात की. प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में मिशन की अवधारणा के बारे में बताया। नवाचार, प्रयोग और उद्यमशीलता की एक जीवंत श्रृंखला बनाने के लिए पूरे देश में एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का विचार था, जो रोजगार सृजन की संभावनाओं को भी बढ़ाएगा। इसी मिशन के तहत प्रधानमंत्री और केंद्र सरकार ने भी अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना की पहल की थी। अटल टिंकरिंग लैब्स ने खासतौर पर युवाओं को निशाना बनाया। बहुत कम उम्र से ही नवाचार कौशल को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों में प्रयोगशालाओं की स्थापना की जानी थी। इसके अलावा, विज्ञान में छात्रों की रुचि विकसित करने में प्रयोगशालाएं एक अतिरिक्त कारक के रूप में कार्य करेंगी। 2023 तक 10,000 स्कूलों को अटल टिंकरिंग लैब कार्यक्रम के तहत शामिल किया गया है। अटल टिंकरिंग लैब्स के अलावा, भारत सरकार ने अटल इन्क्यूबेशन सेंटर का निर्माण भी शुरू किया, जो विकास, नवाचार और उद्यमिता के केंद्र के रूप में कार्य करेगा। मिशन में राष्ट्र के युवाओं के बीच समस्या समाधान क्षमता विकसित करने के लिए 'अटल ग्रैंड चैलेंज' नाम की एक बड़ी चुनौती भी शामिल थी। अटल इनोवेशन मिशन अपनी संपूर्णता में युवाओं के साथ देश के भीतर से नवाचार और उद्यमशीलता की खेती करने की प्रधानमंत्री मोदी की मानसिकता का प्रतीक है।

26 फरवरी, 2017 को मन की बात के 29वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने इसरो के वैज्ञानिकों को एक साथ 104 सैटेलाइट लॉन्च करने के लिए बधाई देते हुए युवा और महिला वैज्ञानिकों के प्रयासों की विशेष सराहना की। अपने मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने कार्टोसैट 2 उपग्रह पर प्रकाश डाला और इसकी बहुमुखी प्रतिभा के कारण उपग्रह को विकसित करने के लिए युवा और महिला वैज्ञानिकों की टीम की प्रशंसा की। उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि कैसे यह उपलब्धि अधिक युवाओं और महिलाओं को विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी, जिससे भारत का भविष्य बदल जाएगा। वैज्ञानिकों को बधाई देने के बाद प्रधानमंत्री ने फिर से युवाओं का ध्यान विज्ञान की ओर आकर्षित करने के लिए कहा कि आज वैज्ञानिक हमारी आने वाली पीढ़ियों के जीवन में स्थायी परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक बन गए हैं। इसी कड़ी में देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ओर आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों को बताया कि कैसे विज्ञान किसी आपात स्थिति में जीवन रक्षक समाधान प्रदान करके महत्वपूर्ण साबित हुआ है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी ने 2005 के मुंबई में हुई बारिश का उदाहरण दिया,

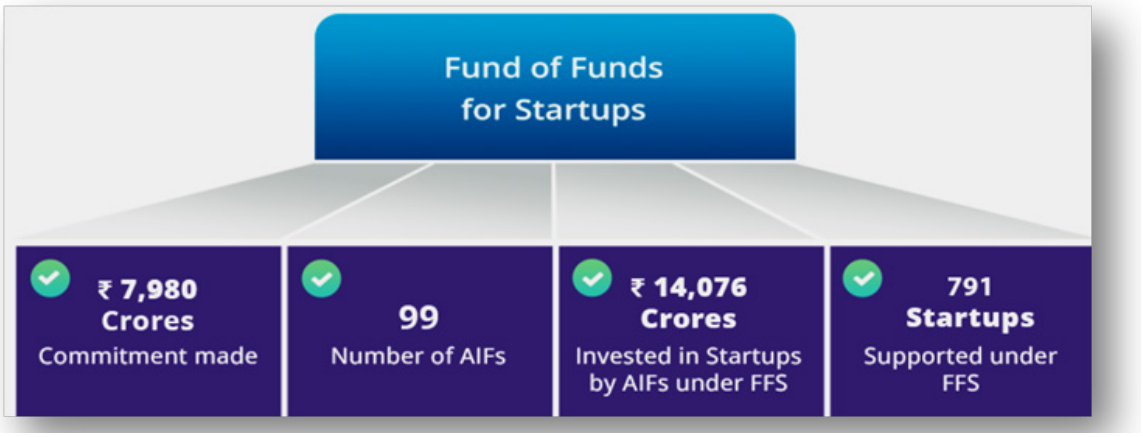

स्रोत: स्टार्टअप इंडिया

जिसके परिणामस्वरूप बाढ़ और यहां तक कि समुद्र में उच्च ज्वार भी आए, जिससे भयानक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उस स्थिति में दो लोगों ने ईमानदारी से काम किया और एक आवास संरचना विकसित की, जिसने घर और उसमें रहने वालों को बचाया, जल-जमाव को कम किया, और जलजनित रोगों को भी रोका था। यह उदाहरण स्पष्ट रूप से विज्ञान और नवाचार के महत्व को इंगित करता है और क्यों प्रधानमंत्री मोदी अपने मन की बात के माध्यम से भारत के सुरक्षित भविष्य के लिए इस क्षेत्र में युवाओं को शामिल करने के इच्छुक हैं।

एआईएम (अटल इनोवेशन मिशन) के तहत विभिन्न श्रेणियां

28 मई, 2017 को प्रसारित 32 वें संस्करण के दौरान प्रधानमंत्री युवाओं के बीच कौशल विकास पर अपने विचारों पर वापस आए। प्रधानमंत्री को अपने विचारों के प्रति युवाओं की भारी प्रतिक्रिया देखकर खुशी हुई, क्योंकि उनमें से कई एक नए कौशल को सीखने में लगे हुए थे, युवाओं को कुशल बनाने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को पूरा करने और अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलने में लगे थे। प्रधानमंत्री को ऐसी प्रतिक्रियाएं मिलीं, जिनमें कुछ ने संगीत सीखने का प्रयास किया, कुछ ने नए संगीत वाद्ययंत्र पर हाथ आजमाया, उनमें से कुछ ने यूट्यूब का उपयोग करके नई चीजें सीखने की कोशिश की, और कुछ ने नई भाषा सीखने की कोशिश की। प्रधानमंत्री द्वारा लाए गए इस मानसिकता सुधार ने कौशल विकास, विज्ञान और नवाचार में सक्रिय रूप से शामिल युवाओं के साथ 'न्यू इंडिया' के उनके विचार की नींव रखी। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात में इस विचार पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया, जैसा कि उन्होंने भारत को एक उच्च क्षमता वाले राष्ट्र के रूप में देखा था जो आत्मनिर्भर बनकर भविष्य के नेतृत्वकर्ता के रूप में परिवर्तित हो सकता है। प्रधानमंत्री मोदी के भारत को आत्मनिर्भर बनाने के दृष्टिकोण का एक प्रमुख उदाहरण 29 जुलाई, 2018 को मन की बात के 44 वें एपिसोड के दौरान देखा गया था। इस कड़ी में प्रधानमंत्री ने राजस्थान के सीकर की एक झुग्गी बस्ती में रहने वाली बेटियों द्वारा दिखाए गए दृढ़ निश्चय पर प्रकाश डाला। कौशल विकास के माध्यम से खुद को लैस करके, इन बेटियों ने कपड़े सिलने और सिलाई करने, भीख मांगने और कचरा इकट्ठा करने से अपनी आय के स्रोत को स्थानांतरित करने का कौशल सीखा।

प्रधानमंत्री उनकी इच्छा की सराहना की और अच्छे के लिए समाज को सशक्त बनाने में कौशल विकास के महत्व को रेखांकित किया। प्रधानमंत्री ने आगे राष्ट्र से उनके उदाहरण को प्रेरणा स्रोत के रूप में लेने और किसी भी संभावित कठिनाई का मुकाबला करने का आग्रह किया।

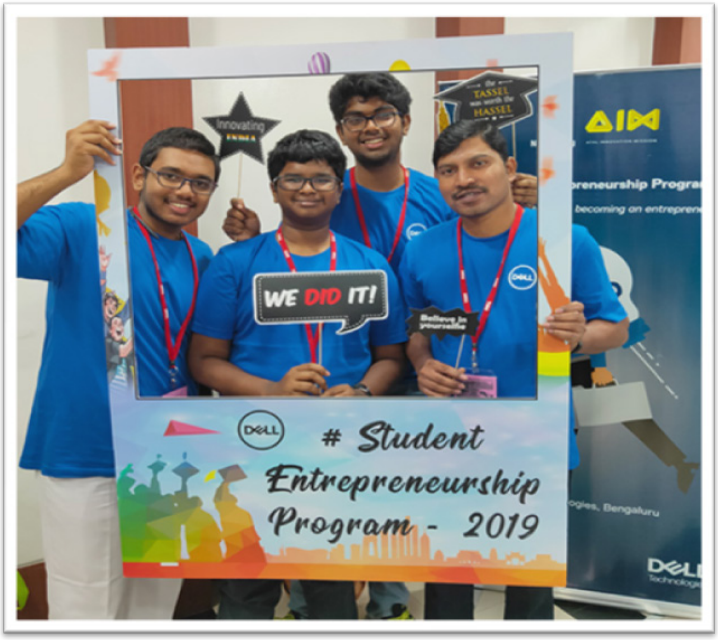

अटल इनोवेशन मिशन: युवा उद्यमियों के लिए एक शानदार मंच

अपने मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने इनोवेशन और साइंस पर चर्चा करते हुए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास का जिक्र किया. प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि विशिष्ट कार्यों के लिए रोबोट, बॉट और अन्य मशीनों को बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने आगे बताया कि कैसे स्व-शिक्षा के माध्यम से मशीनें आज अपनी बुद्धि को उच्च स्तर तक बढ़ा सकती हैं। प्रधानमंत्री ने एआई को एक ऐसी तकनीक के रूप में देखा, जिसका उपयोग वंचितों और जरूरतमंदों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी उत्पादकता और सटीकता को बढ़ावा देने के लिए सभी क्षेत्रों में एआई जैसे नए नवाचारों का उपयोग करना चाहते थे। भारत को टेक्नोलॉजी हब बनाने के लिए प्रधानमंत्री ने ब्रेन ड्रेन को ब्रेन गेन में बदलने का भी उल्लेख किया। इस संबंध में प्रधानमंत्री मोदी ने 29 जुलाई, 2018 को मन की बात के 46 वें संस्करण के दौरान दो आईटी पेशेवरों द्वारा अपने पेशेवर कौशल सेट का उपयोग करके विकसित किए गए स्मार्टगांव ऐप के बारे में बात की। दोनों ने देश की भलाई के लिए अपने कौशल का उपयोग करके भारत के युवाओं को स्वदेशी उत्पादों या सेवाओं को विकसित करने के लिए कहने की प्रधानमंत्री की चुनौती को स्वीकार किया। ऐप गांव की संरचना के कामकाज को बदलने में महत्वपूर्ण हो सकता है, क्योंकि यह गांव में किए जा रहे विकास कार्यों को रिकॉर्ड करना, ट्रैक करना और निगरानी करना आसान बनाता है। ऐप में गांव के लिए एक फोन निर्देशिका, समाचार अनुभाग, घटनाओं की सूची, स्वास्थ्य केंद्र और सूचना केंद्र शामिल हैं। इसके अलावा, ऐप किसानों के लिए बहुत उपयोगी है, और ऐप की व्याकरण सुविधा और किसानों के बीच FACT दर उनके उत्पादों के लिए बाज़ार की तरह काम करती है। प्रधानमंत्री मोदी ने दोनों के प्रयासों की सराहना की और राष्ट्र की बेहतरी के लिए विकासशील प्रौद्योगिकियों के प्रति नागरिकों को प्रेरित करने के लिए एक प्रेरक कारक के रूप में ऐप के उनके विकास का उपयोग किया क्योंकि प्रधानमंत्री ने सभी भारतीयों को राष्ट्र की विकास प्रक्रिया के लिए एक सहायक संपत्ति के रूप में देखा।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने का प्रधानमंत्री मोदी का विजन देश के कोने-कोने तक पहुंचा, क्योंकि प्रधानमंत्री का हमेशा किसी भी मुद्दे पर समग्र दृष्टिकोण रहा है। जम्मू-कश्मीर का अक्सर उपेक्षित क्षेत्र भी प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण के तहत बदल गया था। 29 दिसंबर, 2019 को 60 वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के क्षेत्रों में शुरू किए गए हिमायत कार्यक्रम के बारे में बात की। कार्यक्रम के तहत किशोर व 15 से 35 वर्ष के युवाओं को कौशल विकास से जोड़ा गया और रोजगार प्राप्त किया। इस योजना के तहत शामिल लोगों में जम्मू-कश्मीर के वे लोग शामिल थे, जिनकी पढ़ाई किसी कारणवश पूरी नहीं हो पाई थी और जिन्हें बीच में ही स्कूल या कॉलेज छोड़ना पड़ा था। अपने मन की बात मंच में इस योजना को उजागर करके प्रधानमंत्री युवाओं में ऐसे कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता फैलाना चाहते थे और उनकी मानसिकता में कौशल विकास के विचार को आगे बढ़ाना चाहते थे। युवा दिवस को ध्यान में रखते हुए इसी संस्करण के दौरान ही प्रधानमंत्री मोदी ने भारत को बेहतर बनाने में युवाओं के मूल्य पर फिर से जोर दिया। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने युवाओं से जिम्मेदारी लेने और किसी संदर्भ में संकल्प लेने का आग्रह किया क्योंकि युवा देश के लिए एक अमूल्य संपत्ति है।

युवाओं को आश्वस्त करने के लिए प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में देश के युवाओं की प्रतिभा की सराहना की और यहां तक कि स्वामी विवेकानंद ने भी युवाओं को प्रतिभा और आधुनिकता की पीढ़ी के रूप में देखा। इसी एजेंडे को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार का स्किल इंडिया अभियान शुरू किया गया। कौशल भारत के तहत, भारत की आजादी के बाद पहली बार कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) का गठन कौशल विकास के माध्यम से युवाओं की रोजगार क्षमता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए किया गया था। कौशल भारत की छत्रछाया में, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना ने मार्च, 2023 तक 1,37,24,196 युवाओं को प्रशिक्षण और कौशल विकास प्रदान किया है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण पर काम करते हुए हाल ही में बजट घोषणा के दौरान केंद्र सरकार ने एआई से संबंधित पाठ्यक्रमों और एआई नवाचार केंद्रों को शामिल करके कौशल विकास को भविष्य की तकनीक से जोड़ा। प्रधानमंत्रीकेवीवाई 4.0 के तहत 2023 के बजट में कोडिंग, एआई, रोबोटिक्स, मेक्ट्रोनिक्स, आईओटी, 3डी प्रिंटिंग, ड्रोन और सॉफ्ट स्किल्स जैसे कोर्स शामिल किए गए हैं। इसके अलावा, बजट घोषणा के अनुसार तीन एआई उत्कृष्टता केंद्र भी स्थापित किए जाएंगे।

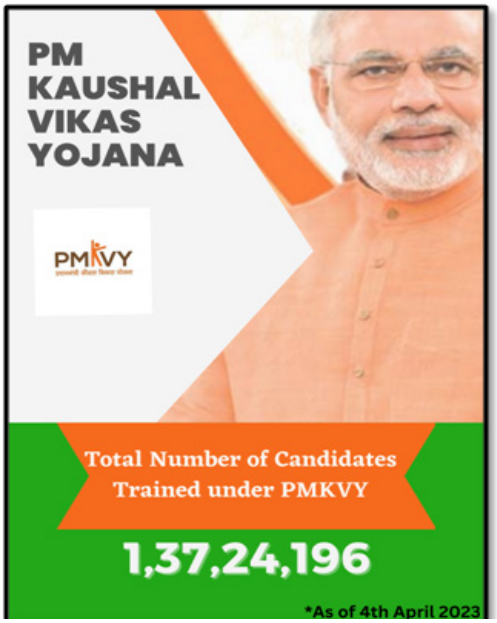

स्रोत: पीएमकेवीवाई

विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करने के संबंध में, प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में इसरो द्वारा युविका कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। 23 फरवरी, 2020 को 62वें एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने युवाओं से कार्यक्रम के लिए पंजीकरण करने का आग्रह किया और कार्यक्रम में भागीदारी बढ़ाने के लिए पिछले साल कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों के अनुभवों को पढ़ने को कहा। इसरो युविका कार्यक्रम स्कूली छात्रों के लिए शुरू किया गया था। 'युविका' का अर्थ है 'युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम'। यह कार्यक्रम हमारे विजन 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान' के अनुरूप है। इस कार्यक्रम में उनकी परीक्षा के बाद और छुट्टियों के दौरान, छात्र अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष विज्ञान और अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के बारे में जानने के लिए इसरो के विभिन्न केंद्रों पर जाते हैं। यह उदाहरण दिखाता है कि प्रधानमंत्री मोदी ने सरकारी पहलों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए मन की बात मंच का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया है, जिन्हें अक्सर उपेक्षित किया जाता है। युवाओं को विज्ञान की ओर प्रेरित करने की तर्ज पर प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन के दौरान इसरो द्वारा बनाई गई विजिटर्स गैलरी की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। गैलरी स्कूली छात्रों को भारत के अंतरिक्ष अन्वेषणों को देखने की अनुमति देती है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात में रेखांकित किया कि कैसे गैलरी छात्रों के मानस पर स्थायी प्रभाव छोड़ती है, क्योंकि वे विज्ञान का अध्ययन करने के बाद संभावनाएं देख सकते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मन की बात के साथ-साथ केंद्र सरकार द्वारा की गई पहलों से निश्चित रूप से देश के युवाओं को सशक्त बनाया है। प्रधानमंत्री ने मन की बात का इस्तेमाल युवाओं से जुड़ने और उन्हें निर्भर होने के बजाय आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करने के एक मंच के रूप में किया। प्रधानमंत्री मोदी का उद्देश्य युवाओं को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना और भारत की विकास प्रक्रिया में योगदान देना था। मन की बात के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर उनके जोर ने एक प्रवचन की शुरुआत की, जिसके परिणामस्वरूप अंततः भारत की तकनीकी और औद्योगिक क्रांति हुई, क्योंकि देश की सामूहिक वृद्धि की दिशा में काम करने के लिए जनसंख्या की मानसिकता में सुधार किया गया था।

भाग III

भारतीय जीवन शैली को बढ़ावा

जो विरासत हमें अपने पूर्वजों से मिली है, ज्ञान और मूल्य जो प्रत्येक जीवित प्राणी के प्रति करुणा और प्रकृति के लिए असीम प्रेम में व्याप्त है, यह सब हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है।"

-प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

हमारी प्राचीन संस्कृति और विरासत का हमारे जीवन के कई पहलुओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है और यह हर भारतीय के लिए प्रेरणा और गौरव का स्रोत बना हुआ है। 2014 के बाद से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से विभिन्न मुद्दों पर बोलते हुए एक ऐसी जीवनशैली को विकसित करने का आह्वान किया है, जो नागरिकों के बीच भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और लोकाचार को बढ़ाती है। यदि हम मन की बात के 100 संस्करण की चर्चा को देखें, तो उसमें महान व्यक्तित्वों के दर्शन से लेकर प्राचीन ग्रंथों से समृद्ध ग्रंथों को उद्धृत करने तक, कई संस्कृतियों, त्योहारों, प्रथाओं और रीति-रिवाजों को संदर्भित करके विविधता में एकता का प्रदर्शन करने से लेकर भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने तक सभी विषयों पर बात हुई है। सात दशकों से भी अधिक समय से उपेक्षित हमारी प्राचीन संस्कृति और परंपरा को पुनर्जीवित करने पर भारत ने विशेष बल दिया है। यह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई पहल और योजनाओं से स्पष्ट है जैसे कि सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का उद्घाटन, महाकाल लोक कॉरिडोर, चारधाम परियोजना, केदारनाथ पुनर्विकास पहल आदि। पिछले नौ वर्षों में मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री के संदेश लाखों लोगों तक पहुंचे हैं और आज हम पूरे भारत में प्राचीन परंपराओं और प्रथाओं के पुनरुत्थान को देख रहे हैं, जिससे नए भारत के लिए भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। 100 संस्करणों का विश्लेषण करते हुए यह देखा गया कि मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत की सांस्कृतिक पहचान के बारे में चर्चा की। स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभाई पटेल, पं. दीनदयाल उपाध्याय, जयप्रकाश नारायण आदि के उदाहरण दिये। प्रधानमंत्री मोदी उपनिषदों, भगवद्गीता और अन्य पवित्र ग्रंथों के श्लोकों को दोहरा कर प्राचीन पारंपरिक ज्ञान के माध्यम से भारत को प्रेरित करते हुए पर्यटन और पारंपरिक विरासत को बढ़ावा देते हुए दिखे। महत्वपूर्ण दिनों, त्योहारों और रीति-रिवाजों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते दिखे, जो हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत है।

इस अध्याय में शामिल उप-विषयों का चित्रात्मक प्रतिनिधित्व

भारत की महान विभूतियों और समाज के प्रति उनके योगदान को याद किया

विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात व्यक्तित्व वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जीवन पर भी इनका निरंतर प्रभाव पड़ा है। इन हस्तियों की यात्रा प्रेरणा का स्रोत रही है और मन की बात के माध्यम से उन्होंने उन लोगों के बलिदान के बारे में बात की, जिनके योगदान से अब हम एक बेहतर जीवन जीने में सक्षम हैं। जबकि पिछली सरकारों ने हमारे भारतीय इतिहास में महान महापुरूषों के योगदान को पहचानने का बहुत कम प्रयास किया। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री मोदी वास्तव में अतीत में दूसरों द्वारा की गई भूलों

को सुधार रहे हैं और मन की बात के माध्यम से न केवल विश्लेषण करने की कोशिश की है, बल्कि उन महान हस्तियों के काम का प्रचार भी कर रहे है, जिन्होंने न केवल अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, बल्कि लाखों लोगों को सपने देखने की क्षमता दी है। उनका मुख्य उद्देश्य भारत में इन हस्तियों द्वारा किए गए योगदान के बारे में युवा पीढ़ी के बीच जागरूकता फैलाना है।

महापुरुषों के जीवन हमें सदैव प्रेरणा देते रहेंगे। इन महापुरुषों की विचारधारा को समझना क्या हमारा दायित्व नहीं है। हमारे देश के लिए जीने और मरने वाला हर व्यक्ति हमें प्रेरित करता है। आने वाले दिनों में हमें ऐसे बहुत से महापुरुषों को याद करने को मिलेगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मन की बात, सितंबर 2015

महात्मा गांधी

प्रधानमंत्री मोदी ने महात्मा गांधी की जयंती पर 'स्वच्छता' और 'खादी' को सहभागी शासन का प्रतीक बनाकर भावभीनी श्रद्धांजलि देकर अपने मन की बात के पहले संस्करण की शुरुआत की। राष्ट्र को संबोधित करते हुए उन्होंने मन की बात में एक जन-अभियान की शुरुआत की, नागरिकों को संबोधित करते हुए उन्होंने नागरिकों से एक साथ आने और राष्ट्र से सभी कुप्रथाओं को खत्म करने का संकल्प लेने की अपील की। पहले संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने स्वच्छता पर एक आंदोलन शुरू करके नौ लोगों को सोशल मीडिया वेबसाइटों पर देश की सफाई के वीडियो अपलोड करने के लिए कहा और साथ ही अन्य लोगों को इस अभियान से जोड़ने का दायित्व दिया। उन्होंने देशवासियों से खादी निर्माण में लगे गरीबों के उत्थान के उद्देश्य से खादी का कम से कम एक उत्पाद खरीदने की भी अपील की।

स्रोत: विकिपीडिया

प्रधानमंत्री मोदी ने महात्मा गांधी की 'कर्मभूमि' दक्षिण अफ्रीका की अपनी यात्रा को याद किया, जहां उन्होंने फीनिक्स बस्ती का दौरा किया, जहां महात्मा गांधी के घर को 'सर्वोदय' के नाम से जाना जाता है। उस ट्रेन में पीटरमैरिट्जबर्ग स्टेशन की यात्रा की, जिसमें महात्मा गांधी ने यात्रा की थी। नेल्सन मंडेला के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने वाले महान पुरुषों श्रीमान अहमद कथराडा, श्रीमान लालू चिबा, श्रीमान जॉर्ज बिज़ोस और रॉनी कैस्रिल्स से मुलाकात की, जिन्होंने अपना युवा जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया था।

मन की बात के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए दो प्रमुख आंदोलनों- असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन की तुलना की। उन्होंने कहा कि देश ने महात्मा गांधी के दो अलग-अलग रूपों को देखा है। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन इतना तीव्र हो गया कि महात्मा गांधी जैसे महापुरुष ने 'करो या मरो' का मंत्र दिया। जिस दृढ़ संकल्प के परिणामस्वरूप पूरा देश एकजुट हो गया था और पांच साल के भीतर 1947 में अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया था। प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों से 15 अगस्त, 2017 को संकल्प पर्व या संकल्प दिवस के रूप में मनाने की अपील की और 2022 में स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर हमें उन संकल्पों को 'सिद्धि' में बदलने आग्रह किया। यह संकल्प थे- भारत छोड़ो; गरीबी - भारत छोड़ो; भ्रष्टाचार - भारत छोड़ो; आतंकवाद - भारत छोड़ो; जातिवाद - भारत छोड़ो; साम्प्रदायिकता - भारत छोड़ो!

स्वामी विवेकानंद

देशवासियों को स्वामी विवेकानंद की आंतरिक शक्तियों और क्षमताओं का एहसास कराने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 'शेरनी और शावक' की कहानी दोहराते हुए स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं का उल्लेख किया, जो उनके द्वारा सुनाई गई थी, जिसमें एक शेरनी शिकार करते समय अपने एक शावक को छोड़ देती है और शावक भेड़ों के झुंड

द्वारा पाला जाता है। शावक यह मानते हुए बड़ा होता है कि वह एक भेड़ है, भले ही वह एक शेर था। एक दिन शेर के शावक का भाई उसके पास आता है और उसे उसकी असली पहचान समझाने की कोशिश करता है। शेर का शावक शुरू में विरोध करता है, लेकिन अंततः एक कुएं में अपना प्रतिबिंब देखने के बाद उसे अपनी असली पहचान का एहसास होता है। वह शेर की तरह दहाड़ने लगता है और अपने वास्तविक स्वरूप को अपना लेता है।

आज प्रधानमंत्री जी ने मन की बात में स्वामी जी की शिक्षा को फिर से जीवंत किया और सवा सौ करोड़ देशवासियों में आत्मविश्वास जगाने का प्रयास किया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचार और उनका जीवन कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और यह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की बातों से स्पष्ट होता है। प्रधानमंत्री मोदी ने पं. दीनदयाल जी द्वारा विभिन्न मंचों से राष्ट्र निर्माण को लेकर उनके योगदान की प्रशंसा की। मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने पं. दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद के दर्शन या दूसरे शब्दों में भारतीय सांस्कृतिक विरासत को कायम रखने वाले एकात्म मानव दर्शन और 'सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय' पर ध्यान केंद्रित करते हुए ' अंत्योदय' का प्रचार करने की कोशिश की। अंत्योदय का सिद्धांत कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने पर जोर देता है। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने पं. दीनदयाल जी संपूर्ण आर्थिक दर्शन का जिक्र भी किया, जिसे दो शब्दों में कहें तो 'हर हाथ को काम, हर खेत को पानी', जिसका उद्देश्य समाज को सशक्त बनाना है। प्रधानमंत्री मोदी ने पं. दीनदयाल जी के शताब्दी वर्ष को 'गरीबों के कल्याण का वर्ष' घोषित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सरकार द्वारा पं. दीनदयाल जी के शताब्दी वर्ष में रेसकोर्स रोड का नाम बदलकर 'लोक कल्याण मार्ग' किया गया, जो 'गरीबों के कल्याण वर्ष' का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व करता है। मन की बात के एक अन्य प्रसंग में उन्होंने देशवासियों को एक बहुमूल्य संदेश की याद दिलाई, जो 'समाज के लिए हमारे ऋण को चुकाने' पर जोर देता है, जो अच्छे मूल्यों और गुणों को दर्शाता है, जो लोगों के चरित्र विकास और भविष्य की पीढ़ी के लिए समय की आवश्यकता है। उन्होंने पं. दीनदयाल जी के जीवन की एक बहुत महत्वपूर्ण सीख भी साझा की, जो थी- 'कभी हार मत मानो'। प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा, 'प्रतिकूल राजनीतिक और वैचारिक परिस्थितियों के बावजूद पं. दीन दयाल जी कभी भी भारत के विकास के लिए स्वदेशी मॉडल की दृष्टि से विचलित नहीं हुए । इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने युवा पीढ़ी से पं. दीनदयाल जी के जीवन के बारे में अधिक जानने का आग्रह किया, जो देश के मानवतावादी, विचारक और महान सपूत थे। प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में पं. दीनदयाल जी द्वारा देश के सामने रखे गए सबसे बड़े योगदान - 'एकात्म मानवदर्शन' और 'अंत्योदय' के बारे में विस्तार से बात की। पं. दीनदयाल जी का 'एकात्म मानवदर्शन' एक ऐसा विचार है, जो जीवन के द्वंद और पूर्वाग्रह से मुक्ति दिलाता है। उन्होंने फिर से दुनिया के सामने वह भारतीय दर्शन रखा, जो मनुष्य को समान मानता है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है- 'आत्मवत सर्वभूतेषु' अर्थात् हमें जीवों को अपने समान समझना चाहिए और उनके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। पं. दीनदयाल जी ने हमें सिखाया कि कैसे भारतीय दर्शन आधुनिक, सामाजिक और राजनीतिक परिपेक्ष में भी दुनिया का मार्गदर्शन कर सकता है। एक तरह से उन्होंने आजादी के बाद देश में व्याप्त हीन भावना से हमें मुक्त कर हमारी बौद्धिक चेतना को जाग्रत किया। वे यह भी कहते थे- 'हमारी स्वतंत्रता तभी सार्थक हो सकती है, जब वह हमारी संस्कृति और पहचान को अभिव्यक्त करे'। इसी विचार के आधार पर उन्होंने देश के विकास की परिकल्पना की थी। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी कहा करते थे कि देश की उन्नति का पैमाना सबसे निचले पायदान पर बैठा व्यक्ति होता है।

दीन दयाल जी ऐसे महान व्यक्तित्व थे जो सत्ता के गलियारों से दूर रहकर भी जनता के लिए पल-पल जीते थे, सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखय के सिद्धांत पर चलते हुए हर मुश्किलों से लड़ते रहे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

वीर सावरकर

वीर सावरकर एक मजबूत भारत के लिए साहस, देशभक्ति और दृढ़ प्रतिबद्धता के प्रतीक हैं। उन्होंने कई लोगों

को राष्ट्र निर्माण के लिए खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान समाज सुधार में उनका योगदान अद्वितीय है। वीर सावरकर की जयंती पर प्रधानमंत्री ने अपने रेडियो कार्यक्रम में अंडमान और निकोबार द्वीप में सेलुलर जेल की अपनी यात्रा के बारे में बात की, जहां वीर सावरकर ने अपने आजीवन कारावास के दिन बिताए थे। जब वीर सावरकर जेल में थे, तब वे अपनी जेल की कोठरी की दिवारों पर कविताएं लिखा करते थे। जेल में रहते हुए उन्होंने 'माझी जन्ममथेप' पुस्तक भी लिखी। प्रधानमंत्री मोदी ने याद दिलाया कि अंग्रेजी शासन ने कैदखाने में उनके साथ कितना अमानवीय व्यवहार किया गया, लेकिन वह भारत माता को परम वैभव तक ले जाने के उनके संकल्प को डिगा नहीं सका। उन्होंने युवा पीढ़ी को इस स्थान की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो वास्तव में हमारे स्वतंत्रता संग्राम का तीर्थ है।

डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर

डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर पर बोलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से बताया कि भारत सरकार ने भूमि का आवंटन पूरा किया और बाबा अंबेडकर के स्मारक का शिलान्यास किया है, जो 20 से अधिक वर्षों से लंबित था। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन के दौरान पूरी दुनिया को बाबासाहेब के मौलिक कार्यों और विचारों से अवगत कराने के लिए दिल्ली में बाबासाहेब अंबेडकर के नाम पर एक अंतरराष्ट्रीय केंद्र स्थापित करने की भी बात कही। उन्होंने संकल्प लिया कि सरकार 20 महीने में काम खत्म कर देगी, जो 20 साल में नहीं हुआ। आज हमने डॉ. अंबेडकर नेशनल मेमोरियल (डीएएनएम) और डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर के शानदार निर्माण को देखा है। रेडियो के माध्यम से उन्होंने देश के मौजूदा परिदृश्य पर निराशा व्यक्त की, जहां कई परिवार आज तक सिर पर मैला ढोने को मजबूर हैं और समाज के कई दलितों, शोषितों और वंचितों, खासकर लड़कियों तक शिक्षा नहीं पहुंच पाई है। प्रधानमंत्री मोदी ने सभी को डॉ. अंबेडकर की शिक्षाओं की याद दिलाई और बाबासाहेब के सपनों को हकीकत में बदलने के लिए एक साथ आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, 'जब हमारा देश उनकी 125वीं जयंती मना रहा होगा, तब आशा करता हूं कि देश का कोई भी नागरिक गंदगी का बोझ सिर पर नहीं लाद रहा होगा और एक भी व्यक्ति शिक्षा से वंचित नहीं होगा।' इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने श्रमिक वर्ग के कल्याण के लिए बाबासाहेब के योगदान के बारे में भी बात की। मन की बात के एक संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने औद्योगीकरण की वकालत करने वाले भीमराव अंबेडकर के विचारों पर भी चर्चा की, जो एक प्रभावी माध्यम है, जिसके द्वारा गरीब से गरीब व्यक्ति को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है। मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटी मिशन, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया पहल के माध्यम से सरकार भारत को एक 'औद्योगिक महाशक्ति' बनाने के बाबासाहेब के सपने को साकार करने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कि बाबासाहेब ने हमें दिखाया कि सफल होने के लिए किसी व्यक्ति का एक प्रतिष्ठित या अमीर परिवार में पैदा होना जरूरी नहीं है, बल्कि जो भारत में गरीब परिवारों में पैदा हुए हैं, वे भी सफलता प्राप्त करके अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।

डॉ अंबेडकर राष्ट्रीय स्मारक और डॉ अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र

सरदार वल्लभभाई पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से भारतीय इतिहास में उनके चिरस्थायी योगदान को याद किया। स्वतंत्र भारत को फिर से जोड़ने के कठिन कार्य से लेकर एक महान प्रशासक,

विचारक और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में देश की सेवा करने तक, जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारत की एकता के लिए समर्पित कर दिया और इसके लिए अथक प्रयास किया, जिस कारण उन्हें लोगों की नाराजगी का सामना भी करना पड़ा, पर वह अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए। किसान समाज को एकजुट कर आजादी के आंदोलन की अगुवाई करने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल की जीवन यात्रा पर भी प्रधानमंत्री मोदी ने प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे सरदार पटेल आंदोलन को गांव-गांव तक ले जाने में कामयाब हुए। यह सरदार साहब की एक बड़ी उपलब्धि थी। स्वतंत्रता आंदोलन ने उनकी संगठनात्मक क्षमता को दिखाया। उन्होंने सहकारिता आंदोलन के लिए सरदार पटेल जी की दूरदर्शिता की भी सराहना की। 1942 में उनके द्वारा प्रतिपादित विचारों के सकरात्मक परिणाम निकले, आज अमूल इसका एक जीवंत उदाहरण है। गुजरात के एक छोटे से गांव से दिल्ली के सत्ता के गलियारे तक पहुंचने वाले सरदार पटेल की उल्लेखनीय यात्रा इस राष्ट्र के प्रति समर्पण, दृढ़ता और अटूट प्रतिबद्धता की एक प्रेरक कहानी है। आज उनकी विरासत भारत के लोगों को एक मजबूत और एकजुट देश बनाने का मार्गदर्शन करती है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस संस्करण में एक बहुत शक्तिशाली संदेश दिया कि "हम भाषा, संस्कृति, पोशाक, जाति, भोजन से भिन्न हो सकते हैं, लेकिन विविधता में एकता हमारी बाध्यकारी शक्ति बनी हुई है। " प्रधानमंत्री मोदी ने सरकार और नागरिकों से देश के हर कोने में एकीकरण की भावना को बढ़ावा देने के लिए कहा। उन्होंने देश के उन तत्वों को उजागर करने को कहा, जो हमें एक साथ बांधते हैं और अलगाववाद के विचार से दूर करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा मंत्र राष्ट्रीय एकता होना चाहिए और एक 'महान भारत', 'एक श्रेष्ठ भारत का निर्माण' करना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। मन की बात के एक संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने सरदार पटेल को 'मैन ऑफ डिटेल्स' के रूप में सम्मानित किया और एक उदाहरण का हवाला देते हुए उनके संगठनात्मक कौशल की प्रशंसा की, जहां वे 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन में भाग लेने के लिए देशभर से आने वाले हजारों प्रतिनिधियों के लिए व्यवस्था करने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने इस अवसर का उपयोग शहर में जल आपूर्ति नेटवर्क में सुधार के लिए किया और यह भी सुनिश्चित किया कि प्रतिनिधियों को पानी की कमी के संबंध में किसी भी समस्या का सामना न करना पड़े। इसके अलावा वह प्रतिनिधियों के निजी सामान के बारे में भी चिंतित थे। इसके लिए उन्होंने किसानों से प्रतिनिधियों के लिए खादी के थैले बनाने का आग्रह किया, जहां वे अपने जूते रख सकें, जिससे कार्यक्रम स्थल पर चोरी को रोका जा सके। सरदार पटेल की इस अनूठी पहल से उस समय खादी की बिक्री भी बढ़ी। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने जाति और पंथ के आधार पर भेदभाव की किसी भी गुंजाइश से इनकार करते हुए नागरिक के मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने को लेकर संविधान सभा में सरदार वल्लभाई पटेल द्वारा निभाई गई उल्लेखनीय भूमिका को याद किया।

स्वतंत्र भारत को एक छत के नीचे लाना और इस तरह के एक कठिन कार्य को पूरा करना - वह कितने महान व्यक्ति थे! ऐसी महान आत्मा को हम शत-शत नमन करते हैं।

-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

पं. मदन मोहन मालवीय

प्रधानमंत्री मोदी ने पं मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में किए गए उनके अमूल्य योगदान पर भी प्रकाश डाला और उनकी जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा वह वास्तव में लाखों भारतीयों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं और उन्होंने आधुनिक शिक्षा को एक नई दिशा दी और अपने जीवन काल में कई उल्लेखनीय कार्य किए।

भगवान बुद्ध

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने भगवान बुद्ध के जीवन पाठ को साझा किया और जो करुणा, सेवा और त्याग की शक्ति के पर्याय थे, जिन्होंने दुनियाभर के लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया। भगवान बुद्ध समतावाद, शांति, सद्भाव और भाईचारे और उन मानवीय मूल्यों के स्रोत थे, जिनकी आज दुनिया में सबसे अधिक आवश्यकता है। डॉ. अंबेडकर ने जोर देकर कहा कि भगवान बुद्ध उनके सामाजिक दर्शन के महान प्रेरणास्रोत रहे हैं। बाबा साहेब ने कहा था- "मेरा सामाजिक दर्शन तीन शब्दों में निहित कहा जा सकता है- स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व। मेरे

दर्शन की जड़ें धर्म में हैं, न कि राजनीति विज्ञान में। मैंने उन्हें अपने गुरु बुद्ध के उपदेश से प्राप्त किया है।"

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

मन की बात रेडियो कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी के अद्वितीय योगदान को याद किया। नेताजी ने 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' जैसे जोशीले नारों से हर भारतीय के दिल में जगह बना ली। उन्होंने नेताजी के जीवन का एक किस्सा साझा किया, जहां सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशवासियों से सीधे जुड़ने के लिए संचार माध्यम के तौर पर रेडियो का उपयोग किया। 1942 में सुभाष बाबू ने आजाद हिंद रेडियो की शुरुआत की और रेडियो के जरिए वे 'आजाद हिंद फौज' के जवानों और देश की जनता से संवाद करते थे। रेडियो एक गुजराती निवासी द्वारा चलाया जाता था, जो अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, बंगाली, मराठी, पंजाबी, पश्तो और उर्दू जैसी विभिन्न भाषाओं में साप्ताहिक समाचार बुलेटिन प्रसारित करता था। आजाद हिंद रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम आम जनता में बहुत लोकप्रिय होते थे और उनके कार्यक्रमों से हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को भी काफी बल मिलता था। माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर एक संग्रहालय का उद्घाटन करने के अपने अनुभव को साझा किया, जो पूरी तरह से उन नायकों को समर्पित था। लाल किले के परित्यक्त कमरों को सुंदर संग्रहालयों में परिवर्तित किया गया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस और इंडियन नेशनल आर्मी; 'याद-ए-जलियान'; 1857 - भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित संग्रहालय और इस पूरे परिसर को 'क्रांति मंदिर' के रूप में राष्ट्र को समर्पित किया गया है। इन संग्रहालयों की एक-एक ईंट भारत माता के वीर सपूतों कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लों और मेजर जनरल शाहनवाज खान जैसे स्वतंत्रता संग्राम नायकों के गौरवशाली इतिहास और कहानियों को दर्शाती है।

गुरु नानक देव

'प्रकाश उत्सव' के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं का प्रचार किया, जो 'सेवा, सच्चाई और सबकी भलाई' पर केंद्रित थीं। उन्होंने कहा कि गुरु नानक जी ने हमेशा समाज से अंधविश्वास, सामाजिक असमानताओं और सामाजिक बुराइयों को खत्म करने का उपदेश दिया और 'सब का साथ, सब का विकास' हासिल करने के लिए हमारे पास गुरु नानक देव से बेहतर मार्गदर्शक नहीं हो सकता। गुरु नानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों से इस महान त्योहार में उत्साह के साथ शामिल होने की अपील की और प्रकाश पर्व को प्रेरणा पर्व के रूप में बड़े गर्व के साथ मनाने के लिए नए विचारों, नई अवधारणाओं और नवाचारों के लिए कहा। मन की बात के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने निस्वार्थ सेवा के मूल्य पर प्रकाश डाला, जिसमें गुरु नानक जी हमेशा विश्वास करते थे और उनकी हरिद्वार, काशी तिब्बत, कर्नाटक में बीदर, कश्मीर, सऊदी अरब की धार्मिक यात्रा को साझा किया, जहां वह 'सौहार्द और समानता' का संदेश लेकर गए। प्रधानमंत्री मोदी ने आगे उल्लेख किया कि 85 देशों के राजदूतों ने 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर स्वर्ण मंदिर का दौरा किया, जहां उन्हें सिख संस्कृति और परंपराओं के बारे में जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

गुरु गोबिंद सिंह

गुरु गोबिंद सिंह जी की जयंती पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें शौर्य, त्याग और धर्मपरायणता से परिपूर्ण दिव्य पुरुष बताया, जिन्हें शस्त्र और शास्त्र दोनों का अलौकिक ज्ञान था। वह कई भाषाओं जैसे गुरुमुखी, ब्रजभाषा, संस्कृत, फारसी, हिंदी और उर्दू के भी अच्छे जानकार थे। प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात मंच पर श्रोताओं को संबोधित करते हुए अपने जीवन के एक पाठ को उद्धृत किया- "कमजोर वर्गों से लड़कर ताकत का प्रदर्शन नहीं किया जा सकता है।"

संत रविदास

प्रधानमंत्री मोदी ने संत रविदास को भी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से सद्भाव, समानता और सामाजिक सशक्तिकरण का संदेश फैलाते हुए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि संत रविदास जी के संदेशों ने हर वर्ग के लोगों को प्रभावित किया है। चित्तौड़ के महाराजा और रानी हों या मीराबाई, सभी उनके अनुयायी थे। उन्होंने संत रविदास जी के दोहे का हवाला देते हुए कहा कि संत

का मानना था कि अगर ईश्वर हर इंसान में मौजूद है, तो उसे जाति, पंथ या किसी अन्य समाजशास्त्रीय सीमांकन के आधार पर वर्गीकृत करना उचित नहीं है।

संत कबीरदास

प्रधानमंत्री मोदी ने संत कबीरदास जी के बारे में भी बात की, जिन्होंने सामाजिक एकता पर जोर दिया, जिन्होंने दूसरों के दुखों को पहचाना और समझा। उन्होंने उस समय प्रचलित अनेक अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर करते हुए अपना अधिकांश जीवन समर्पित कर दिया। उन दिनों, जब पूरी दुनिया कलह और नैतिक मूल्यों के ह्रास से गुजर रही थी, उन्होंने शांति और सद्भाव का संदेश फैलाया। उन्होंने अपने छंदों 'साखियों' और 'दोहों' के माध्यम से लोगों को एकजुट करने, उनके मतभेदों को दूर करने की दिशा में काम किया। माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने भी विभिन्न दोहों का हवाला दिया जैसे-

जगमेंबैरीकोईनहीं, जोमनशीतलहोय
यहआपातोडालद, दयाकरेसबकोय"

"दुनिया में कोई दुश्मनी नहीं होगी, अगर आंतरिक शांति हो। करुणा जीवन का सार्वभौमिक तरीका होना चाहिए।''

जहांदयातहंधर्म, जहांलोभतहंपाप
जहांक्रोधतहंकालहै, जहांक्षमातहंआप

"करुणा धार्मिकता की ओर ले जाती है; लोभ पाप की ओर ले जाता है। क्रोध तो खायेगा तुझे, क्षमा बड़ा गुण है।''

जातिनपूछोसाधूकी, पूछलिजियज्ञान

"कभी किसी संत से उसकी जाति या पंथ मत पूछो; उससे उसके ज्ञान के भण्डार के बारे में पूछो।''

बिरसा मुंडा और जमशेद जी टाटा

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने हमारे इतिहास में दो महत्वपूर्ण शख्सियतों के योगदान पर चर्चा की, जो झारखंड राज्य से आते हैं- भगवान बिरसा मुंडा और जमशेद जी टाटा। उन्होंने जोर देकर कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का योगदान झारखंड राज्य तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरे देश में है। भगवान बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपना जीवन न केवल आदिवासियों के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों को हासिल करने के लिए समर्पित किया, बल्कि उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए भी संघर्ष किया। वे प्रतिरोध का प्रतीक बन गए, जिन्होंने अपने धनुष और बाण से पूरे ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया।

इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (अब भारतीय विज्ञान संस्थान) और टाटा स्टील सहित भारत में विश्व स्तरीय संस्थानों और उद्योगों की स्थापना करने वाले जमशेद जी टाटा का जिक्र करते हुए कहा कि वे सच्चे अर्थों में एक दूरदर्शी उद्यमी थे। जमशेदजी टाटा भारत को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और औद्यगिक संस्थानों का केंद्र बनाना चाहते थे और उन्होंने देश के समग्र विकास में अत्यधिक योगदान दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने नई पीढ़ी

को इन विभूतियों के बलिदान और योगदान से अवगत होने और उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता पर बल दिया।

लोकमान्य तिलक

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के महान व्यक्तित्व लोकमान्य तिलक के बारे में बात की, जो आत्मविश्वास से भरे थे और अंग्रेजों को उनके गलत कामों के बारे में आईना दिखाने का साहस रखते थे। प्रधानमंत्री मोदी ने लोकमान्य तिलक से जुड़ी एक घटना का जिक्र किया। जब सरदार पटेल अहमदाबाद नगर निगम के मेयर थे, तो उन्होंने उनके निधन के बाद 'लोकमान्य तिलक जी' की मूर्ति बनाने का फैसला किया और विक्टोरिया गार्डन को लोकमान्य तिलक के स्मारक के स्थान के रूप में चुना, जिसका नाम ब्रिटिश महारानी के नाम पर रखा गया था। अंग्रेज इस फैसले से नाखुश थे और कलेक्टर ऐसे किसी भी स्मारक के निर्माण की अनुमति देने से इनकार करते रहे। यह सरदार वल्लभभाई पटेल की दृढ़ता और दृढ़ संकल्प था, जिन्होंने कहा कि 'उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ सकता है, लेकिन लोकमान्य तिलक जी की मूर्ति निश्चित रूप से वहां बनेगी'। अपने दृढ़ संकल्प के परिणामस्वरूप सरदार पटेल ने सफलतापूर्वक प्रतिमा का निर्माण किया और 28 फरवरी, 1929 को महात्मा गांधी से इसका अनावरण करवाया। मूर्ति की विशेषता यह है कि तिलक जी एक कुर्सी पर बैठे हैं और 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' तिलक जी की मूर्ति के ठीक नीचे खुदा हुआ है। यह सब अंग्रेजों के शासन काल में हुआ। प्रधानमंत्री मोदी ने लोकमान्य तिलक के सबसे बड़े योगदान पर भी प्रकाश डाला, जिसके तहत गणेश उत्सव को सार्वजनिक उत्सव के तौर पर मनाने की बात थी, जो जनता के बीच सामाजिक जागृति, एकीकरण, सौहार्द और समानता की भावना को बढ़ावा देने के अलावा उनमें समर्पण और उत्सव की भावना को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम बन गया। यह वह दौर था, जब अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में लोगों को एकजुट होने की जरूरत थी; इन त्योहारों ने जातिवाद और सांप्रदायिकता की बाधाओं को तोड़कर सभी को एक करने का काम किया।

चंद्रशेखर आजाद

प्रधानमंत्री मोदी ने भारत माता के एक और महान सपूत चंद्रशेखर आजाद के बारे में भी बात की, जिन्होंने हमारे देश की आजादी के लिए अपना जीवन दांव पर लगा दिया और अंग्रेजों के सामने कभी नहीं झुके। चंद्रशेखर आजाद के जीवन से भारत के कई युवा प्रेरित हुए, जो एक बहादुर व्यक्ति थे, जो विदेशियों की गोली से मरना नहीं चाहते थे - वे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वतंत्रता के लिए लड़ना चाहते थे और यदि उन्हें मरना भी पड़े तो एक आजाद व्यक्ति के रुप में ही ऐसा करना चहाते थे!

लचित बोरफुकन

प्रधानमंत्री मोदी ने वीर लचित बोरफुकन जी की वीरता और योगदान के बारे में बात की, जिन्होंने गुवाहाटी को अत्याचारी मुगल सल्तनत के चंगुल से मुक्त कराया था। आज देश इस महान योद्धा के अदम्य साहस से परिचित हो रहा है। उन्होंने लचित बोरफुकन के जीवन पर आधारित एक निबंध लेखन अभियान का उल्लेख किया और लगभग 45 लाख लोगों ने अपने निबंध भेजे, जो लगभग 23 विभिन्न भाषाओं में लिखे गए थे। इनमें असमिया भाषा के अलावा हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, बोडो, नेपाली, संस्कृत और संथाली भाषाएं थीं।

भारत के अन्य दिग्गज

मन की बात के सभी संस्करणों में प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसे कई दिग्गज नेताओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनमें लाल बहादुर शास्त्री जी जैसे नेता शामिल हैं, जिन्होंने प्रधानमंत्री रहते हुए 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। लाल बहादुर शास्त्री ने हमेशा पेड़ों, पौधों और वनस्पतियों के संरक्षण पर जोर दिया और एक कृषि बुनियादी ढांचे के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

डॉ. राम मनोहर लाल जी ने हमारे किसानों की बेहतर आय सुनिश्चित करने और बेहतर सिंचाई सुविधाएं प्रदान करने और खाद्य और दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए आवश्यक उपायों के बारे में व्यापक पैमाने पर जन-जागृति करने की बात कही थी। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के बहुमूल्य योगदान के बारे में भी बताया, जिन्होंने 1979 में अपने भाषण में हमारे किसानों से नई तकनीक का उपयोग करने और नए नवाचारों को अपनाने का

आग्रह किया था।

उन्होंने राष्ट्र निर्माण में भारत रत्न नानाजी देशमुख के महान योगदान को भी याद किया। उन्होंने एक घटना सुनाई जब नानाजी और जेपी नारायण भ्रष्टाचार के खिलाफ युद्ध लड़ रहे थे, जहां पटना में जेपी नारायण पर जानलेवा हमला हुआ था। तब नानाजी देशमुख ने उस आक्रमण को अपने ऊपर ले लिया। इस हमले में नानाजी बुरी तरह घायल हो गए, लेकिन वे जेपी के जीवन या ग्रामीण विकास में उनके योगदान को बचाने में सफल रहे, जहां वे पूर्णकालिक राजनीति छोड़कर ग्रामोदय आंदोलन में शामिल हो गए।

राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्र के प्रति राजमाता जी के योगदान को साझा किया। उन्होंने कहा कि राजमाता ने अपना पूरा जीवन लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया। शाही परिवार से होने के कारण उनके पास धन, शक्ति और अन्य संसाधनों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन फिर भी उन्होंने एक मां के स्नेह के साथ जनसेवा की।

प्रधानमंत्री मोदी ने राष्ट्रीय ध्वज को डिजाइन करने वाले पिंगली वेंकैया जी और राष्ट्रीय ध्वज को तिरंगे को आकार देने में विशिष्ट भूमिका निभाने वाली महान क्रांतिकारी मैडम कामा को भी उनकी जयंती पर याद किया।

इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने हमारे राष्ट्र के गुमनाम नायकों के बारे में भी बात की। भीकाजी कामा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल सबसे बहादुर महिलाओं में से एक थीं। उन्होंने बेटियों को सशक्त बनाने के लिए देश-विदेश में कई अभियान चलाए; कई प्रदर्शनियों का आयोजन किया। निश्चित रूप से भीकाजी कामा स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे साहसी महिलाओं में से एक थीं। उन्होंने 1907 में जर्मनी में तिरंगा फहराया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से संत रामानुजाचार्य को विनम्र श्रद्धांजलि भी दी और नागरिकों को वर्ग विभाजन, अस्पृश्य और अछूत के बीच की खाई और जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ उनके अथक संघर्ष की याद दिलाई और सामाजिक एकता की वकालत की। संत रामौजाचार्य जी ने हजारों साल पहले एक आंदोलन शुरू किया, मंदिरों में प्रवेश की अनुमति का। उन्होंने 12वीं सदी के महान संत और कर्नाटक के समाज सुधारक जगत गुरु बसवेश्वर के बारे में भी बात की। प्रधानमंत्री मोदी ने कामगारों पर उनके गहन विचारों की याद दिलाई। उन्होंने कन्नड़ में 'काय कवे कैलास' का उल्लेख किया था, जिसका अर्थ है, यह केवल आपकी दृढ़ता के माध्यम से संभव है कि कोई शिव के निवास स्थान कैलाश को प्राप्त कर सकता है। इसका अर्थ है, यह केवल प्रयास या कर्म है जो किसी को स्वर्ग या स्वर्ग प्राप्त करने की ओर ले जाता है। अर्थात श्रम, परिश्रम ही शिव है।

मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक महान विचारक श्रीमान दत्तोपंत ठेंगड़ी के शब्दों को भी याद किया, जिन्होंने मजदूर वर्ग पर बहुत विचार-विमर्श किया था। एक ओर वे माओवाद से प्रेरित थे, 'दुनिया के मजदूरों एक हो' , दूसरी ओर वे 'मजदूरों, आओ, दुनिया को एक करो ' की वकालत करते थे।

प्राचीन पारंपरिक ज्ञान के माध्यम से भारत को प्रेरित करना और भारत की आत्मा को पुनः जीवंत बनाना

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं बार-बार कहता हूं कि हमें अपने इतिहास, परंपराओं और संस्कृति के इतिहास को बार-बार देखना चाहिए । जो हमें ऊर्जा और प्रेरणा देता है।

-प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हमेशा हमारी व्यापक सांस्कृतिक विरासत की वकालत करते रहे हैं और इसे साबित करने का कोई मौका नहीं चूकते है। अपने रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री ने जनता के बीच गहरा संबंध स्थापित करने के लिए प्राचीन हिंदू ग्रंथों को संदर्भ के रूप में इस्तेमाल किया और जनता को प्रेरित करने के लिए इन ग्रंथों में श्लोकों या मंत्रों का इस्तेमाल किया और उन्हें इन शास्त्रों के ज्ञान के महत्व को समझाया। उन्होंने न

केवल मन की बात के माध्यम से प्राचीन पारंपरिक ज्ञान का प्रसार किया, बल्कि देशभर में मनाए जाने वाले कई त्योहारों, परंपराओं और संस्कृति की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने नागरिकों को इन महत्वपूर्ण त्योहारों को मनाकर अपनी एकता दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से नागरिकों को पर्यावरण के महत्व के बारे में बताया और श्रोताओं से अपील की कि वे स्वयं को प्रकृति से जोड़ने के लिए सचेत प्रयास करें और साथ ही आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण की रक्षा करें। उन्होंने हमारे प्राचीन ग्रंथों में निहित प्राचीन ज्ञान पर भी प्रकाश डाला, जो पर्यावरण को ऊर्जा के मूल स्रोत के रूप में वर्णित करता है। उन्होंने कहा-

"वेद, पृथ्वी और पर्यावरण को ऊर्जा के मूल स्रोत के रूप में वर्णित करते हैं। और हजारों साल पहले लिखा गया अथर्ववेद प्रकृति और पर्यावरण के बारे में सबसे प्रामाणिक मार्गदर्शक ग्रंथ है। भारत में कहा गया है - "पृथ्वी माता है और मैं उसका पुत्र हूं"। वेदों के अनुसार हमारे भीतर की पवित्रता पृथ्वी के कारण है। धरती हमारी माता है और हम सब उसके बच्चे हैं।"

मन की बात के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने भगवान जगन्नाथ के कार महोत्सव के महत्व पर प्रकाश डाला, जिसे रथ यात्रा के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने आगे कहा कि यह त्योहार न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के कुछ हिस्सों में भी बहुत ही भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है। देश में वंचितों का भगवान जगन्नाथ से गहरा संबंध है, क्योंकि उन्हें गरीबों का भगवान माना जाता है। इसके बाद उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि अंग्रेजी में 'जुगनॉट' शब्द की व्युत्पत्ति भगवान जगन्नाथ के रथ से जुड़ी है, जिसका अर्थ है एक शानदार रथ, जो कभी रुकता नहीं है।

मन की बात की एक कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने पाठकों को सकारात्मकता के महत्व की याद दिलाई और एक संस्कृत श्लोक साझा किया, जिसका अर्थ है कि उत्साह से भरा आदमी बहुत मजबूत होता है, क्योंकि उत्साह से अधिक शक्तिशाली कुछ भी नहीं है। सकारात्मकता और जोश रखने वाले व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। अंग्रेजी में भी कहा जाता है, 'निराशावाद से कमजोरी, आशावाद से शक्ति'।

'उत्साह बलवान्य नास्त्युत्साहत्परं बलम्।

सोसात्स्य च लोकेषु एन किंचिदपि दुर्लभम्।।'

मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात को रेखांकित किया कि कैसे महिलाओं ने प्राचीन काल से भारत के इतिहास, संस्कृति और परंपरा को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समाज में उनका रुतबा और उनका योगदान पूरी दुनिया के लिए विस्मयकारी साबित हुआ है। लोपामुद्रा हो, गार्गी हो, मैत्रेयी हो; अक्का महादेवी की विद्या, या मीराबाई भक्ति हो या अहिल्याबाई होल्कर का शासन हो या रानी लक्ष्मीबाई का शौर्य, नारी शक्ति ने हमेशा हमें प्रेरित किया है। उन्होंने स्कंद पुराण के उन श्लोकों का हवाला दिया, जो न केवल बेटियों के मूल्य पर प्रकाश डालते हैं, बल्कि इस विचार को भी रेखांकित करते हैं कि महिलाएं पुरुषों की तरह ही सक्षम और शक्तिशाली हैं।

दशपुत्र - समाकन्या, दशपुत्रान् प्रवर्धयन्।

अभी फलम् लभते मर्यः, तत् लभ्यम् नाइकैकया।।

यानी एक बेटी दस बेटों के बराबर होती है। दस पुत्रों से जितना पुण्य मिलता है, उतना ही पुण्य एक पुत्री से कमाया जाता है।

नागरिकों को योग के महत्व को समझाने के लिए, प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में महान संस्कृत कवि भरतहरि के 'शतकत्रयम' के श्लोक का हवाला दिया।

गांभीर्यंयस्यपिताक्षमाचजननीशान्तिश्चिरंगेहिनी,

सत्यंसुनुरयंदयाचभगिनीभ्रातामनःसंयमः।

शय्याभूमितलंदिशो स पिवसनंज्ञानामृतोजनं,

एतेयस्यकुटिम्बिनःवदसखेकस्माद्भयंयोगिनः।।

जिस पुरुष का पिता धैर्य है, माता क्षमा है और शांति उसकी पत्नी है, सत्य उसका मित्र है, करुणा उसकी बहन है और संयम उसका भाई है और जिसका बिस्तर महान पृथ्वी है, वह महान आकाश से आच्छादित है और जिसका भोजन केवल है ज्ञान। वास्तव में वह एक योगी है, जो किसी भय को नहीं जानता।

सदियों पहले व्यक्त किए गए इस अवलोकन का सीधा अर्थ यह है कि नियमित रूप से योगाभ्यास करने से व्यक्ति उन लाभकारी गुणों को आत्मसात करने की ओर अग्रसर होता है, जो रिश्तेदारों और दोस्तों की तरह हमारे पक्ष में खड़े होते हैं। योग के अभ्यास से साहस का निर्माण होता है, जो एक पिता के समान सदैव हमारी रक्षा करता है। योग के अभ्यास से क्षमा भाव का अंकुरण होता है, जैसे एक मां अपने बच्चों के लिए करती है और मानसिक शांति हमारी स्थायी मित्र बन जाती है। भर्तृहरि ने कहा है कि नियमित यौगिक अभ्यास से सत्य हमारी संतान बन जाता है, दया हमारी बहन बन जाती है, संयम हमारा भाई बन जाता है, पृथ्वी हमारे बिस्तर में बदल जाती है और ज्ञान हमारी भूख को मिटा देता है। जब इतने सारे गुण किसी के साथी बन जाते हैं, तो वह योगी सभी प्रकार के भय पर विजय प्राप्त कर लेता है।

शिक्षक दिवस पर मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने संस्कृत के एक श्लोक का हवाला देकर जीवन में गुरु के महत्व को समझाया,

एकमपि अक्षरमस्तु गुरुः शिष्यं प्रवाहयेत।

प्रथिव्यां नास्ति तद-दव्यं, यद-दत्त्वा ह्यनृणीभवेत।।

जब एक गुरु शिष्य को रत्तीभर भी ज्ञान प्रदान करता है, तो पूरी पृथ्वी पर कोई सामग्री या धन नहीं है, जिसका उपयोग छात्र गुरु को चुकाने के लिए कर सके।

प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) के महत्व पर भी प्रकाश डाला और इसे न्याय का अभिन्न अंग बताया। उन्होंने आगे बताया कि मानवाधिकार हमेशा भारतीय संस्कृति और वैदिक शिक्षाओं का एक अभिन्न अंग रहे हैं और उन्होंने संस्कृत श्लोक को उद्धृत किया-

'न्यायमूलं स्वराज्यं स्यात्'

स्वराज के मूल में न्याय निहित है और न्याय की बात करते समय उसमें मानवाधिकार की भावना निहित है।

उन्होंने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के 25 साल पूरे करने के बारे में भी बात की और बताया कि कैसे एनएचआरसी ने अपनी स्थापना के बाद से न केवल मानवाधिकारों की रक्षा की है, बल्कि मानव गरिमा को भी बढ़ाया है। उन्होंने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' (सभी समृद्ध और सुखी हों) के वैदिक विचार को दर्शाते हुए एनएचआरसी के आदर्श वाक्य पर भी प्रकाश डाला।

मन की बात के एक संस्करण में उन्होंने पर्यावरण को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखने और स्वस्थ जीवनशैली की भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए नागरिकों द्वारा की गई पहल की सराहना की। इसके बाद उन्होंने नागरिकों को छोटे रचनात्मक कदम की याद दिलाई, जो सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उसी को प्रदर्शित करने वाले प्राचीन पद का हवाला दिया।

द्यौः शान्तिः अंतरिकं शान्तिः,

पृथ्वी शान्तिः आपः शान्तिः ओषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः ,

सर्वं शान्तिःशान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

इसका अर्थ है- हे प्रभु, तीनों लोकों में, जल में, वायु में, आकाश में, अग्नि में, वायु में, औषधियों में, वनस्पतियों में, बगीचों में, उपचेतन में, समग्र रूप से शांति बनी रहे। प्रत्येक आत्मा को, प्रत्येक हृदय को, मुझमें, आप में, कण-कण में और ब्रह्मांड में सर्वत्र शांति प्रदान करें। शांति शांति शांति।

पानी से संबंधित चुनौतियों के मुद्दे पर बोलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में हमारी संस्कृति में पानी के महत्व को प्रदर्शित किया और ऋग्वेद के अपह सुक्तम के श्लोक का हवाला दिया-

आप हाय ष्ठ मयोभुवस्था एन ऊर्जे उपाय।

माहे रनाथ ठीक है।।1।।

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सितंबर के महीने को पोषण माह के रूप में मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्र और पोषण का आपस में गहरा संबंध है। उन्होंने उक्ति को याद किया- 'अन्नं तथा मनः।' जिसका अर्थ है कि मानसिक और बौद्धिक विकास सीधे हमारे भोजन सेवन की गुणवत्ता से संबंधित है। उन्होंने कहा कि उचित पोषण बच्चों और छात्रों को उनकी इष्टतम क्षमता प्राप्त करने और उनकी ताकत दिखाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि इसके लिए बच्चों को अच्छी तरह से पोषित करने के लिए मां को उचित पोषण प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने जी-20 की अध्यक्षता पर बात की और इस बात पर प्रकाश डाला कि शांति हो या एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता हो या सतत विकास, भारत के पास इनसे जुड़ी चुनौतियों का समाधान है। उन्होंने श्रोताओं को बताया कि जी-20 की थीम दुनिया को भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता के मूल सिद्धांत को दर्शाती है, जो 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की बात करता है और 'वसुधैव कुटुम्बकम' के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम या 'विश्व एक परिवार है' का विचार भी रखा। यह सिद्धांत सभी जीवित प्राणियों की परस्पर संबद्धता और सभी के कल्याण की दिशा में काम करने के महत्व पर जोर देता है। उन्होंने वैश्विक भलाई के सामूहिक दृष्टिकोण के प्रति लोगों को प्रेरित करने के लिए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का उपयोग करते हुए प्राचीन पाठ को उद्धृत किया-

सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु।

सर्वेषां शान्तिर्भवतु।

सर्वेषां पूर्णंभवतु।

सर्वेषां मंगलंभवतु।

शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार फिर एक प्रेरणादायक कहानी साझा की, जहां एक व्यक्ति ने 'सामुदायिक पुस्तकालय और संसाधन केंद्र' शुरू किया था। प्रधानमंत्री मोदी ने सामुदायिक पुस्तकालय की स्थापना करके शिक्षा के क्षेत्र में बंसा, हरदोई के एक व्यक्ति द्वारा किए गए प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए एक संस्कृत कविता 'विद्याधनम सर्व धनम प्रधानम' का हवाला दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- 'अगर कोई ज्ञान दान कर रहा है, तो वह समाज हित में नेक काम कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में जला हुआ एक छोटा सा दीपक भी पूरे समाज को आलोकित कर सकता है।'

कोविड-19 के प्रकोप के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से महामारी के प्रभाव से निपटने में लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए विभिन्न मंत्रों को दिया। इसमें शामिल हैं :-

- एक कहावत 'इवम एवम विकार, अपि तरुण साध्याते सुखम' का उद्धरण दिया है, जिसका अर्थ है, 'एक बीमारी और उसके संकट को शुरू में ही समाप्त कर देना चाहिए ।'
- स्वास्थ्य के महत्व को समझाते हुए और नागरिकों से कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करने की अपील करते

हुए उन्होंने 'आर्ययोगम परम भाग्यम स्वास्थ्यम सर्वार्थ साधनम' का हवाला दिया, यानी स्वास्थ्य सबसे बड़ा सौभाग्य है। संसार के सभी सुखों का एक मात्र साधन स्वास्थ्य है। ऐसे में नियम तोड़ने वाले अपनी जान से खूब खिलवाड़ कर रहे हैं।

- कोविड-19 के बारे में जागरूकता फैलाना और नागरिकों से सतर्क रहने और लापरवाही न करने की अपील करना- 'अग्निः शेषं ऋणः शेषं व्याधिः शेषं तथैव च। पुनः पुनः प्रवर्धेत तस्मात् शेषं एन कारयेत्।।'

  अर्थात यदि आग को पूरी तरह से न बुझाया जाए, ऋण को पूरा न चुकाया जाए और इसी तरह रोग को पूरी तरह से न जीता जाए, तो इन तीनों में बार-बार बढ़ने की प्रवृत्ति होती है और समस्या बन जाती है ।

- उन्होंने हमारी पारंपरिक आयुर्वेदिक दवाओं के महत्व के बारे में भी बताया, जो महामारी के दौरान प्रतिरक्षा में सुधार के लिए विभिन्न तरीकों की पेशकश करती हैं। उन्होंने आयुर्वेदिक काढ़े के उपयोग, प्रतिदिन भाप लेने, गरारे करने और सांस लेने के व्यायाम पर जोर दिया।

- उन्होंने लोगों को कोरोना वायरस के प्रसार की गंभीरता को समझाने के लिए रामायण के संदर्भों का भी उपयोग किया और कहा कि जब तक आवश्यक हो, अपने दरवाजे पर 'लक्ष्मण रेखा' लगाकर रखें।

मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने हमारे देश में मनाए जाने वाले विभिन्न त्योहारों जैसे विजयदशमी, दिवाली, रामनवमी, संवत्सरी पर्व, गणेश चतुर्थी, ओणम, नवरात्र, मकर संक्रांति, वसंत पंचमी, महाशिवरात्रि, होली, ईद-उल-जुहर और क्रिसमस पर चर्चा की। मन की बात के विभिन्न संस्करणों का विश्लेषण करते हुए यह देखा गया कि प्रधानमंत्री मोदी ने भारत की सांस्कृतिक विविधता पर प्रकाश डाला और बताया कि त्योहार कैसे देश के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम में विभिन्न समुदायों के बीच मनाए जाने वाले विभिन्न त्योहारों के महत्व को पहचाना है, जिससे एक ऐसे समाज की स्थापना हुई है, जो समावेशी है, जो धार्मिक और जातीय मतभेदों से परे है।

- उन्होंने विजयदशमी के अवसर पर अपनी पहली मन की बात शुरू की, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है और देशवासियों से देश से गंदगी को खत्म करने का संकल्प लेने को कहा।

- दिवाली पर उन्होंने नागरिकों से कम से कम खादी का एक उत्पाद खरीदने को कहा, जिससे गरीबों को मदद मिले। मन की बात के एक अन्य संस्करण में उन्होंने रोशनी के त्योहार के बारे में बात की, दीपावली 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का संदेश देती है, जिसका अर्थ है 'अंधकार से प्रकाश की ओर जाना।'

- रक्षाबंधन पर बोलते हुए उन्होंने नागरिकों से बहनों और मां को प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना या जीवन ज्योति बीमा योजना जैसी बीमा योजना का उपहार देने का आग्रह किया, जो वास्तव में उन्हें भविष्य में सुरक्षा प्रदान करता है।

- छठ पूजा के अवसर पर मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने छठ पूजा के अनूठे महत्व पर बात की, जहां इस अवसर पर लोग सर्वशक्तिमान सूर्य को अर्घ्य देते हैं। लेकिन कहावत है कि लोग केवल उगते सूरज को ही अर्घ्य देते हैं। हालांकि छठ पूजा के दौरान लोग डूबते सूर्य की भी पूजा करते हैं। इस परंपरा के पीछे एक बहुत गहरा सामाजिक संदेश है कि 'उतार-चढ़ाव जीवन का अभिन्न अंग हैं'। इसलिए हमें हर स्थिति में एक समान संतुलन बनाए रखना चाहिए। यह हमारे जीवन में स्वच्छता के महत्व पर भी जोर देता है।

- उन्होंने 'ओणम' के बारे में बात की, जो केरल में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाला एक प्रमुख त्योहार है। उन्होंने उस संदेश पर प्रकाश डाला, जो ओणम देता है, 'प्यार और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए - नई आशाओं और आकांक्षाओं को जगाता है, और लोगों को नया विश्वास देता है।'

- प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि कैसे हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में नए साल को कई तरीकों से मनाया जाता है जैसे कि नया साल महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा है, आंध्र और कर्नाटक में उगादी है, सिंधी के लिए यह चेटी चंद है, कश्मीर में नवरेह है, अबिहार के मिथिला क्षेत्र में जुड-शीतल और मगध क्षेत्र में सतुवाणी का त्योहार है।

- उन्होंने लोहड़ी जैसे त्योहारों के बारे में भी बताया, जो पंजाब और उत्तर-भारत में मनाया जाता है, जबकि यूपी-बिहार खिचड़ी और तिल-संक्रांति मनाई जाती है। राजस्थान में इसे संक्रांत, असम में माघ-बिहू और तमिलनाडु में पोंगल कहा जाता है, जो अपने विशेष तरीके से मनाया जाता है, लेकिन उनकी उत्पत्ति प्रकृति और कृषि से लगाव से होती है।
- मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने हमारे पारंपरिक कैलेंडर के महत्व को भी प्रदर्शित किया, जो चंद्रमा और सूर्य की गति पर आधारित है। उन्होंने कहा कि हमारे त्योहारों की तिथि चंद्र और सौर कैलेंडर के अनुसार निर्धारित की जाती है। गुड़ी पड़वा, चेटीचंड, उगादि चंद्र कैलेंडर के अनुसार मनाए जाते हैं, तमिल पुथंडु, विशु, वैसाख, बैसाखी, पोइला बैसाख, बिहू - ये सभी त्योहार सौर कैलेंडर के आधार पर मनाए जाते हैं।
- जैन समुदाय द्वारा मनाए जाने वाले संवत्सरी पर्व के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात में क्षमा, अहिंसा और भाईचारे के प्रतीक इस पर्व के महत्व पर प्रकाश डाला। इसे क्षमावनी पर्व के रूप में भी जाना जाता है और इस दिन लोग पारंपरिक रूप से एक दूसरे को 'मिच्छामिदुक्कड़म' कहकर बधाई देते हैं। प्रधानमंत्री मोदी महापुरुषों के गुण के रूप में क्षमा के महत्व पर भी जोर देते हैं और यह भी बताते हैं कि यह एक ऐसा गुण है, जिसे सभी को अपनाना चाहिए।
- होलिका दहन के समारोह के महत्व को साझा किया, जहां इस दिन हम अपने निहित दोषों को आग में जलाते हैं। उन्होंने कहा कि होली हमें आपसी मनमुटाव भुला देती है और हमें प्यार, एकता और भाईचारे का संदेश देते हुए एक-दूसरे की खुशियों में शामिल होने का मौका देती है।
- उन्होंने हरतालिका तीज जैसे त्योहारों के बारे में भी बताया, जो 30 अगस्त को मनाया जाता है। 1 सितंबर को ओडिशा में नुआखाई का त्योहार भी मनाया जाएगा। नुआखाई का सीधा सा अर्थ है नया भोजन, यानी यह भी कई अन्य त्योहारों की तरह, हमारी कृषि परंपराओं से जुड़ा त्योहार है, महाशिवरात्रि, अक्षय तृतीया जो एक वार्षिक हिंदू और जैन त्योहार है, जो वैशाख के हिंदू महीने के तीसरे दिन पड़ता है। नवरात्रि, जो शक्ति साधना और कई अन्य के त्योहार के रूप में भी पूजनीय है।

विजयादशमी, रक्षा बंधन और छठ पूजा मनाते पीएम मोदी

- मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत में एक प्रमुख धार्मिक तीर्थ कुंभ मेले के महत्व और भव्यता पर भी जोर दिया, जो दुनियाभर के लाखों लोगों को आकर्षित करता है। कुंभ मेले को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, और इसके आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व पर प्रधानमंत्री मोदी द्वारा प्रकाश डाला गया है। उन्होंने स्वच्छता के महत्व पर भी प्रकाश डाला और लोगों को अपने अनुभव और कुंभ मेले की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अलावा उन्होंने सुझाव दिया कि कुंभ मेला न केवल आस्था और भक्ति का उत्सव होना चाहिए, बल्कि राष्ट्रीय एकता, रचनात्मकता और वैश्विक पर्यटन को बढ़ावा देने का अवसर भी होना चाहिए।
- 26 मार्च, 2023 को मन की बात के 99वें संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने एक नई परंपरा पर प्रकाश डाला, जो काशी (वाराणसी के रूप में भी जाना जाता है) में स्थापित हुई है। इसके तहत काशी और तमिल क्षेत्र के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों का जश्न मनाया जा रहा है। यह 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' (एक भारत, महान भारत) की भावना को आगे बढ़ाता है, जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच एकता और समझ के महत्व पर जोर देता है। प्रधानमंत्री मोदी ने आगामी 'सौराष्ट्र-तमिल संगमम' कार्यक्रम की घोषणा की, जो गुजरात के

सौराष्ट्र क्षेत्र और तमिलनाडु के बीच संबंधों का जश्न मनाने के लिए गुजरात के विभिन्न हिस्सों में आयोजित किया जाएगा। उन्होंने इस ओर भी इशारा किया कि कैसे सौराष्ट्र के कई लोग सदियों पहले तमिलनाडु में बस गए थे और अभी भी 'सौराष्ट्री तमिल' के रूप में जाने जाते हैं। यह आयोजन इन दो क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने और तमिलनाडु में बसे सौराष्ट्र के लोगों का ध्यान आकर्षित करने का एक अवसर है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे सांस्कृतिक संबंध और एकता के लिए आयोजित कार्यक्रम भारत के विविध क्षेत्रों और समुदायों के बीच एकजुट राष्ट्रीय पहचान और साझा इतिहास की भावना को बढ़ावा देने के सरकार के बड़े एजेंडे के अनुरूप है।

- उसी संस्करण में प्रधानमंत्री मोदी ने मां शारदा के भव्य मंदिर के निर्माण के लिए जम्मू-कश्मीर के स्थानीय लोगों की कड़ी मेहनत की प्रशंसा की, जो शारदा पीठ के मार्ग पर स्थित है।

मन की बात से आगे बढ़कर प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय सभ्यता की जड़ों से अपने गहरे जुड़ाव को दिखाने के विभिन्न मंचों पर एक ठोस प्रयास किया है, जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि जब भी कोई विदेशी गणमान्य व्यक्ति भारत आता है, तो प्रधानमंत्री मोदी उसे भारत की समृद्ध परंपरा से अवगत करवाना नहीं भूलते हैं। इसके अलावा माननीय प्रधानमंत्री मोदी इन गणमान्य व्यक्तियों को ऐसे उपहारों देते हैं, जो हमारी सांस्कृतिक लोकाचार को दर्शाते हैं और जो उनके मानस पर स्थायी भावना को चिह्नित करते हैं। पिछले नौ वर्षों में दुनियाभर के गणमान्य व्यक्तियों को भारत की विविध संस्कृति का अनुभव मिला है, चाहे वह चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग का तमिलनाडु के महाबलीपुरम का दौरा हो या अहमदाबाद में जापान पूर्व राष्ट्रपति शिंजो आबे और प्रथम महिला की मेजबानी का अवसर हो। उन्होंने साबरमती आश्रम और सिदी सैय्यद मस्जिद का दौरा किया। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी और मिर्जापुर का दौरा किया। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री मैल्कम टर्नबुल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ दिल्ली में अक्षरधाम मंदिर का दौरा किया। हाल ही में यूके के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और डब्ल्यूएचओ के डीजी डॉ. टेड्रोस घेब्रेयसस ने साबरमती गांधी आश्रम, अहमदाबाद, गुजरात का दौरा किया। हमारी सांस्कृतिक विरासत प्रतीका के रूप में प्रधानमंत्री मोदी ने विदेशी गणमान्य व्यक्तियों और समकक्षों को भारत के सांस्कृतिक महत्व से संबंधित उपहार भेंट किए हैं। पूर्व प्रधानमंत्री डेविड कैमरन को भगवद गीता के शिलालेख भेंट किए। पूर्व प्रधानमंत्री हार्पर को गुरु नानक देव के शिष्यों भाई बाला और भाई मरदाना के साथ एक पारंपरिक भारतीय लघु चित्र भेंट किया गया। सऊदी अरब की अपनी यात्रा के दौरान श्री मोदी ने राजा सलमान को भारतीय सांस्कृतिक विरासत और भारत-सऊदी व्यापार संबंधों की एक महत्वपूर्ण कड़ी यानी भारत की पहली मस्जिद, 629 ईस्वी में निर्मित चेरामन जुमा मस्जिद की सोने की परत चढ़ी हुई प्रतिकृति उपहार में दी।

फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और जापान के नेताओं के साथ विभिन्न सांस्कृतिक विरासत स्थलों पर पीएम मोदी

भारतीय कलाकृतियां हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग हैं और उन्हें हमारे देश में वापस लाना भारत के गौरव को बहाल करने की एक प्रक्रिया है। 2014 के बाद से प्रधानमंत्री मोदी के गतिशील नेतृत्व में भारत सरकार ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों से लगभग 228 विरासत वस्तुओं को प्रत्यावर्तित किया है, जो सदियों पहले भारत से चोरी या तस्करी कर लाई गई थीं। 2014 से पहले केवल 13 वस्तुएं थीं, जो हमारे देश को लौटाई गई थीं। हमारे प्रधानमंत्री मोदी के विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों के साथ मधुर व्यक्तिगत संबंधों के कारण यह संभव हुआ और इसलिए

उनकी शीघ्र वापसी हुई। 'मन की बात' के 86 वें संस्करण के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि "कैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, हॉलैंड, इटली और कनाडा जैसे देशों ने चोरी हुई भारत की विरासत के बारे में भारत की चिंताओं को समझा और 2014 से सरकार के कई प्रयासों के माध्यम से लगभग 200 मूर्तियों को देश में वापस लाने में मदद की।" प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों के कारण ही चोरी की गई कलाकृतियों को भारत लाया जा सका है। संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के 76वें सत्र को संबोधित करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी की संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा के दौरान, 157 चोरी की कलाकृतियों और पुरावशेषों को भारत लाया गया। हाल ही में, प्रधानमंत्री मोदी ने ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन के साथ अपनी आभासी बैठक से पहले मार्च, 2022 में ऑस्ट्रेलिया से प्राप्त 29 कलाकृतियों का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण किया। लौटाई गई कलाकृतियों में शिव भैरव, राजस्थान से 9वीं-10वीं शताब्दी की बलुआ पत्थर की मूर्ति, बाल-संत संबंदर, तमिलनाडु से 12वीं शताब्दी की कांस्य की मूर्ति और 1830-40 के दौरान की शिव और पार्वती की एक पेंटिंग शामिल है, जो कांगड़ा से संबंधित है।

अतुल्य भारत : पर्यटन को लेकर भारत की रूपरेखा को पुनर्परिभाषित करता

मन की बात के विभिन्न संस्करणों में प्रधानमंत्री मोदी ने पर्यटन के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की है और रेखांकित किया कि 'पर्यटन देश की सुंदरता को देखने और इसके लोगों को समझने के लिए सबसे अच्छा साधन है।'

मन की बात में उन्होंने देशवासियों से अपील की कि हमारे नागरिक देश के जिस भी हिस्से में जाएं, वहां की तस्वीर जरूर साझा करें। इस अपील का प्रधानमंत्री मोदी को देश से जबर्दस्त समर्थन हासिल हुआ। उन्होंने कहा कि लाखों लोगों ने ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर तस्वीरें पोस्ट की हैं और उन तस्वीरों में भारत की विविधता और कई शानदार दृश्यों को देखा जा सकता है; यह वास्तुकला, कला, प्रकृति, झरने, पहाड़, नदियां या समुद्र है। इस पहल के माध्यम से लोगों ने पर्यटन के क्षेत्र में काफी योगदान दिया है, जहां किसी ने आंध्र प्रदेश की बेलम गुफाओं की तस्वीर पोस्ट की है, तो किसी ने मध्य प्रदेश के ओरछा किले या राजस्थान के मेनाल झरने की तस्वीर पोस्ट की है।

मन की बात के एक अन्य कार्यक्रम में उन्होंने सभी प्रकृति प्रेमियों को उत्तर-पूर्व की यात्रा के लिए आमंत्रित किया, जो प्रकृति में दिव्यता का अनुभव करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि इसमें पर्यटन स्थल बनने की अपार संभावनाएं हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात के माध्यम से श्रोताओं को यात्रा के दौरान एक डायरी रखने और नए लोगों से मिलने पर अनुभव लिखने की सलाह दी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'जब आप यात्रा के दौरान कुछ देखते, कुछ नया सीखते हैं, तो अपने देश को समझने के लिए और इसकी विविधता को पहचाने का अवसर प्राप्त होता है।'

उन्होंने मन की बात के एक संस्करण में यह भी उल्लेख किया कि भारतीय त्योहारों ने हमारे देश में पर्यटन को बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया है। चाहे गुजरात में नवरात्रि उत्सव हो या बंगाल में दुर्गा उत्सव, देश ने विभिन्न देशों के पर्यटकों को आकर्षित किया है और हमारे देश के अन्य त्योहार भी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने का अवसर प्रदान करते हैं।

एक अन्य संस्करण में, प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न संस्कृतियों, व्यंजनों और जीवन के तरीकों को सीखने और समझने के साधन के रूप में यात्रा के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने लोगों को न केवल पर्यटकों के रूप में, बल्कि छात्रों के रूप में भी यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे वे उन स्थानों को आत्मसात करने का प्रयास कर सकें, जहां वे जाते हैं। उन्होंने #इनक्रेडिबल इंडिया, माईगॉव और नरेंद्र मोदी ऐप पर कम प्रसिद्ध, लेकिन खूबसूरत जगहों के बारे में तस्वीरें साझा करके और लोगों को वहां जाने के लिए प्रोत्साहित करके भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह अभ्यास देश के पर्यटन उद्योग के विकास में योगदान देगा और लोगों को भारत की विविधता की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

उन्होंने मन की बात के माध्यम से नागरिकों को यह भी बताया कि भारत सरकार बौद्ध पर्यटन के लिए आधारभूत संरचना विकसित कर रही है, जो दक्षिण पूर्व एशिया को भारत के महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों से जोड़ेगी। भारत ने कई बौद्ध मंदिरों के जीर्णोद्धार में भागीदारी की है, जिसमें म्यांमार के बागान में सदियों पुराना शानदार आनंद मंदिर भी

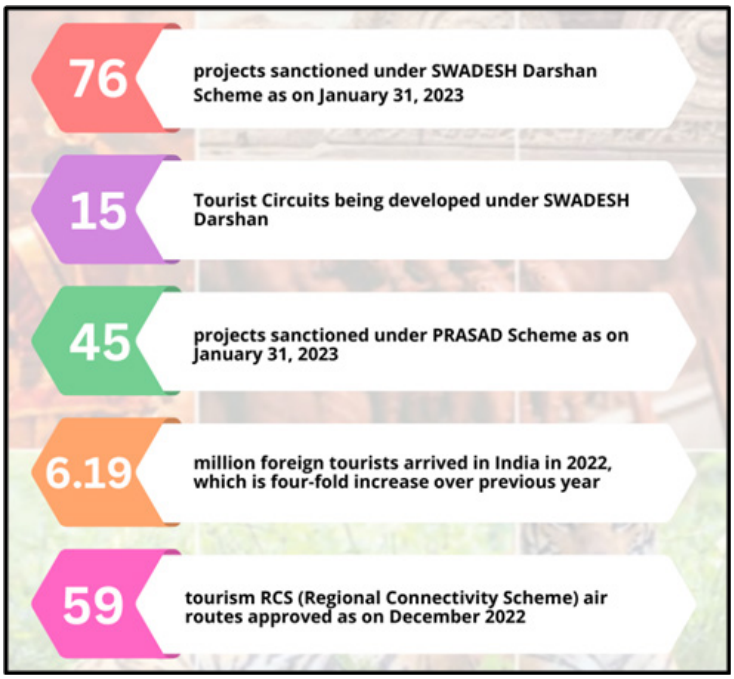

शामिल है।

मन की बात के माध्यम से नागरिकों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने पर्यटन में भारत की प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की, जहां पिछले पांच वर्षों में पर्यटन में हमारी रैंक 65 से 34 हो गई है। उन्होंने इस बड़ी उपलब्धि का श्रेय नागरिकों के सहयोग को दिया और इस प्रगति में योगदान देने में स्वच्छता अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने इस लक्ष्य की दिशा में निरंतर प्रयासों को प्रोत्साहित करते हुए देश की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष का जश्न मनाने तक भारत को दुनिया के शीर्ष पर्यटन स्थलों में से एक बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने भारत में त्योहार-पर्यटन के महत्व पर जोर दिया और बताया कि यह कैसे अन्य राज्यों और देशों के लोगों को आकर्षित कर सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने सभी से होली, दिवाली, ओणम, पोंगल और बिहू जैसे त्योहारों पर खुशी फैलाने का आग्रह किया। और इन त्योहारों को मनाने में दुनिया के विभिन्न हिस्सों से लोगों को शामिल करने की सलाह दी। उन्होंने भारत से बाहर रह रहे भारतीयों से भी भारत में त्योहारी-पर्यटन को बढ़ावा देने की अपील की।

प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न मंचों पर हमेशा पर्यटन के विकास पर जोर दिया है और इस क्षेत्र को राष्ट्र निर्माण और रोजगार के अवसर पैदा करने में महत्वपूर्ण माना है। 2023 के बजट के बाद उन्होंने राष्ट्र को संबोधित किया और 'मिशन मोड में विकासशील पर्यटन' पर बात की। पिछले 9 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में सरकार ने भारत में पर्यटन क्षेत्र को विकसित करने के लिए गंभीर प्रयास किए हैं, जो बजट के आवंटन से स्पष्ट है, जिसमें 2015-16 में 878 करोड़ के मुकाबले एक जबरदस्त वृद्धि के साथ यह आवंटन 2023-24 में 2400 करोड़ हो गया।

प्रसाद योजना के तहत सोमनाथ से केदारनाथ तक, अयोध्या से अजमेर तक, वाराणसी से लेकर वेलंकन्नी तक सभी प्रसिद्ध, हर धर्म के स्थानों को विकसित किया जा रहा है, जिसमें चेरामन जुमा मस्जिद, हजरतबल, अजमेर, सेंट थॉमस तीर्थ और वेलंकन्नी का उन्नयन भी शामिल है। कश्मीर में सेंट ल्यूक चर्च का जीर्णोद्धार किया गया और 3 दशकों के बाद इसे फिर से खोल दिया गया। आगे 2014 से पर्यटन क्षेत्र में विभिन्न उपलब्धियों की सूची नीचे दी गई है।

- 2016 से 2019 तक विदेशी मुद्रा आय 7.0 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ी, लेकिन 2020 में कोविड-19

महामारी के कारण इसमें गिरावट आई।

- वित्त वर्ष 20 में भारत में पर्यटन क्षेत्र में 39 मिलियन नौकरियां थीं, जो देश में कुल रोजगार का 8.0 प्रतिशत थीं। ऐसा अनुमान है कि यह क्षेत्र 2029 तक लगभग 53 मिलियन नौकरियां प्रदान करेगा।
- विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद (डब्ल्यूटीटीसी) के अनुसार, भारत 2019 में सकल घरेलू उत्पाद में यात्रा और पर्यटन के कुल योगदान के मामले में 185 देशों में 10वें स्थान पर है। 2019 के दौरान सकल घरेलू उत्पाद में यात्रा और पर्यटन का योगदान कुल का 6.8 प्रतिशत था। यानी लगभग 13,68,100 करोड़ रुपये (194.30 बिलियन डॉलर)।
- 2019 के दौरान भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन (एफटीए) 3.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ 10.93 मिलियन रहा। 2019 के दौरान पर्यटन से एफईई (विदेशी मुद्रा आय) 4.8 प्रतिशत बढ़कर 1,94,881 करोड़ रुपये (29.96 बिलियन डॉलर) हो गया।
- भारत 2018 में 45.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर के प्रवाह के साथ यात्रा और पर्यटन में निवेश के मामले में विश्व स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा देश था, जो देश में कुल निवेश का 5.9 प्रतिशत था।

  होटल और पर्यटन क्षेत्र ने अप्रैल, 2000 और जून, 2021 के बीच 15.89 बिलियन अमेरिकी डॉलर का संचयी एफडीआई प्रवाह प्राप्त किया।
- इसके अलावा सरकार ने भारत को 365 दिनों के गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने, विशिष्ट रुचि वाले पर्यटकों को आकर्षित करने और अद्वितीय उत्पादों के लिए बार-बार आने को सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए हैं, जिसमें भारत को तुलनात्मक लाभ है। देश में गोल्फ, मेडिकल/वेलनेस, क्रूज और एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए बोर्ड/टास्क फोर्स/समितियों का गठन किया। गोल्फ, पोलो, मेडिकल और वेलनेस टूरिज्म को समर्थन देने के लिए मंत्रालय द्वारा दिशा-निर्देश भी तैयार किए गए हैं। तदनुसार, विकास और संवर्धन के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा निम्नलिखित आला उत्पादों की पहचान की गई है।

समापन टिप्पणी

मन की बात के 100 संस्करणों का विश्लेषण करने के बाद यह तर्क देना उचित होगा कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में जनता को शामिल करने की प्रधानमंत्री मोदी की इस अनूठी पहल ने वास्तव में एक प्रभावी कार्य किया है। लोगों के सुझावों और प्रधानमंत्री मोदी की व्यापक दृष्टि से प्रेरित होकर नागरिकों में राष्ट्रीय एकता की भावना जागी है और हमारी विकास यात्रा एक नए पथ पर चल पड़ी है। मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी की निरंतर प्रेरणा और प्रोत्साहन की चिंगारी ने जमीनी स्तर पर नायकों को पैदा किया है और हमें आत्मनिर्भर होने का मंत्र दिया है। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में अत्यधिक महत्व के मुद्दों का उल्लेख किया है, हमारी आबादी को राष्ट्र के लिए प्राथमिकता वाले एजेंडे से अवगत कराया और इसके लिए नागरिकों के बहुमूल्य योगदान की मांग की है। मन की बात के पहले 100 संस्करणों का विश्लेषण इस तथ्य पर जोर देता है कि यह मंच भारत की विशिष्ट संस्कृति, पहचान और राजनीति का जश्न मनाने के एक माध्यम के रूप में उभरा है।

जहां 'मन की बात' ने 100 एपिसोड पूरे कर लिए हैं, वहीं अभी इसे एक लंबा सफर तय करना है। 100वें एपिसोड में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश से कहा, ''मैं आपके परिवार के सदस्य के रूप में 'मन की बात' के माध्यम से आपके बीच रहा हूं, आपके बीच रहूंगा। हम अगले महीने फिर मिलेंगे। हम फिर से नए विषयों और नई जानकारी के साथ देशवासियों की सफलताओं का जश्न मनाएंगे।'' इसलिए, पीपीआरसी की टीम प्रधानमंत्री के इस मंच 'मन की बात' की और अधिक पहुंच और सफलता के लिए निम्नलिखित सुझाव देना चाहती हैः

1. मन की बात के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा उजागर किए गए मुद्दों को रचनात्मक साधनों का उपयोग करके आगे बढ़ाया जा सकता है जैसे कि इस मुद्दे पर एक वृत्तचित्र बनाना या लोकप्रिय नए चैनलों पर इस मुद्दे पर एक विस्तारित प्रस्तुति आयोजित करना।

2. मन की बात में चर्चा किये गए व्यक्तियों का आगे विभिन्न राष्ट्रीय मीडिया चैनलों, उदाहरण के लिए दूरदर्शन पर साक्षात्कार लिया जा सकता है, ताकि उन्हें देश के अन्य लोगों से जुड़ने में मदद मिल सके और उन्हें सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित किया जा सके।

3. जमीनी स्तर पर बेहतर पहुंच के लिए प्रत्येक पंचायत को रेडियो, प्रोजेक्टर, लाउडस्पीकर आदि जैसे किसी भी संभावित उपलब्ध माध्यम से मन की बात की अनिवार्य स्क्रीनिंग को बढ़ावा देना चाहिए।

संदर्भ

1. https://qrius.com/how-has-the-radio-continued-to-be-a-part-of-indian-households-for-91-years/#:~:text=During%20its%20short%20tenure%2C%20the,popularized%20it%20among%20the%20people
2. https://www.mygov.in/MannKiBaat/MannKiBaat-Highlights-September-2022-English.pdf
3. https://www.narendramodi.in/prime-minister-s-mann-ki-baat-on-all-india-radio-September-2015-297458
4. https://theprint.in/scientifix/singhbhum-in-india-could-have-been-first-land-mass-to-rise-from-oceans-3-billion-years-ago/765552/
5. https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/maximum-listeners-tune-into-mann-ki-baat-from-bihar/articleshow/57678794.cms?utm_source=contentofinterest&utm_medium=text&utm_campaign=cppst
6. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=71383#:~:text=The%20population%20of%20the%20country,Pillai%20and%20RGI%20Shri%20C.
7. http://docs.fdrlibrary.marist.edu/firesi90.html
8. https://theprint.in/features/azad-hind-radio-from-where-subhas-chandra-bose-spoke-his-mann-ki-baat-azaadi/353366/
9. File no. RTI/PrashantChauhan/PRBHA/00035/2023/3719
10. https://www.statista.com/statistics/271315/age-distribution-in-india/#:~:text=In%202021%2C%20about%2025.69%20percent,over%2065%20years%20of%20age.&text=India%20is%20one%20of%20the,its%20population%20is%20constantly%20increasing
11. https://www.narendramodi.in/prime-minister-narendra-modi-s-mann-ki-baat-with-the-nation-february-twenty-twenty-three-568143
12. https://www.hindustantimes.com/india/an-india-for-the-girl-child-modi-s-mann-ki-baat-echoes-in-haryana-village/story-ypOVPXBSEXX7gZuRBBVupN.html
13. https://timesofindia.indiatimes.com/india/mann-ki-baat-pm-modi-lauds-increased-participation-of-women-in-various-fields/articleshow/80611446.cms
14. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1738820
15. https://www.deccanherald.com/content/639969/mann-ki-baat-modi-says.html
16. https://www.hindustantimes.com/india-news/mann-ki-baat-pm-modi-calls-for-adopting-of-water-conservation-efforts-101648367196682.html
17. https://timesofindia.indiatimes.com/india/pm-modi-in-mann-ki-baat-says-water-conservation-social-spiritual-duty-of-all/articleshow/91048048.cms
18. https://timesofindia.indiatimes.com/city/meerut/encouraged-by-mann-ki-baat-1-lakh-people-to-build-record-20000-toilets-in-a-week-in-up-dist/articleshow/59531689.cms
19. https://www.narendramodi.in/prime-minister-narendra-modi-expresses-delight-after-rising-popularity-of-upi-payments-as-india-reached-milestone-of-782-crore-upi-transactions-worth-%E2%82%B912-8-lakh-crore-in-dec-2022-566825
20. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1875685
21. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
22. https://www.niti.gov.in/life
23. https://newsonair.gov.in/News?title=Gandhian-philosophy%3A-Mahatma-Gandhi%26%2339%3Bs-ideas-on-cleanliness%2C-good-habits&id=400345
24. https://www.mkgandhi.org/articles/magic-of-khadi.html
25. https://www.indiatoday.in/education-today/gk-and-current-affairs/story/swadeshi-move-

ment-286966-2015-08-07

26. https://charkhatales.com/blogs/news/history-of-khadi-a-fabric-that-became-the-symbol-of-indias-freedom-struggle
27. https://www.kvic.gov.in/aboutkvic.php
28. https://www.business-standard.com/article/news-ians/khadi-sales-up-by-125-percent-after-my-appeal-narendra-modi-114110200497_1.html
29. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1738820
30. https://www.business-standard.com/article/news-ians/khadi-sales-up-by-125-percent-after-my-appeal-narendra-modi-114110200497_1.html
31. https://timesofindia.indiatimes.com/india/pms-mann-ki-baat-leads-to-rise-in-khadi-sales/articleshow/49189284.cms#
32. https://timesofindia.indiatimes.com/india/pms-mann-ki-baat-leads-to-rise-in-khadi-sales/articleshow/49189284.cms#
33. https://www.millenniumpost.in/features/sewapuri-ashram-rejuvenated-to-promote-khadi-once-again-262511?infinitescroll=1
34. https://www.business-standard.com/article/pti-stories/kvic-revives-historical-training-site-at-pampore-in-j-k-117082200765_1.html
35. http://sardarpatel.nvli.in/media/796
36. http://himayat.jkedi.org/
37. https://indianexpress.com/article/explained/explained-the-khadi-being-woven-in-a-mexico-village-which-pm-modi-mentioned-in-mann-ki-baat-6883141/
38. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1821521
39. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1899187#:~:text=7.50%20per%20hank%20to%20Rs,effective%20from%201%20April%202023
40. https://www.kvic.gov.in/update/AR/Chairman%20Sir%205%20year%20Booklet.pdf
41. https://www.financialexpress.com/industry/near-50-jump-in-imports-threatens-india-textile-story/2961219/
42. https://www.livemint.com/news/india/gandhis-ideals-more-relevant-in-present-day-pm-modi-11668175621612.html
43. https://www.mkgandhi.org/articles/cleanliness-sanitation-gandhian-movement-swachh-bharat-abhiyan.html
44. https://www.pmindia.gov.in/en/government_tr_rec/swachh-bharat-abhiyan-2/
45. https://agricoop.nic.in/sites/default/files/Swachhata%20Message%20%281%29.pdf
46. https://swachhindia.ndtv.com/inspired-pm-modi-itbp-jawan-contributes-rs-57000-constructing-toilets-3699/
47. https://swachhindia.ndtv.com/inspired-pm-modi-itbp-jawan-contributes-rs-57000-constructing-toilets-3699/
48. https://www.unicef.org/india/media/1221/file/Potential-Impact-of-Sanitation.pdf
49. https://pib.gov.in/FactsheetDetails.aspx?Id=148579
50. https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhubaneswar/odisha-among-top-5-states-with-open-defecation-free-plus-villages/articleshow/93669728.cms
51. https://thediplomat.com/2023/01/india-is-the-worlds-most-populous-country-what-it-means/
52. https://www.psa.gov.in/mission/waste-wealth/38
53. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-prime-ministers-mann-ki-baat-ad-

dress-on-all-india-radio/

54. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
55. https://swachhindia.ndtv.com/Swachhata-revolution-chhattisgarh-1-lakh-students-write-letters-parents-asking-build-toilets-9236/
56. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
57. Ibid
58. Ibid
59. http://www.pibmumbai.gov.in/scripts/detail.asp?releaseId=E2016PR1895
60. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1644423
61. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
62. Ibid
63. Ibid
64. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
65. https://www.aninews.in/news/national/politics/pm-modi-praises-versova-resident-volunteers-for-cleaning-beach/
66. https://www.hindustantimes.com/india-news/pm-praises-reasi-for-becoming-first-open-defecation-free-block-in-j-k/story-3DhBTX3sSU6Afk3IfWgsRM.html
67. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
68. Ibid
69. https://sbm.gov.in/sbmgdashboard/statesdashboard.aspx
70. https://english.newsnationtv.com/india/news/mann-ki-baat-pm-modi-praises-jamiat-ulema-e-hind-for-cleaning-temples-in-banaskantha-dhanera-after-gujarat-floods-180539.html
71. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
72. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
73. https://www.youtube.com/watch?v=uLeFJN2QGAA
74. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
75. https://yourstory.com/2017/07/wular-lake-trash-bilal-dar
76. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-3/
77. https://ddnews.gov.in/people/10000-toilets-constructed-100-hours-ap
78. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
79. https://www.sabarimala.net/punyam-poonkavanam/
80. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
81. Ibid
82. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
83. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
84. https://sbm.gov.in/gbdw20/
85. https://www.aninews.in/news/national/general-news/pm-modi-lauds-chhattisgarhs-unique-trash-mahotsav201802251347010001/
86. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/
87. https://twitter.com/BJPLive/status/968040438568546304
88. https://www.mkgandhi.org/articles/women1.html#:~:text=During%20the%20freedom%20struggle%20in-

,the%20leadership%20of%20the%20Mahatma.

89. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

90. https://indiancc.mygov.in/wp-content/uploads/2022/04/mygov-99999999988505064.pdf

91. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

92. https://themeghalayan.com/mizoram-guv-underlines-urgency-to-save-chite-lui-from-plastic-wastes/

93. https://newsonair.gov.in/News?title=PM-touches-upon-topics-of-Waste-to-Wealth%2C-water-conservation%2C-unique-cycling-rally-in-Himachal-Pradesh%2C-upcoming-religious-festivals-in-Mann-Ki-Baat-programme&id=443282

94. https://www.thehindu.com/news/national/india-open-defecation-free-says-narendra-modi/article29576776.ece

95. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

96. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

97. https://www.bhaskar.com/local/rajasthan/sawai-madhopur/news/under-mission-beat-plastic-ranthambore-campaign-20-kgs-of-plastic-collected-from-aamaghati-130039372.html

98. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-86th-episode-of-mann-ki-baat/

99. https://www.mkgandhi.org/articles/womenempowerment.htm

100. https://www.narendramodi.in/mobile/expanding-women-s-role-in-decision-making

101. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1832648

102. https://www.mkgandhi.org/articles/womenempowerment.htm

103. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

104. https://www.india.gov.in/my-government/whos-who/council-ministers

105. https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/nirmala-sitharaman-the-first-full-time-woman-defence-minister-retained-as-union-minister/articleshow/69584557.cms?from=mdr

106. https://www.narendramodi.in/mobile/expanding-women-s-role-in-decision-making

107. https://www.mkgandhi.org/articles/edu_swaraj.htm

108. https://www.narendramodi.in/mobile/expanding-women-s-role-in-decision-making

109. https://www.financialexpress.com/education-2/ger-improved-in-2021-22-across-school-education-reveals-udise-plus-report/2772890/

110. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1894517

111. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1568243

112. https://www.narendramodi.in/mobile/expanding-women-s-role-in-decision-making

113. https://www.mkgandhi.org/articles/gandhian-perspective-of-development.html

114. https://sundayguardianlive.com/news/beti-bachao-beti-padhao-showing-significant-results

115. https://pmsma.nhp.gov.in/about-scheme/

116. https://selfiewithdaughter.org/about-campaign.php

117. https://www.indiatoday.in/movies/celebrities/story/deepika-padukone-and-pv-sindhu-turn-bharat-ki-laxmi-for-pm-modi-to-celebrate-indian-women-1611795-2019-10-22

118. https://academic.oup.com/book/12258/chapter-abstract/161754118?redirectedFrom=fulltext

119. https://main.ayush.gov.in/ayush-systems/yoga/definition-ofyoga/#:~:text=According%20to%20the%20Oxford%20Dictionary,To%20engage

120. https://timesofindia.indiatimes.com/india/yoga-ushering-a-wellness-revolution-says-pm-modi-on-mann-ki-baat-top-quotes/articleshow/64718232.cms

121. https://yoga.ayush.gov.in/

122. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-3/

123. https://indianexpress.com/article/trending/trending-globally/international-yoga-day-2017-narendra-modi-three-generations-doing-yoga-twitter-reactions-4714805/

124. https://www.narendramodi.in/text-of-pm-modi-s-speech-on-the-occasion-of-international-yoga-day-in-lucknow-uttar-pradesh-535921

125. https://www.firstpost.com/india/over-54000-turn-up-at-international-day-of-yoga-in-ahmedabad-set-new-guinness-record-3731655.html

126. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

127. Ibid

128. https://www.narendramodi.in/text-of-pm-s-speech-at-the-celebrations-of-4th-international-yoga-day-in-dehradun-540529

129. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6515736/#:~:text=%E2%80%9CThe%20Earth%20has%20enough%20resources,concern%20for%20nature%20and%20environment.

130. https://www.narendramodi.in/mobile/top-quotes-by-prime-minister-modi-on-environment

131. Ibid

132. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-prime-ministers-mann-ki-baat-address-on-all-india-radio/

133. Ibid

134. https://www.ipcc.ch/sr15/chapter/chapter-3/

135. https://www.india.com/news/india/meet-this-woman-noor-jahan-whom-prime-minister-narendra-modi-praised-on-mann-ki-baat-745459/

136. https://www.un.org/en/climatechange/what-is-renewable-energy

137. https://economictimes.indiatimes.com/news/economy/agriculture/rising-water-crisis-forces-indian-farmers-to-rethink-their-crops-selection/articleshow/77098970.cms?from=mdr

138. https://theprint.in/india/inspired-by-pm-modi-namami-gange-volunteers-clean-ganga-ghat-in-varanasi-daily/978009/

139. https://www.pbs.org/newshour/show/indias-long-term-effort-to-clean-up-pollution-in-sacred-ganga-river

140. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1849945#:~:text=Considering%20the%20need%20and%20spread,liabilities%20and%20new%20projects%2Finterventions.

141. https://pib.gov.in/newsite/printrelease.aspx?relid=151443

142. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=124158

143. https://acp.copernicus.org/articles/18/15169/2018/

144. https://sites.ndtv.com/breathe-clean/smoke-from-chulahs-biggest-killer-in-rural-india#:~:text=Respiratory%20diseases%20and%20lung%20infections,children%20are%20the%20worst%20affected

145. Ibid

146. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-20th-september-2015/

147. Ibid

148. https://www.narendramodi.in/pm-modi-s-mann-ki-baat-april-2016-444435

149. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

150. https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/conserving-water-the-ancient-way/article19309530.ece

151. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-mann-ki-baat-2-0programme-on-all-india-

radio/

152. https://twitter.com/swachhbharat/status/1139469600251191296

153. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-mann-ki-baat-2-0programme-on-all-india-radio/

154. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-3rd-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

155. https://pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1582103

156. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-3rd-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

157. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1842623

158. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

159. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-81st-episode-of-mann-ki-baat/

160. https://www.hindustantimes.com/india-news/pm-modi-lauds-sukhet-model-to-check-pollution-in-madhubani-villages-101630253680923.html

161. Ibid

162. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-86th-episode-of-mann-ki-baat/

163. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-87th-episode-of-mann-ki-baat/

164. https://indiacsr.in/india-conserves-30000-water-bodies-as-nation-priorities/

165. https://pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1892990#:~:text=%E2%80%9CMSMEs%20account%20for%2030%20percent,overall%20development%20of%20the%20country.

166. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1882885

167. https://www.thehindubusinessline.com/news/direct-benefit-transfer-scheme-sets-guinness-record/article7952726.ece

168. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1848343

169. https://newsonair.com/2021/09/01/india-records-355-crore-digital-transactions-through-upi-in-august/

170. https://pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1890312#:~:text=As%20a%20result%2C%20total%20digital,4%2C597%20crore%20in%20FY2021%2D22.

171. https://www.mygov.in/group/mann-ki-baat/

172. https://www.forbes.com/sites/joyceearussell/2021/05/29/positive-leadership-it-makes-a-difference/?sh=18d73127d7a4

173. https://hbr.org/2022/04/the-best-leaders-have-a-contagious-positive-energy

174. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

175. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-pms-first-address-to-the-nation-on-radio/

176. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-pms-first-address-to-the-nation-on-radio/

177. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio/

178. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio/

179. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

180. https://www.hindustantimes.com/india/juvenile-substance-abusers-in-india-catching-them-young/story-wZa4Mj3eXisFW1zQisPTJJ.html

181. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

182. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

183. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

184. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

185. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

186. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

187. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

188. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

189. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-4th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

190. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7877431/#:~:text=The%20prevalence%20of%20daily%20smoking,10%25%20in%202017%20and%202019.

191. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-4th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

192. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-4th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

193. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-4th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

194. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-4th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

195. https://fitindia.gov.in/#:~:text=The%20mission%20of%20the%20Movement,as%20easy%2C%20fun%20and%20free.

196. https://www.indiatoday.in/india/north/story/kot-coaching-coaching-institutes-iit-jee-aspirants-suicides-159795-2013-04-23

197. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-in-february-2015/

198. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-in-february-2015/

199. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-in-february-2015/

200. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-in-february-2015/

201. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-minister-shri-narendra-modis-address-to-the-nation-on-all-india-radio/

202. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-minister-shri-narendra-modis-address-to-the-nation-on-all-india-radio/

203. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-minister-shri-narendra-modis-address-to-the-nation-on-all-india-radio/

204. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-9/

205. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-at-all-india-radio/

206. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-address-on-all-india-radio-3/

207. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-13/

208. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-8th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

209. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-4th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

210. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-5th-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

211. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-address-in-the-21st-episode-of-mann-ki-baat-2-0/

212. https://www.theatlantic.com/international/archive/2012/08/neither-the-will-nor-the-cash-why-india-wins-so-few-olympic-medals/260693/

213. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio/

214. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-ministers-mann-ki-baat-on-all-india-radio-on-14th-december-2014/

215. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/english-rendering-of-the-text-of-prime-minister-shri-narendra-modis-address-to-the-nation-on-all-india-radio/

216. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/text-of-pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-2/

217. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/text-of-pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-2/

218. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio/

219. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-on-august-28-2016/

220. https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pms-mann-ki-baat-programme-on-all-india-radio-on-august-28-2016/

221. https://www.pmindia.gov.in/en/mann-ki-baat/

222. https://www.hindustantimes.com/india-news/fit-india-movement-2019-live-updates-pm-narendra-modi-national-sports-day-indira-gandhi-indoor-stadium/story-QxbuRshK2eV6GxQtQGb6UN.html

223. https://khelnow.com/olympic-sports/khelo-india-impacts-on-the-country

224. https://khelnow.com/olympic-sports/khelo-india-impacts-on-the-country

225. https://www.business-standard.com/article/sports/sfa-to-invest-rs-12-5-crore-in-khelo-india-youth-games-over-next-5-years-123013000408_1.html

226. https://ruralindiaonline.org/en/library/resource/persons-with-disabilities-divyangjan-in-india---a-statistical-profile-2021/

227. https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2022/nov/doc20221118130201.pdf

228. https://dgt.gov.in/sites/default/files/Provision%20of%20enhanced%20PWD%20%28Divyang%29%20Quota%20from%203%25%20to%204%25%20in%20admission%20of%20ITIs%20and%20NSTIs%20wef%20Aug%202019%20session.pdf

229. https://www.ilo.org/newdelhi/info/WCMS_175936/lang--en/index.htm

230. https://www.ibef.org/industry/information-technology-india

231. https://dpiit.gov.in/sites/default/files/AnnualReport_Eng_2016-17_0.pdf

232. https://transformingindia.mygov.in/performance-dashboard/

233. https://www.msde.gov.in/en/about-msde/background#:~:text=The%20Skill%20Mission%20launched%20by,for%20Skill%20Development%20and%20Entrepreneurship

234. https://www.pmkvyofficial.org/pmkvy2/Dashboard.php

235. https://theprint.in/budget/budget-2023-modi-govt-puts-focus-on-upgrading-skills-tech-ai-centres-training-scheme/1321460/

236. https://timesofindia.indiatimes.com/india/how-pm-modi-showcases-incredible-india-to-foreign-leaders/articleshow/71519468.cms

237. https://www.indiatvnews.com/news/india/pm-modi-showcased-incredible-india-visit-foreign-leaders-xi-jinping-shinzo-abe-ivanka-trump-555619

238. https://www.altnews.in/pm-modis-choice-gifts-foreign-dignitaries-will-surely-surprise-yogi-adityanath/

239. https://pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1817893

240. https://www.thestatesman.com/india/indias-diplomatic-channel-enabled-bring-back-stolen-idols-pm-modi-1503048741.html

241. https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1758150

242. https://www.hindustantimes.com/india-news/india-retrieves-29-stolen-artefacts-from-australia-ahead-of-modi-morrison-meet-101647854525615.html

243. https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2023/mar/doc202333165901.pdf

244. https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2022/feb/doc20222914401.pdf

245. https://www.statista.com/statistics/271315/age-distribution-in-india

246. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1919261

247. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1919226

लोक नीति शोध केंद्र (पीपीआरसी)
पीपी66, डॉ मुखर्जी स्मृति न्यास,
सुब्रमनिया भारती मार्ग, नई दिल्ली- 110003
T: 011-23381844 E: contact@pprc.in W: www.pprc.in
Facebook: PPRCIndia Tw: @PPRCIndia